पुराने और नये पैगम्बरों के बारे में
तेतीस कवियों की
रचनाएँ

सम्पादकः—

लालजी भाई सत्यस्नेही

मन्त्री-सत्याश्रम मंडल

प्रकाशकः—

सत्याश्रम वर्धा (मध्यप्रदेश)

जिन्नी ११९५६ इतिहास संवत

मार्च १९५६

—: मूल्य :—

१ शिलिंग — डेढ़ रुपया

प्रकाशक—

लालजीभाई सत्यस्नेही

मन्त्री–सत्याश्रम वर्धा

सत्येश मन्त्र

सत्येशागे भक्तल. मम्मेशीगे साधल
पुम सत्यभक्तधे अंकं अम्मल ॥

भगवान सत्य की श्रद्धापूर्वक आज्ञा मानकर विनय करता हूं। भगवती अहिंसा की साधना करता हूं। विवेकपूर्वक सत्य के सभी भक्तों के उपदेश मानता हूं।

मुद्रकः—

रघुनन्दनप्रसाद विन

मैनेजर–सत्येश्वर प्रि. प्रेस

विषय-सूची

३- पं. सूरजचन्द जी सत्यप्रेमी की रचनाएँ

४- उदयकरण जी की रचनाएँ

५- रामगोपाल शारद जी की रचनाएँ

६- मन्नालाल जी दिवाकर की रचनाएँ

प्रस्तावना

अभी तक पूज्य श्री स्वामीजी की रचनाएँ सत्येश्वर गीता कृष्ण-गीता, सत्यसंगीत वंदना भावगीत, बोध गीत आदि ग्रन्थों के रूपमें प्रकाशित हो चुकी हैं। उपरोक्त ग्रन्थों में से इस समय कुछ ग्रन्थ उपलब्ध भी नहीं हैं। इधर श्री स्वामीजी की कुछ नवीन रचना भी एकत्रित हो गई थी जो अभी तक अप्रकाशित ही थी उसे भी पुस्तकाकारमें ले आना था। इन सब रचनाओं का संग्रह एक जगह कर देने की इच्छा से प्रेरित होकर इसका प्रकाशन शुरु कराया गया।

पूज्य स्वामीजी ने सर्वधर्म समभावी होने के नाते समय समयपर प्राचीन पैगम्बरों पर जो जो कविताएँ लिखी थी, उसके अतिरिक्त दूसरे कवियोंकी रचनाएँ भी, जो इसके युगपैगम्बर श्री स्वामीजी पर, सत्याश्रम या सत्यसमाज आदि पर लिखी गई थीं, उनका भी एक संग्रह छपाना था। सब काव्यों का संकलन करके इसे सिलसिलेवार प्रकाशित किया जा रहा है। महात्मा राम, कृष्ण, महावीर, इसामसीह, जरथुस्त, हजरत महम्मद, महर्षि कार्ल मार्क्स आदि महामानवों को श्री स्वामीजी युगावतारी युगप्रवर्तक पैगम्बर मानते हैं।

इधर श्री स्वामी जी के विविध गुणोंसे जो आभास मिल रहा है उससे उनके अधिकांश समर्थक उन्हें वर्तमान युगके पैगम्बर के रूपमें स्वीकार कर रहे हैं। प्रकाशित कविताओं में भारत के विभिन्न प्रान्तों के विद्वान कवियोंने भी प्रायः इसी रूपमें पूज्य श्री स्वामी जी का यशोगान किया है। इसलिये इन समस्त रचनाओं के संग्रहको पैगम्बर गीतके नामसे प्रकाशित किया जा रहा है। पाठकों की जानकारी के लिये प्रारंभ में कवियों का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया है।

सत्य साहित्यों में जहाँ बुद्धिवाद का सागर लहलहा रहा है वहाँ भावना को भी यह संग्रह पर्याप्त खुराक प्रदान करेगा ऐसी आशा है।

— लालजीभाई सत्यस्नेही

अयोध्या-- १६--२ -५६

कवि परिचय

कवियों के कवित्व का परिचय तो उनकी कविता से ही लगता है परन्तु जीवन में कवित्व के सिवाय भी दूसरी अनेक बातें होती हैं जिनसे कविता के और कवि के मूल्यांकन में सुविधा होती है। यहां इतना स्थान तो नहीं है कि कवियों का विस्तृत परिचय दिया जाय इसलिये संक्षेप में उनका कुछ परिचय दे दिया जाता है।

१ - स्वामी सत्यभक्त जी

पैगम्बर गीत के हो आप हैं। पूर्वार्ध की सब रचनाएँ आपकी हैं। और उत्तरार्ध की रचनाएँ आपके बारेमें या आपके मिशन के बारेमें दूसरों की हैं। आपका व्यक्तित्व क्या है यह आपके विषय में लिखी गई उत्तरार्ध की कविताओं से लग जायगा। इसलिये आपके विषयमें विशेष लिखने की जरूरत नहीं है। संक्षेपमें आप सत्यसमाज के संस्थापक हैं, युग पैगम्बर हैं। आपके विषयमें लिखा जाता है।

"सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले विद्वान, महान विचारक चिन्तक तार्किक अनुभवी, सफल सम्पादक प्रचंड आलोचक, सुलेखक, सुकवि, नाटककार मर्मस्पर्शी चुटकिलों के लेखक, प्रखर वक्ता, वादवीर सामाजिक और धार्मिक क्रान्तिकारी, महान दार्शनिक, दर्शननिर्माता, राजनीति और अर्थव्यवस्था के मर्मवेत्ता, योजनापटु, विज्ञान और धर्म के समन्वयकर्ता, विज्ञानवेत्ता, अन्धश्रद्धा के नाशक, विश्व की एकता के लिये बिलकुल नवीन सरलतम और परिपूर्ण मानवभाषा के आविष्कारक, लिपि और टेलिग्राफी के संशोधक, विश्वप्रेमी, वास्तविक साधु दृढ़निश्चयी, मानसिक वाचनिक और शारीरिक श्रम की मूर्ति, सत्येश्वर के पैगम्बर, स्वयंबुद्ध, नूतन धर्म-तीर्थ प्रवर्तक, और युग के महामानव हैं स्वामी सत्यभक्त।"

स्वामी जी के विषयमें दीगई विशेषणमाला में कोई भी विशेषण न तो निराधार है न अतिशयोक्ति-पूर्ण। आपका विशाल साहित्य और आपका जीवन देखने से प्रत्येक विशेषण सार्थक और उचित ही सिद्ध होता है।

आपका काव्य साहित्य भी बहुत है। सत्येश्वर गीता, कृष्ण गीता, वन्दना ,बोधगीत, गानगीत, सत्यसंगीत के नाम से पुस्तकें प्रकाशित होचुकी हैं। फुटकर कविताएँ और भी हैं। दिव्यदर्शन नामसे एक महाकाव्य भी आप लिखरहे हैं जिसके हजार पद्य बनचुके हैं। जब कि अभी वह आधा भी नहीं हुआ है। सत्यसमाज की स्थापना के पहिले भी आपकी सैकड़ों कविताएँ थीं, वे नेसिल कर दी गई।

इस संग्रहमें पुराने पैगम्बरोंके बारेमें आपकी रचनाएँ हैं। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, ईसा और मुहम्मद के बारेमे जो रचनाएँ इस संग्रह में दी हैं वे पहिले सत्यसंगीत में निकली थीं। परन्तु बहुत वर्षों से सत्य संगीत उपलब्ध नहीं है इसलिये ये रचनाएँ इस संग्रहमें दीगई हैं। हां! कुछ संशोधन हुआ है। इसके सिवाय पूज्य स्वामी जी ने कन्फ्यूसियस, जरथुस्त और मार्क्स के बारेमें नई रचनाएँ भी की हैं जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुईं वे रचनाएँ भी इस संग्रह में दी गई हैं। सत्यसमाज इन सब महात्माओं को अपने अपने युग के पैगम्बर मानता है इसलिये पैगम्बर गीत में इनको प्रथम स्थान दिया गया है। और स्वामी जी ने सर्वधर्मसमभावी के नाते तथा अपनेसे पूर्व बन्धु होने के नाते इनका आदर पूर्ण गुणानुवाद किया गया है।

२— वैद्य प्रकाशपुंज जी सत्यालंकार अयोध्या

इस संग्रह में सब से अधिक कविताओं का संग्रह आपका ही है। आपकी कविताएँ भाषा और भाव की दृष्टि से बहुत उच्च श्रेणी की हैं। पूज्य स्वामी जी के विषयमें आपकी भक्ति कितनी तीव्र है यह आपकी रचनाओं से मालूम होता है। सत्यसमाज के प्रचार में आप सदा लगे रहते हैं। अयोध्या सरीखे घोर पुराणपन्थी तीर्थ स्थानमें जो आज इतने सत्यसमाजी दिखाई देते है वह सब आपकी प्रचार साधना का ही परिणाम है। कुछ दिन के लिये आपको नैमिषारण्य रहना पड़ा तो वहां भी आपने सत्यसमाज का ऐसा बीज बोया जो अब फलफूल रहा है। और भी अनेक स्थानों में आपने सत्यसमाजी बनाये हैं। आप सुकवि तो हैं ही, साथ ही आपकी गद्य रचना भी बहुत उच्च श्रेणी की तथा काव्यमय

होती है। आप अच्छे वक्ता भी हैं। घटों धाराप्रवाह बोलते हैं। वयोवृद्ध हैं, अनुभवी हैं।

स्वामी जी के प्रायः हर जीवन प्रसंग पर आपकी कविताएँ हैं। स्वामी जी की जयंतियाँ, स्वामी जी का अयोध्या आना और जाना, ज्ञानयज्ञ करना, आफ्रिका जाना प्रचार करना लौटना, दो चार दिन के लिये बम्बई जाना, माता जी का बीमार होना आदि सब अवसरों पर आपने कविताएँ लिखी हैं जो जल्दी में लिखीगई तुकबन्दियाँ नहीं हैं किन्तु कवित्व पूर्ण हैं। पहिले बार जब स्वामी जी अयोध्या आये और ... पर विराजमान हुए तब आप स्वामीजी के चरण दबाने लगे। स्वामी जी ने कहा—यह क्या करते हैं ? मैं थका हुआ नहीं हूं। इस पर आपने जो कुछ कहा उसकी भी भावपूर्ण कविता आपने रच डाली।

'ये चरण अथक कब थकनेवाले युग पलटानेवाले हैं।'

स्वामी जी के विषयमें आपकी अटूट भक्ति है और निस्वार्थ है। आपका कवित्व असाधारण है। इस संग्रह में आपकी ४१ कविताएँ, नं. २० से ६२ तक, निकलरही हैं।

३—पं सूरजचन्द जी सत्यप्रेमी सत्यालंकार बम्बई

स्वामी जी के सब से पहिले विद्वान शिष्य आपही हैं। वर्धा में सत्याश्रम की स्थापना के समय से ही आप स्वामी जी की सेवा में कई वर्ष रहे। सत्यसाहित्य का अध्ययन आपका असाधारण है और खूब गहरा है। आप अच्छे कवि अच्छे वक्ता लेखक और उच्च श्रेणी के विचारक विद्वान हैं। अनेक धर्मों का अध्ययन आपका काफी गहरा है। स्वामी जी को आप पितृदेव कहते हैं और मानते हैं, स्वामी जी भी आपको अपना पुत्र मानते हैं। आप संगम के सम्पादक हैं। इस संग्रह में आपकी बारह कविताएँ, नं० ६३ से ७४ तक दीगई हैं।

४—श्री उदयकरण जी सुमन रायसिंह नगर

आप तरुण कवि हैं। स्वामी जी के विषय में आपका पूर्ण अनुराग है। यथाशक्ति सत्यसमाज का प्रचार करते हैं। एक बार स्वामी जी

क राजस्थान के दौरे में आप साथ रहे थे। पूरे सत्यसाहित्य का आपने अध्ययन किया है। और सत्यालंकार हैं। प्रभाकर भी हैं। आपकी श्रद्धा पर्याप्त है। इस संग्रह में आपकी ग्यारह कविताएँ नं० ७५ से ८५ तक छपी हैं जो कि बहुत ही सुन्दर हैं।

५- श्री रामगोपाल जी शारद साहित्यरत्न अयोध्या

आप उच्च श्रेणी के कवि हैं। साप्ताहिक विरक्त के सम्पादक हैं। आप नई और पुरानी हिन्दी, तथा उर्दू और संस्कृतमें भी कवित करते हैं। इस संग्रह में आपकी कविताएँ हिन्दी उर्दू और संस्कृतमें हैं। उससे पता लगता है कि स्वामी जी के विषयमें कितना अनुराग रखते हैं। अगर स्वामी जी की किसी बात का आप समर्थन नहीं कर पाते तो इसे अपनी ही कमजोरी समझते हैं। इस संग्रह में आपकी पांच कविताएं नं० ८६ से ९० तक हैं।

६ श्री मन्नालाल जी दिवाकर साहित्यरत्न बदनावर (म. भा.)

आप सत्यसमाज के नैष्ठिक सदस्य हैं। दिवाकर सरनेम आपको नैष्ठिक दीक्षा के समय स्वामी जी से प्राप्त हुआ है। आपने सत्याश्रम में जातिपांति बन्धन तोड़कर शादी की है। आप साहित्यरत्न और राजनीति रत्न हैं। अच्छे कवि हैं तथा राजनीतिक क्षेत्र में अपने स्थान के वामपक्षी नेता भी हैं। इस संग्रह में आपकी चार कविताएँ पृ. नं. ९१ से ९४ तक दी हुई है। जिनमें स्वामी जी के प्रति आपका भक्तिभाव खूब झलकता है।

७ एम. सरवैया मोती. अमरावती

आप उर्दू शैली के अच्छे कवि हैं। आप भाषा में और भावों में तेज हैं। धार्मिक पाखंडों राजनैतिक अत्याचारों तथा सामाजिक बुराइयों पर अच्छा प्रहार करते हैं। आपके विचार उग्र वामपक्षी हैं। गद्य के भी अच्छे लेखक हैं। चित्रकार भी है। इस संग्रह में आपकी चार कविताएँ नं. ९५ से ९८ तक छपी हैं।

८ श्री सुरेन्द्रनाथ जी शुक्ल, वर्धा

सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री उमाशंकर जी शुक्ल के छोटे भाई हैं।

स्वामी जी के सम्पर्क में आते रहते हैं। अच्छी कविता करते हैं। इस संग्रह में आपकी तीन कविताएँ नं. ९९ से १०१ तक है।

९. स्व. श्री विजया कुमारी अयोध्या

यह श्री वैद्य प्रकाशपुञ्ज जी की पुत्री थी। वैद्य जी का कवित्व इसे छोटी अवस्था में ही उत्तराधिकारित्व के रूप में मिला था। चित्रकार भी थी। छोटी अवस्था में ही सत्यसमाज के संस्कार में रंग गई थी सत्यसमाज की एक ज्योति बनेगी ऐसी सबकी आशा थी। पर असमय में ही स्वर्ग चली गई। इससे सभी सत्यसमाजियों को तथा स्वामी जी को भी काफी खेद हुआ था। संगम में स्वामी जी ने इसपर काफी मार्मिक लेख लिखा था। इसकी दो कविताएँ पृ. १०२–१०३ पर छपी हैं।

१० वैद्य नन्दकुमार जी जयपुर

आप अत्यन्त वृद्ध हैं। पर इस अवस्था में भी स्वामी जी के प्रति और सत्यसमाज के प्रति जो अनुराग है और जवानों के भी कान काटने वाला जो उत्साह है वह आश्चर्य जनक है। जयपुर में जो ५७ वें सत्यभक्त जयन्ती मनाई गई उसके सूत्रधार आप ही थे। इसी अनुराग भक्ति का परिणाम आपकी कविताएँ है जो इस संग्रह में १०४–१० नंबर पर हैं।

११ महन्त द्वारकादास जी विभाकर साहित्याचार्य पालीगंज

आप रामानन्दी वैष्णव सम्प्रदाय के अच्छे विद्वान महन्त हैं संस्कृत के भी अच्छे विद्वान है। आपने काफी सत्यसाहित्य का स्वाध्याय किया है और स्वामी जी के सम्पर्क में भी दो बार आचुके हैं। सत्यभक्त जयंती पर जो कविताएँ आपने भेजी थीं वे इस संग्रह में १०६--१०७ नम्बर पर छपी हैं।

१२ श्री बापूलाल जी सोनी उदयपुर

आप वयोवृद्ध होने पर भी सत्यसमाज के प्रचार में दिन रात लगे रहते हैं। चाहे घरमें हों चाहे बाजार में चाहे रेल में, सत्यसमाज के और स्वामी जी के विषयमें चर्चा करते ही रहते हैं। आप निर्भय वक्ता

चर्चाकार और प्रचंड प्रचारक हैं। आपके सभी पुत्र तथा नाती सत्यसमाज के रंग में रँगे हुए हैं। सत्यसमाज के लिये आपने अपने सम्प्रदाय की बड़ी से बड़ी प्रतिष्ठा को ठुकरादिया है। इस दृष्टि से आपका त्याग असाधारण है। आप प्रतिदिन भगवान सत्य भगवती अहिंसा की तथा तीर्थंकर पैगम्बर मानकर स्वामीजी की पूजा करते हैं, पुष्प चढ़ाते हैं। सत्य समाज कैसे विश्वव्यापी हो इसकी चिन्ता में दिनरात लीन रहते हैं, और कोशिश करते रहते हैं। इसलिये संसार के बड़े से बड़े राजनीतिज्ञों को पत्रादि लिखते रहते है। फलाफल की चिन्ता किये बिना प्रयत्न में लगे रहत है। आप कवि नहीं हैं परन्तु भक्ति इतनी असाधारण है कि वह आपसे आप कविता के रूपमें भी प्रगट हुई है। इस संग्रह में आपकी दो कविताएँ नं. १०८ १०९ पर हैं।

१३- सौ. प्रतिभा प्रकाशिनी देवी अयोध्या

आप वैद्य प्रकाशपुञ्ज जी की पत्नी हैं। वैद्य जी के अनुरूप सत्य-समाज के रंग में रंगी हैं। आपकी कविताओं से आपकी भक्तिभावना का परिचय मिलता है। कविताएँ नं. ११०-१११ पर हैं।

१४- वैद्य जुगल किशोर जी सत्यानन्द सिंहपुर

स्वामी जी के विषय में आपकी भी भक्ति खूब गहरी है। अनेक परेशानियों में रहने पर भी आप यथाशक्ति सत्यप्रचार करते रहते हैं। आपकी कविताओं में स्वामी जी के प्रति असाधारण भक्तिभाव झलक रहा है। इस संग्रह में आपकी छह कविताएँ नं. ११२ से ११७ तक छपी हैं।

१५- ठाकुर डूंगरसिंह जी मोही (राजस्थान)

आप एक सुप्रतिष्ठित सामंत कुटुम्बके मुखिया हैं। उम्र ८२ वर्ष की है। राजनीति क्षेत्र के भी पुराने कार्यकर्ता हैं। परन्तु जब से सत्यसाहित्य के सम्पर्क में आये तब से इस वृद्धावस्था में भी जवानों सा उत्साह दिखाने लगे। सत्यसमाज का काफी प्रचार करते हैं। दिनरात यही चिन्ता रहती है कि सत्यसमाज विश्वव्यापी कैसे हो। बीमार हैं। मरने का भय नहीं है। पर चाहते हैं कि मरने के पहिले सत्यसमाज का खूब उत्कर्ष देख

जायँ। आपकी पत्नी सौ. राजकुमारी जी भी स्वामी जी तथा मानाजी के विषय में खूब अनुराग और सेवाभाव रखती हैं। आपके भाई भी सत्य-समाजी हैं। ठाकुर साहब को कविता करने का शौक है। इस संग्रह में आपकी दो कविताएँ नं. ११८-११९ पर छपी हैं।

१६ पां. त्र्यं. जी गुधाटे वार्शी

पं. सूरजचन्द जी के सम्पर्क से आप सत्यसमाज से परिचित हुए और स्वामी जी के विषय में अनुराग हुआ। सत्यसमाजी भी बने। आप मराठी में कविता करते हैं। नं. १२०-१२१ पर स्वामी जी के विषय में आपकी दो मराठी रचनाएँ हैं।

१७ - बालाजी पुट्टेवार चांदा

आप चांदा के मुख्य सत्यसमाजी हैं। एक हाइस्कूल में अध्यापक हैं। आसपास सत्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिये प्रयत्न करते रहते हैं। स्वामी जी के सम्पर्क में बहुत बार आये हैं आते रहते हैं। आप विवाह के लिये, जातिपांति तोड़कर सत्यसमाज की नैष्ठिक दीक्षा के लिये उम्मेदवार हैं। मराठी में भी कविता करते हैं। इस संग्रह में आपकी कविता १२२ वें नम्बर पर है।

१८- श्री पार्थसारथी नागपुर

आप अच्छे कवि हैं। नागपुर में शिक्षक हैं। स्वामी जी के विषय में आदरभाव रखते हैं। आपकी कविता १२३ वें नम्बर पर है।

१९- विपिनबिहारी जी

इनकी कविता सत्यसन्देश की पुरानी फाइल में मिली। इनकी भाषा शुद्ध है। कवित्व है। पर और कोई परिचय प्राप्त नहीं होसका। उससमय भी आपने स्वामी जी को जिस रूप में समझा था उससे आपकी गुणग्राहकता, दूरदर्शिता आदि का परिचय मिलता है। आपकी कविता १२४ वें नम्बर पर है।

२०- बालकवि जी अयोध्या

आप अच्छे कवि हैं, अनुरागी सत्यसमाजी हैं। अच्छे प्रवचनकार और वक्ता हैं। आपकी कविता १२५ वें नम्बर पर है।

२१- प्रो. रतनकुमार जी एम. काम. नागपुर

आप सत्याश्रम में रहचुके हैं। सत्यसाहित्य से काफी परिचित हैं। सत्यभक्त जयन्ती पर पढ़ी गई आपकी कविता १२६ नम्बर पर है।

२२- चुन्नीलाल जी कोटेचा बार्शी

आप वयोवृद्ध हैं और सत्यसमाज की स्थापना के समय से ही सत्यसमाजी हैं। सारे सत्यसाहित्य का आपने स्वाध्याय किया है। मर्मज्ञ हैं, स्वामी जी में आपकी भक्ति अटूट है। सत्याश्रम की प्रबन्धकारिणी के सदस्य हैं। सत्यसमाज के इने गिने खास व्यक्तियों मे से हैं। घर में समस्त सत्यसाहित्य की और स्वामी जी के चित्र की एक वेदी बना रक्खी है। जिसके सामने बैठकर प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं। २०-२२ वर्षों में स्वामी जी ने जितने पत्र आपको लिखे सब सुरक्षित और व्यवस्थित रक्खे हैं।

२३- ललताप्रसाद जी अयोध्या

आप उच्च श्रेणी के कवि हैं। अयोध्या की सत्यभक्त जयन्ती मे बराबर भाग लेते हैं। अनुरागी हैं। आपकी कविता १२८ वें नम्बर पर है।

२४- सत्यनारायण जी शर्मा धूगांव (म. प्र.)

अच्छे कवि हैं, पत्रकार हैं। कई बार स्वामी जी के दर्शन कर चुके हैं। आपकी कविता १२९ वें नम्बर पर है।

२५- सिद्धेश्वर प्रसाद जी असित पतनेर (बिहार)

कुछ समय से ही सत्य साहित्य के परिचय मे आये हैं। इसीसे स्वामी जी के विषय मे जो पूज्यबुद्धि पैदा हुई है उससे आपके गुणानुराग का पता लगता है। सत्यभक्त जयन्ती पर लिखी हुई आपकी कविता १३० वें नम्बर पर है।

२६- धर्मराज जी इंदलिया करनपुर

कुछ समय पहिले ही सत्यसाहित्य के सम्पर्क मे आये हैं। इतने में ही स्वामी जी के विषय में आपकी भक्ति गहरी होगई है। सत्यसमाज के प्रचार के लिये काफी व्याकुल रहते हैं। आपकी कविता १३१ नम्बर पर है।

२७- हीरालाल जी शर्मा बालाघाट (म. प्र.)

आप सत्यसमाज के पुराने अनुरागी हैं। स्वामी जी में काफी भक्ति रखते हैं। आपकी कविता १३२ वें नम्बर पर है।

२८- स्वामी कृष्णानन्द जी सोख्ता नागपुर

आप सुप्रसिद्ध कवि, उच्च श्रेणी के कवितापाठक, महान वक्ता हिन्दी उर्दू अंग्रेजी के अच्छे विद्वान हैं। मध्यप्रदेश के श्रेष्ठ साप्ताहिक नयाखून के संचालक और सम्पादक हैं। नागपुर में जो सार्वदेशिक सत्य-समाज सम्मेलन हुआ था उसके संयोजक आप ही थे। औरंगाबाद में जो नवमां अधिवेशन हुआ उसके अध्यक्ष आप हैं। नया खून द्वारा आप स्वामी जी के विचारों का सदा प्रचार करते हैं। 'सत्यभक्त उवाच' शीर्षक से एक स्वतन्त्र स्तम्भ ही आपने बना रक्खा है। सत्यभक्त जयन्ती उत्सव में आप बराबर रुचिपूर्वक भाग लेते हैं। या स्वयं उत्सव की आयोजना करते हैं। सत्यभक्त जयन्ती पर नयाखून में भी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। ऐसी ही एक श्रद्धांजलि में स्वामी जी के विषय में जो पद्य लिखा था वह १३३ वें नम्बर पर दिया गया है। बड़ी कविता लिखने का विचार था पर समयाभाव के कारण पुस्तक छपने तक वह प्राप्त न होसकी। आपका अनुराग पूर्ण है।

२९- सौ. सावित्री देवी बलरामपुर (उ. प्र.)

आप सत्यसमाज के प्रचंड प्रचारक श्री राजाबाबू जी की पुत्रवधू हैं। अभी अभी अपने पति प्रोफेसर परोपकारसिंह जी पयाम के साथ सत्यसमाज की सदस्या हुई हैं। ५७ वीं सत्यभक्त जयन्ती आपने बड़े उत्साह के साथ मनाई थी। उससमय जो कविताएँ आपने बनाकर पढ़ी थीं उनमें से दो इस संग्रह में १३४-१३५ नम्बर पर दीगई हैं।

३० सौ. सीतादेवी कानपुर

आप श्री राजाबाबू जी की सुशिक्षित पुत्री हैं। विवाह के पहिले से ही सत्यसमाज की सदस्या हैं। स्वामी जी में तथा सत्यसमाज में पूर्ण अनुराग हैं। आपके पति श्री बालकृष्ण जी सिनहा एम. ए. भी

विवाह के पहिले से सत्यसमाजी हैं। सीतादेवी जी की रचना नं० १३६ पर है।

३१— स्व. श्री आनन्द शास्त्री जयपुर

ये न्याय साहित्य तीर्थ साहित्यरत्न तथा शास्त्री परीक्षा पास हिन्दी संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। स्वामी जी में अटूट भक्ति थी। सत्य-समाज के प्रचार के लिये सदा प्रयत्न करते रहते थे। सत्यसमाज के मुख्य व्यक्तियों में थे। खेद है कि असमय में उनका स्वर्गवास होगया। आपकी एक कविता नं. १३७ पर है।

३२— श्री शान्तप्रकाश जी सत्यदास

आप संस्कृत के विद्वान हैं काव्यतीर्थ हैं सत्याश्रम में रह चुके हैं। सत्यसमाज का काफी प्रचार करते रहते हैं। पं० सूरजचन्द जी सत्य-प्रेमी के छोटे भाई हैं। आपकी कविता व्याजस्तुति अपने ढंग की अनोखी है। जो पुस्तक के अंत में १३९ वें नम्बर पर है।

३३— लालजी भाई

मैं अपने विषय में क्या कहूं? फिर भी इस प्रकरण में इतना तो कहना ही चाहिये कि मैं कवि नहीं हूं। पर पूज्य श्री स्वामीजी के अयोध्या पधारने पर हृदयोद्गार प्रदर्शित किये थे जो इस पुस्तक के अन्तमें दिये हैं। जब तक सत्यसमाज का साहित्य नहीं पढ़ा था, तब तक सत्यसमाज का मजाक उड़ाता था। जब पढ़ा तब सत्येश्वर के दर्शन पा गया और सर्वस्व समर्पण कर दिया। इस समर्पण को अपना त्याग नहीं सौभाग्य मानता हूं। अब जीवन में सत्यसमाज के सिवाय कुछ नहीं है अर्थात जो कुछ है सत्यसमाज की पूजा सामग्री है। स्वामीजी को पैगम्बर और गुरुदेव मानता हूं। स्वामी जी का और हम दम्पति का सम्बन्ध इतना निकट है कि बीच में सत्येश्वर के सिवाय और कोई नहीं आसकता।

२८ सत्येशा ११९५६ इ. सं. लालजी सत्यस्नेही

अयोध्या

पैगम्बर गीत

(पूर्वार्ध)

[स्वामी सत्यभक्त जी की रचनाएँ]

पैगाम सुनादे

पैगाम सुनादे पैगम्बर ।
सत्येश्वर के सन्देशों से भरा हुआ हो तेरा स्वर ।
पैगाम सुनादे पैगम्बर ॥ १ ॥

प्रिय हो या अप्रिय हो वाणी । पर वाणी हो दुःख-कृपाणी ।
वाणी सुन जीजाय जगत यह, वाणी में सत्यामृत भर ।
पैगाम सुनादे पैगम्बर ॥ २ ॥

धन वैभव विज्ञान भरा है । पर संयम से हीन धरा है ।
बना स्वर्ग की जगह नरक यह, तड़प रहे चर और अचर ।
पैगाम सुनादे पैगम्बर ॥ २ ॥

घर घर में हैवान भरे हैं । गांव गांव शैतान भरे हैं ।
घट घट का देवत्व जगादे, स्वर्ग उतर आये भूपर ।
पैगाम सुनादे पैगम्बर ॥ ४ ॥

लड़ते और झगड़ते मानव । मानव में बैठा है दानव ।
सत्येश्वर का मन्त्र सुनाकर तू सब की दानवता हर ।
पैगाम सुनादे पैगम्बर ॥ ५ ॥

दुनिया का अज्ञान मिटादे । मानव में मानवता लादे ।
सत्येश्वर के पैगामों से गूँज उठे जल थल अम्बर ।
पैगाम सुनादे पैगम्बर ॥ ६ ॥

महात्मा राम

नैतिकता की मर्यादा पर सर्वस्व दान करनेवाला।
जंगल में भी जाकर मंगल का नव-वसन्त भरनेवाला॥
हँसते हँसते अपने भुजबल से दुख-समुद्र तरनेवाला।
तू मर्यादा–पुरुषोत्तम था आर्यों का दुख हरनेवाला॥१॥

तू सूर्यवंश का सूर्य रहा जगको प्रकाश देनेवाला।
अवतार वीरता का था तू दुखियों की सुध लेनेवाला॥
यद्यपि तू रघुकुलदीपक था पर सबका नयन सितारा था।
उस जातिभेद के युगमें भी तू जन-जनके मन प्यारा था॥२॥

तुझको जैसा सिंहासन था वैसी ही वनकी कुटिया थी।
जैसा सोनेका पात्र तुझे वैसी ताँबेकी लुटिया थी॥
तेरा था भोगी वेष मगर भीतर से था योगी सच्चा।
तू अग्नि-परीक्षाओं में भी पड़कर न कभी निकला कच्चा॥३॥

तेरा पत्नीव्रत सतीजनों के पातिव्रत्य समान रहा।
तुझको प्रेमीके साथ पुजारी बनने का अरमान रहा॥
सीता बिछुड़ी अथवा त्यागी तुझको उसका ही ध्यान रहा।
ऋषि ब्रह्मचारियों से भी बढ़कर था तेरा ईमान रहा॥४॥

तू मानवता का पथिक रहा था सारा जगत समान तुझे।
तेरा बन्धुत्व विशाल रहा सम थे लक्ष्मण हनुमान तुझे॥
केवट कपि भील या शबरी सब को तूने अपनाया था।
जो जो कहलाते थे अनार्य छाती से उन्हें लगाया था॥५॥

शबरी के जूँठे बेर ग्रहण करने में नहीं लजाया था।
तूने पवित्रता शौच धर्म सब प्रेम-भक्ति में पाया था॥
कुल जातिपाँति या उच्चनीच सबका रहस्य समझाया था।
मानवका धर्म सिखाया था कुलमदका जोर घटाया था॥६॥

मर मिटने को तैयार रहा अन्याय अगर देखा तूने ।
भगवान सत्य को ही दुनिया का सच्चा बल लेखा तूने ॥
दुर्जनता के क्षालन में तू सज्जनता के लालन में तू ।
भगवती अहिंसा के दोनों रूपोंके परिपालन में तू ॥ ७ ॥

भुजबलका कुछ अभिमान न था वैभव भी तुझे न प्यारा था ।
भय न था लालसा थी न तुझे तू निर्भयता की धारा था ॥
सम्राट् बना था पर तूने साम्राज्यवाद ठुकराया था ।
सत्येश अहिंसाने तुझपर निज वरद हस्त फैलाया था ॥८॥

विजयी बनकर साम्राज्य लिया फिर भी वनवासी बना रहा ।
लंकाको ठुकराया तूने तू अनासक्ति में सना रहा ॥
सर्वस्व त्याग करने में भी तूने न तनिक संकोच किया ।
जनता-रंजन मर्यादा के रक्षणको तूने क्या न दिया ॥९ ॥

जनमत रंजन की वेदीपर सीता का भी बलिदान किया ।
आंखों में आंसू भरे रहे पर मुखको तनिक न म्लान किया ॥
तूने अपना दिल मसल दिया दुनियाके हित विषपान किया ।
तू सच्चा योगी बना रहा जीवन सुखका अवसान किया ॥१०

आदर्श पुत्र था, त्यागी था सेवा ही तेरा धर्म रहा ॥
तूने विपत्तियों की वर्षाको हँस हँसकर सर्वदा सहा ।
पुरुषोत्तम और महात्मा तू घर घरमें ख्याति हुई तेरी ।
शासनमें तेरी नीति रहे इच्छा है एक यही मेरी ॥ ११ ॥

राम-निमंत्रण

हे राम विपत पर रामबाण बनजाओ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ॥

भूभार बढ़ा है, पाप बढ़े जाते हैं।
अत्याचारों के तांडव दिखलाते हैं॥
दुर्जन दुःस्वार्थी पापी इठलाते हैं।
सज्जन परोपकारी न चैन पाते हैं॥
आओ अन्यायों का विनाश करजाओ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ॥ १॥

अपनी विपदा को आप बढ़ाया हमने।
धन्य-धान्य स्वत्व अधिकार गमाया हमने।
होकर मनुष्य मानुष्य न पाया हमने।
शासन दुःशासन रूप बनाया हमने॥
आओ स्वतन्त्रता की झाँकी दिखलाओ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ॥ २॥

नारीत्व आज पद-दलित हुआ जाता है।
दाम्पत्य-प्रेम पदपद ठोकर खाता है।
भ्रातृत्व और मित्रत्व न दिखलाता है।
सज्जनता पर दौर्जन्य विजय पाता है।
अन्धेर मचा है आओ इसे मिटाओ!
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ॥ ३॥

दुर्दैववाद ने पौरुष मार हटाया।
भीरुत्व, दया का छद्म-वेष धर आया।
कायरता ने जड़ता का राज्य जमाया।
हम में उत्तरदायित्व नहीं रह पाया॥
आओ हम को पुरुषार्थी वीर बनाओ।
भूभार-हरण के लिये, धरा पर आओ॥ ४॥

नैतिक मर्यादा नष्ट हो रही सारी।
बन रहा जगत है, केवल रूढ़ि-पुजारी।
सद्सद्विवेकमय बुद्धि गई है मारी।
है तमस्तोममय व्याप्त दृष्टि-अपहारी॥
तुम सूर्यवंश के सूर्य प्रकाश दिखाओ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ॥ ५ ॥

विपदाएँ अपना भीष्म रूप बतलातीं।
मन-मन्दिर में भारी तूफान मचातीं।
तांडव दिखलातीं फिरतीं हैं मदमातीं।
धीरज विवेक बल तहस नहस कर जातीं।
आओ जंगल में मंगल हमें सिखाओ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ॥ ६ ॥

ये बिछा रहे हैं जाल असंख्य प्रलोभन।
हैं लूट रहे सर्वस्व दिखाकर जड़धन॥
निःसत्व बताते हैं, कर्तव्य चिरन्तन!
करते हैं ये उद्देश्य-हीन चंचल मन।
आओ प्रलोभनों को अब मार हटाओ।
भूभार-हरण के लिये, धरा पर आओ॥ ७ ॥

तुम सत्य अहिंसा के हो पुत्र दुलारे।
वीरत्व त्याग धैर्यादि गुणों के प्यारे॥
तुम कर्मयोग की मूर्ति बन्धु हमारे।
तुम अन्धे जग के लिये नयन के तारे।
आओ घर घर में राम जन्म करवाओ।
भूभार-हरण के लिये धरा पर आओ॥ ८ ॥

राम

दिखा दो अपनी झाँकी राम !

कायर मनमें साहस लादो,

वैभवका कुछ त्याग सिखादो,

दुखमें भी हँसना सिखलादो

हो जीवन निष्काम । दिखादो अपनी झाँकी राम ॥ १ ॥

इस मरुथलमें जल बरसादो,

इस निर्बलमें बल बरसादो,

जंगल में मंगल बरसादो ।

जीवन हो सुखधाम । दिखा दो अपनी झाँकी राम ॥ २ ॥

दे दो अपनी करुणा का कण,

सीख सकें पूरा करना प्रण,

शासन में भर जायें गुणगण ।

बनें साधुता-धाम । दिखा दो अपनी झाँकी राम ॥ ३ ॥

मर्यादा पर मरना सीखें,

विपदाओं को तरना सीखें,

दुनिया का दुख हरना सीखें ।

लेकर तेरा नाम । दिखादो अपनी झाँकी राम ॥ ४ ॥

महात्मा कृष्ण

तू था जीवन का रहस्य दिखलानेवाला !
कर्मों में कौशल्य-पाठ सिखलानेवाला ॥
योग भोगका सत्य समन्वय करनेवाला ।
सूखे जीवन में अनन्त रस भरनेवाला ॥ १ ॥

सच्चा योगी और प्रेम-पथ पथिक रहा तू ।
विषय वासना के प्रवाह में नहीं बहा तू ॥
नयी प्रीति की रीति योग के संग सिखाई ।
मानों अम्बुदवृन्द संग चपला चमकाई ॥ २ ॥

जब समाजकी दशा होरही थी प्रलयंकर ।
अत्याचारी दुः बने थे भूत भयंकर ॥
मातपिता को पुत्र कैदखाना देता था ।
बहन-बेटियों का सुहाग भी हर लेता था ॥ ३ ॥

छलबल का था राज्य नीति का नाम नहीं था ।
थे पेटार्थी लोग, सत्य से काम नहीं था ।
सभ्यजनों में भी न मान पहिला पाती थी ।
जगह जगह बीभत्स वासना दिखलाती थी ॥ ४ ॥

लाखों आंखें बाट देखती थीं तब तेरी ।
उनको होती थी असह्य क्षण क्षणकी देरी ॥
अगणित आहें रहीं वाष्पमय वायु बनातीं ।
कर करुणा संचार हृदय तेरा पिघलातीं ॥ ५ ॥

तू अदृश्य था किन्तु बुलाते थे तुमको सब ।
कहता था संसार 'अरे आवेगा तू कब'?
'कब जीवन की कला जगत् को सिखलावेगा ?
सत्य अहिंसा का पुनीत पथ दिखलावेगा' ॥ ६ ॥

आखिर आया, हुई भयंकर वज्र गर्जना ।
दहल उठे अन्याय, पाप की हुई तर्जना ॥

दुखी जगत्को देख सभीको गले लगाया ।
आखिर तू रो पड़ा, हृदय तेरा भर आया ॥ ७ ॥
मिला तुझे भगवान सत्य का धाम दुःखहर ।
मन ही मन भगवती अहिंसा को प्रणाम कर ॥
मांगी तूने छोड़ स्वार्थमय सारी ममता ।
दुखी जगत् के दुःख दूर करने की क्षमता ॥ ८ ॥
दिव्य नेत्र खुल गये दुःखका कारण जाना ।
जीने मरने का रहस्य तूने पहिचाना ॥
दुष्ट-नाश-संकल्प हृदय में तूने ठाना ।
तूने निश्चित किया सत्य-संदेश सुनाना ॥ ९ ॥
कर्मयोग संगीत सुनाया तूने ज्यों ही ।
सकल मानसिक रोग निकलकर भागे त्यों ही ॥
किंकर्तव्यविमूढ़ता न नव रहने पाई ।
अकर्मण्य भी कर्मपाठ सीखे सुखदाई ॥ १० ॥
सर्व-धर्म-समभाव हृदय में धरके तूने ।
सब धर्मों का सत्य समन्वय करके तूने ॥
मानव मनके अहंकार को हरके तूने ।
मनुष्यता का पाठ दिया जी भरके तूने ॥ ११ ॥
यद्यपि जगको सदा सत्य-सन्देश सुनाया ।
पर दुष्टों के लिये सुदर्शन चक्र चलाया ॥
दूत सूत ऋषि विविध रूप अपना बतलाया ।
जहाँ जरूरत पड़ी वहाँ तू दौड़ा आया ॥ १२ ॥
तू छलियोंको छली, योगियोंको योगी था ।
था क्रूरोंको क्रूर, भोगियोंको भोगी था ॥
निज निजके प्रतिबिम्ब तुल्य तूने दिया दिखाई ।
मानों दर्पण-प्रभा रूप तेरा धर आई ॥ १३ ॥
मुरली की ध्वनि कहीं, कहीं पर चक्रसुदर्शन ।
कहीं पुष्पसा हृदय, कहीं पर पत्थरसा मन ॥

कहीं मुक्त संगीत, कहीं गोल्हाका गर्जन ।
कहीं डांडिया रास, कहीं दुष्टों का तर्जन ॥ १४ ॥
कहीं गोपियों संग प्रेम का शुद्ध प्रदर्शन ।
भाई बहिनोंके समान लीलामय जीवन ॥
कहीं मल्लसे युद्ध कहीं यज्ञोंसी बातें ।
बालक लीला कहीं, कहीं दुष्टों पर घातें ॥ १५ ॥
कहीं राजके भोग कहीं पर सूखे चावल ।
कहीं स्वर्णप्रसाद कहीं विपदाओं का दल ॥
कहीं मेरु सा अचल कहीं बिजली सा चंचल ।
वस्त्र-भिखारी कहीं, कहीं अबलाका अंचल ॥ १६ ॥
कहीं सरलतम-हृदय कहीं पर कुटिल भयंकर ।
कहीं श्रमण-सा शांत कहीं प्रलयेश्वर शंकर ।
कहीं कर्मयोगेश जगद्गुरु या तीर्थंकर ।
दुर्जनका यमराज सज्जनों का क्षेमंकर ॥ १७ ॥
मानव-जीवन के अनेक रूपों के स्वामी ।
सत्यदेव भगवती अहिंसा के अनुगामी ॥
तूने अगणित ज्ञान रत्न थे विश्व को दिये ।
अब गीता का एक नया अवतार चाहिये ॥ १८ ॥

वंशीवाले

वंशीवाले तनिक सुनाजा, दुनियाको वंशी की तान ॥
जीवनमें रसधार बहाजा ।
सकल-रसोंका सार बहाजा ।
तार तारमें प्यार बहाजा ।
हों पूरे अरमान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा, दुनियाको वंशी की तान ॥ १ ॥
सकल कलाओं का तू स्वामी ।
धर्मी अर्थी मोक्षी कामी ।

सत्य अहिंसा का अनुगामी ।
नामी कृपा-निधान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा, दुनियाको वंशी की तान ॥ २ ॥
पत्थर सा यह दिल पिघलाजा ।
ज्वलित नयन से नीर बहाजा ।
युग युग की यह प्यास बुझाजा ।
करें सुधाका पान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा, दुनियाको वंशी की तान ॥ ३ ॥
यह जीवन रस-हीन बने जब ।
शोक सिन्धुमें लीन बने जब ।
अकर्मण्यताधीन बने जब ।
हो तब तेरा ध्यान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा, दुनियाको वंशी की तान ॥ ४ ॥
बाहर जब होली मचती हो ।
घरमें तब वसन्त रचती हो ।
विपदाओं में भी नचती हो ।
मनमोहन मुसकान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा, दुनियाको वंशी की तान ॥ ५ ॥
अमर सत्य-संगीत सुनाजा ।
प्राणोंको पीयूष पिलाजा ।
तान तानमें रस बरसाजा ।
आजा कर रसदान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा, दुनियाको वंशी की तान ॥ ६ ॥
मेरे मन-मन्दिर में आजा ।
मेरा टूटा तार बजाजा ।
सूना हृदय सजाजा, गाजा ।
कर्मयोग का गान ॥
वंशीवाले तनिक सुनाजा दुनियाको वंशी की तान ॥ ७ ॥

महावीरावतार

जग बाट देखता था तेरी तू तीर्थंकर बन आयेगा।
अंधी आँखों के लिये सत्यका पदरज अञ्जन लायेगा॥
अज्ञानतिमिरको दूर हटाकर नवप्रकाश फैलायेगा।
दुखद्वंद्व पूर्ण अन्यायी जग को श्रेयोमार्ग दिखायेगा॥१॥

पशुओं के मुखसे दर्दनाक आवाज सदैव निकलती थी।
उनकी आहोंसे जगत व्याप्त था और हवा भी जलती थी॥
भगवती अहिंसाके विद्रोही धर्मात्मा कहलाते थे।
भगवान सत्यके परम उपासक पदपद ठोकर खाते थे॥ २॥

पशुओं का रोना सुनकर के पत्थर भी कुछ रो देता था।
पर पढ़े लिखे कातिल मूर्खोंका वज्र हृदय रस लेता था॥
था उनका मन मरुभूमि जहाँ करुणारस का था नाम नहीं।
थे तो मनुष्य पर मनुष्यता से था उनको कुछ काम नहीं॥३॥

शूद्रोंको पूछे कौन जाति-मद में डूबे थे लोग जहाँ।
वे प्राणी हैं कि नहीं इसमें भी होता था सन्देह वहाँ॥
उनकी मजाल थी क्या कि कानमें ज्ञानमंत्र आने पाये।
यदि आये तो शीशा पिघलाकर कानोंमें डाला जाये॥४॥

थे कर्मकांडका जाल बिछा पड़ गये लोग थे बन्धन में।
था आडम्बरका राज सत्यका पता न था कुछ जीवन में॥
ले लिये गये थे प्राण धर्म के थी बस मुर्दे की अर्चा।
सद्धर्म नामपर होती थी बस अत्याचारों की चर्चा॥५॥

पीड़ित पशु निर्बल शूद्र मूक आहोंसे तुझे बुलाते थे।
उनके जीवन के क्षण क्षण भी वत्सरसम बनते जाते थे॥
तेरे स्वागत के लिये हृदय पिघलाकर अश्रु बनाते थे।
आँखोंसे अश्रु चढ़ाते थे आँखें पथ बीच बिछाते थे॥६॥

तूने जब दीन पुकार सुनी सर्वस्व छोड़ दौड़ा आया।
रोगीने सच्चा वैद्य दीनने मानो चिन्तामणि पाया॥

तू गर्ज उठा अत्याचारों को ललकारा, सब चौंक पड़े ।
सब गूँज उठा ब्रह्मांड न रहने पाये हिंसाकांड खड़े ॥ ७॥
पशुओंका तू गोपाल बना पाया सबने निज मनभाया ।
तूने फैलाया हाथ सभीपर हुई शान्त शीतल छाया ॥
फहरादी तूने विजय वैजयन्ती भगवती अहिंसाकी ।
हिंसाकी हिंसा हुई सहारा रहा नहीं उसको बाकी ॥ ॥
सारे दुर्बन्धन तोड़फोड़ दुष्कर्मकांड सब नष्ट किया ।
भगवान सत्यके विद्रोहीगण को तूने पदभ्रष्ट किया ॥
भगवती अहिंसाका झंडा अपने हाथों से फहराया ।
तू उनका बेटा बना विश्व तब तेरे चरणों में आया ॥ ९ ॥
ढोंगी स्वार्थी तो 'धर्म गया, हा धर्म गया' यह चिल्लाने ।
तेजस्वी रविके लिये कहे कुत्सित थूकोंने मनमाने ॥
लेकिन तूने पर्वाह न की ढोंगों का भंडाफोड़ किया ।
सद्सद्विवेक का मंत्र दिया भगवान सत्यका तंत्र दिया ॥ १०॥
तू महावीर था वर्धमान था और सुधारक नेता था ।
तू अनेकान्तका और विश्वमैत्रीका परम प्रणेता था ।
भगवान सत्यका बेटा था, आदर्श त्यागके जीवन का ।
सब का मन करुणाशील बने वरदान यही मेरे मनका ॥ ११

महात्मा महावीर

महात्मन् ! छोड़ कर हमको, कहाँ आसन जमाते हो ।
अहिंसा धर्मका डंका, बजाने क्यों न आते हो ॥ १ ॥
तुम्हारे तीर्थ की कैसी, हुई है दुर्दशा देखो ।
बने हो कर्म-योगी फिर, उपेक्षा क्यों दिखाते हो ॥ २ ॥
परस्पर द्वन्द होता है, मचा है आज कोलाहल ।
न क्यों फिर आप समभावी, मधुर वीणा बजाते हो ॥ ३ ॥
बने एकांत के फल ये, दिगम्बर और श्वेताम्बर ।
न क्यों अम्बर अनम्बरका समन्वय कर दिखाते हो ॥ ४ ॥

पुजारी रूढ़ियों के हैं, न है निष्पक्षता इनमें ।
इन्हें स्याद्वाद की शैली, न क्यों आकर सिखाते हो ॥ ५ ॥
हुआ है जाति-मद इनको, भरा मन-मोह है इनमें ।
न क्यों अब सूड़ा मद का, वमन इनसे कराते हो ॥ ६ ॥
दुहाई ज्ञानकी देते, बने पर अन्ध-विश्वासी ।
इन्हें विज्ञान की औषध, न क्यों आकर पिलाते हो ॥ ७ ॥
अजब रोगी बने ये हैं, गजब के वैद्य पर तुम हो ।
बने हैं आज ये मुर्दे, न क्यों जिन्दे बनाते हो ॥ ८ ॥

वीर

पधारो मन-मन्दिर में वीर !

आओ आओ पाप निकन्दन,
अशान्त मन के अशान्ति-भंजन,
सुनलो यह दुनियाका क्रन्दन,
शीघ्र बँधाओ धीर ।
पधारो मन-मन्दिर में वीर ॥ १ ॥

मानव है यह मानव-भक्षक,
है भाई भाई का तक्षक,
हों सब ही सब ही के रक्षक,
दो ऐसी तदबीर ।
पधारो मन-मन्दिर में वीर ॥ २ ॥

टूट गये हैं हृदय, मिला दो,
स्याद्वादामृत, देव ! पिला दो,
मुर्दों का संसार जिला दो,
खुल जाये तकदीर ।
पधारो मन-मन्दिर में वीर ॥ ३ ॥

सत्य-अहिंसा पाठ पढ़ादो,
तपकी कुल झाँकी दिखलादो,
बिगड़ों का संसार बनादो,
दूर हटे दुख पीर ।
पधारो मन-मन्दिर में वीर ॥ ४ ॥

बुद्ध

दया-देवी के नव अवतार ।
शाक्य-बन्धु पर जग का प्यारा,
भूले भटकों का ध्रुव तारा,
बुद्ध अहिंसा सत्य दुलारा,
करुणा पारावार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥ १ ॥
धन-वैभव का मोह छोड़कर,
आशाओं का पाश तोड़कर,
स्वार्थ-वासनाएँ मरोड़कर,
किया जगत से प्यार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥ २ ॥
सुख दुख में सम रहनेवाला,
पर-दुख निज-सम सहनेवाला,
निर्भय हो सच कहनेवाला,
सत्य-ज्ञान भंडार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥ ३ ॥
करुणा से भींगा मन लेकर,
दुखी जगत को जीवन देकर,
चकरानी नैया को खेकर,
करना बेड़ा पार ।
दयादेवी के नव अवतार ॥ ४ ॥

महात्मा बुद्ध

न तेरी करुणा का था पार।
तू था सत्य-पुत्र तेरा था बन्धु अखिल संसार।
न तेरी करुणा का था पार।
निर्धन सधन और नर नारी।
मूढ़ विवेकी जनता सारी।
पशु पक्षी भी मुदित किये तब औरों की क्या बात।
किये मृढ हिंसा आदिक पापोंके घर उत्पात॥
किया पापों का भंडाफोड़।
धर्म तब आया बन्धन तोड़।
मिटा दीन, दुर्बल, मनुजों के मुख का हाहाकार।
न तेरी करुणा का था पार॥ १॥

न तेरी करुणा का था पार।
करुणाशशि ऊगा आलोकित हुआ निखिल संसार। न०
अन्धकार की घनता छूटी,
निर्धन की निर्धनता छूटी,
नूतन आशाओं से सबका फूला हृदयोद्यान।
रुग्ण जगत ने पाया तुझको अपने वैद्य समान॥
हुए आशान्वित सारे लोग।
छूटने लगा अधार्मिक रोग।
पृथ्वी उठी पुकार, पुत्र! अब हरले मेरा भार॥
न तेरी करुणा का था पार॥ २॥

न तेरी करुणा का था पार।
पीडित पशु निर्बल शूद्रों की तूने सुनी पुकार। न०
लाखों पशु मारे जाते थे।
मुख में तृण रख चिल्लाते थे।
कोई मानव का बच्चा था देता तनिक न ध्यान।

बढ़ती थी शोणित पी पीकर बस हिंसा की शान ॥
मिटाये तूने हिंसाकाण्ड।
दयासे गूँज उठा ब्रह्मांड।
क्रन्दन मिटा सुन पड़ी सबको वीणा की झंकार।
न तेरी करुणा का था पार ॥ ३ ॥
न तेरी करुणा था पार।
ढाहीं गईं सभी दीवालें रहे न कारागार। न तेरी०
जग में बजा साम्य का डंका।
मनकी निकल गई सब शंका।
दम्भ और विद्वेष न ठहरे चढ़ा प्रेम का रंग।
बही दीनता बहा जातिभेद ऐसी उठी तरंग ॥
हुआ झूठों का मुँह काला।
सत्य का हुआ बोलबाला।
एक बार बज पड़े हृदय-वीणा के सारे तार ॥
न तेरी करुणा का था पार ॥ ४ ॥

श्रमण बुद्ध

ओ बुद्ध श्रमण स्वामी, तू सत्य ज्ञानवाला।
तू सत्य का पुजारी, सच्ची जबानवाला ॥ १ ॥
हिंसा पिशाचिनी जब, तांडव दिखा रही थी।
तू मात अहिंसा का आया निशानवाला ॥ २ ॥
विद्वान लड़ रहे थे, उन्माद ज्ञान का था।
बन्धुत्व प्रेम लाया तू प्रेम गानवाला ॥ ३ ॥
मुर्दा पड़ा जगत था, सज्ज्ञान प्राण खोकर।
तूने उसे बनाया, गतिमान जानवाला ॥ ४ ॥
दुख से तपे जगत में थी, शान्तिकी न छाया।
तू कल्पवृक्ष लाया, सुखकर वितानवाला ॥ ५ ॥
विष पी रहा जगत था, सब भान भूल करके।

तूने अमृत पिलाया तू अमृत पानवाला ॥ ६ ॥
मद मोह आदि हिंसक पशु का बना शिकारी ।
तूने उन्हें गिराया तू था कमानवाला ॥ ७ ॥
' है धर्म दुःख ही में ' अज्ञान यह हटाया ।
' अति ' का विनाश कर्ता तू मध्ययानवाला ॥ ८ ॥
सब राजपाट छोड़ा जगके हितार्थ तूने ।
जीवन दिया जगत को तू प्राणदानवाला ॥ ९ ॥
निःपक्षपात बनकर सन्मार्ग पासके जग ।
दुर्ध्यान दूर करके हो सत्य ध्यानवाला ॥ १० ॥

महात्मा कन्फ्यूसियस

कन्फ्यूसियस महात्मा जग को नीति सिखानेवाले ।
शासक शासित सभी जनों को राह दिखानेवाले ॥
चीन देश के युग महर्षि तुम जनता के हितकारी ।
अनुपम था पांडित्य तुम्हारा सरस्वती-अवतारी ॥ १ ॥
राजनीति के धर्मनीति के नीतिशास्त्र के ज्ञाता ।
सकल सुनीति समन्वय कर्ता चीन देश के त्राता ॥
मानव में मानवता लाने नीतिशास्त्र सिखलाने ।
निशदिन गली गली तुम घूमें दुनिया नई बनाने ॥२॥
पर दुनिया पहिचान न पाई तुम्हें नहीं अपनाया ।
तुमने शासन नीति कही पर शासन सुधर न पाया ॥
तुम समान शासन शिल्पी से शासक दल घबराया ।
सब की रही उपेक्षा तुम पर तुमसे लाभ न पाया ॥३॥
फिर भी गूंजी देश देश में वाणी दिव्य तुम्हारी ।
जब तुम चलेगये दुनिया से तब जग बना पुजारी ॥
अगणित भक्त पुजारी बनकर साधक बने तुम्हारे ।
तुम पैगम्बर बने जगत के सत्येश्वर के प्यारे ॥ ४ ॥
तुमने कहा इसी दुनिया को सुखमय हमें बनाना ।

शासनतंत्र बनाना ऐसा घर घर बने खजाना ॥
भौतिकता आध्यात्मिकता का तुमने मेल मिलाया।
यह जग झूठे स्वप्न छोड़कर सच्चे पथपर आया ॥५॥
नवीं महात्मा पैगम्बर तुम मुनि महर्षि सज्ज्ञानी।
निजहित परहित किया समन्वय सकल हितों के ध्यानी ॥
तुमने ज्ञान ज्योति देकरके चीन देश को तारा।
उपदेशों का सार तुम्हारा सीखे यह जग सारा ॥ ६ ॥

महात्मा जरथुस्त

हे फारस के श्रेष्ठपुत्र जरथुस्त महात्मा मुनिवर।
सत्येश्वर के अहुरमज्द के तपोमूर्ति पैगम्बर ॥
फारस की सारी बर्बादी दूर कराई तुमने।
बर्बादी में आबादी की ज्योति जगाई तुमने ॥ १ ॥
बने भगोड़े थे जग को दुखरूप बतानेवाले।
दुनिया को गाली देदेकर दुनिया खानेवाले ॥
उनके कान खोलकर तुमने सत्सन्देश सुनाया।
अकर्मण्यता दूर हटाई भागी छल की छाया ॥ २ ॥
तुमने कहा–" न जग से भागो जग आबाद कराओ।
कृषि व्यापार शिल्प सेवाएँ घर घर में फैलाओ ॥
धन वैभव से दुनिया भरदो पर न पाप आने दो।
मन तन वाणी शुद्ध रहें सब मैल न लगपाने दो ॥ ३ ॥
दुःसंगति से दूर रहो सब नीति कभी मत छोड़ो।
अपराधों की क्षमा याचना से न कभी मुख मोड़ो ॥
जो तुमसे अपराध हुए हों जाने या अनजाने।
सकल विश्वसे उनकी माफी मांगो बनो सयाने' ॥ ४ ॥
ये सब सत्सन्देश न सुनपाये बिगड़े ईरानी।
मूढ़ जगत ने पैगम्बर की महिमा तनिक न जानी ॥
तुमको पत्थर मार मार कर घायल करदी काया।

गांव गांवसे तुम्हें निकाला निश दिन खूब सताया ॥५॥
जिसके हित के लिये रात दिन तड़पा हृदय तुम्हारा ।
उसी मूढ़ जनता ने तुमको गली गली में मारा ॥
पर तुम रहे हितैषी जग के प्रीति न तुम ने तोड़ी ।
तुम थे अहुरमज्द के बन्दे अपनी राह न छोड़ी ॥ ६ ॥
जब तक जीवन रहा रात दिन सत्सन्देश सुनाया ।
दुनिया की दुर्दशा देख नयनों से नीर बहाया ॥
उसी नीर ने फारस का कण कण तक शुद्ध बनाया ।
जब तुम चले गये, फारस तब तुम्हें पूजने आया ॥ ७ ॥
पैगम्बर के जीवन की है सच्ची यही परीक्षा ।
जनहित के खातिर मिटने की लेता है वह दीक्षा ॥
इस दीक्षा में पार हुए तुम जीवन सफल बनाया ।
अहुर्मज्द के बन्दे तुमने जग आबाद कराया ॥ ८ ॥

महात्मा ईसा

अन्धश्रद्धाओं का था राज्य, ढोंग करते थे तांडव नृत्य ।
ईश-सेवक का रखकर वेष, बने शैतान राज्य के भृत्य ॥
मचाया था सब अन्धाधुन्ध, पाप करते थे परम प्रमोद ।
हुआ तब ही ईसा अवतार, मात मरियमकी चमकी गोद ॥ १ ॥
प्रकम्पित हुआ दुष्ट शैतान, हुआ ढोंगों का भंडाफोड़ ।
मनुज सब बनने लगे स्वतंत्र, रूढ़ियों के दुर्बन्धन तोड़ ॥
जगत् का जागृत हुआ विवेक, सभी ने पाया सच्चा ज्ञान ।
शुष्क पांडित्य हुआ बलहीन, शब्द-कीटों ने खोया मान ॥ २ ॥
पुजारी की पूजाएँ व्यर्थ, बनी थी मृतकतुल्य निष्प्राण ।
व्यर्थ चिल्लाते थे सब लोग चाहते थे चिल्लाकर त्राण ॥
मिटाया तूने यह सब शोर शांति का दिया सभी को ज्ञान ।
'प्रार्थना करो हृदय से बन्धु, न ईश्वर के हैं बहरे कान ॥ ३ ॥
दुःख को समझ रहे थे धर्म, झेलते थे सब निष्फल कष्ट ।

वेपियों की थी इच्छा एक, किसी भी तरह अंग हो नष्ट ॥
व्यर्थ आता था मनुज शरीर, न था पर-सेवासे कुछ काम ।
गंदगी फैली थी सब ओर, न था सद्विवेक का नाम ॥ ४ ॥

तोड़कर ऐसे सारे ढोंग, सिखाया तूने सेवाधर्म ।
प्रेम से कहा-' यही है बन्धु, अहिंसा सत्यधर्म का मर्म, ॥
रहा तू सारे झगड़े छोड़ रोगियों की सेवा में लीन ;
वेदनाओं से करके युद्ध विश्व के लिये बना तू दीन ॥ ५ ॥

बना था तू अंधे की आंख, और बहिरे लोगों का कान ।
निहत्थे लोगों का था हाथ पंगुजन को था पाद-समान ॥
बालकों को था जननी-तुल्य, प्रेम की मूर्ति अमित वात्सल्य ।
रोगियों का था तू सद्वैद्य, दूर करदी थी सारी शल्य ॥ ६ ॥

दीन दुखियों का करके ध्यान, न जाने कितना रोया रात ।
बिताये प्रहर एक पर एक, अश्रुवर्षा में किया प्रभात ॥
कटोरे सी जल से परिपूर्ण, लिये अपनी आँखें सर्वत्र ।
दीन दुखियों की कुटियों बीच, सदा खोला सेवा का सत्र ॥ ७ ॥

हृदय तल करके वज्र-कठोर सही तूने दुष्टों की मार ।
मौत से भिड़ा अभय हो वीर क्रॉस का सहकर अत्याचार ॥
आपदाओं से खेला खेल, निकाली कभी न तूने आह ।
कही तो केवल इतनी बात, ' बन्धु ! होते हो क्यों गुमराह ॥ ८ ॥

पढ़ाकर मानवता का पाठ, बताई गुमराहों को राह ।
नरक से स्वर्ग जगत बन जाय, यही थी तेरे मनमें चाह ॥
प्रेम सेवा था तेरा मन्त्र, इसी के लिये दिये थे प्राण ।
हृदय में आकर सब के देव, विश्व का फिर करदे कल्याण ॥ ९ ॥

ईसा

दिखा दे जन-सेवा की राह ।
दया चन्द्रिका को छिटकाकर । दुखियों के दुख मनमें लाकर ।
दीनों की कुटियों में जाकर । हरले जग का दाह ।
दिखादे जन-सेवा की राह ॥ १ ॥
धर्मालय के ढोंग मिटाने । हृदयों में पवित्रता लाने ।
सत्य-धर्म का साज सजाने, आजा मन के शाह ।
दिखादे जन-सेवा की राह ॥ २ ॥
बन अंधी आँखों का अञ्जन । दीन-दुखी जनका दुखभञ्जन ।
कर दे तू उनका अनुरञ्जन । रहे न मन में आह ।
दिखादे जन-सेवा की राह ॥ ३ ॥
सर्व-धर्म-समभाव सिखादे । सत्य अहिंसा रूप दिखादे ।
विश्वप्रेम सबके मन लादे । रहे प्रेमकी चाह ।
दिखादे जन-सेवा की राह ॥ ४ ॥

महात्मा मुहम्मद

ओ वीरवर मुहम्मद, समता सिखानेवाले ।
सत्प्रेम की जगत को, झाँकी दिखानेवाले ॥ १ ॥
तेरे प्रयत्न से थे, पत्थर पसीज आये ।
मरुभूमि में सुधा की, सरिता बहानेवाले ॥ २ ॥
हैवानियत हटाकर, लाकर मनुष्यता को ।
बर्बर समाज को भी, सज्जन बनानेवाले ॥ ३ ॥
होता मनुष्य-वध था, जब धर्म के बहाने ।
तब प्रेम अहिंसा का संगीत गानेवाले ॥ ४ ॥
बनकर खुदा जगत का, शैतान पुज रहा था ।
शैतान के छलों का, पर्दा हटानेवाले ॥ ५ ॥
जग साध्य-साधनों का, जब सद्विवेक भूला ।

रिश्ता तभी खुदा से, सीधा लगानेवाले ॥ ६ ॥
जब व्याज बोझ बनकर, सबको सता रहा था ।
करके हराम उसकी-हस्ती मिटानेवाले ॥ ७ ॥
धन पाप किस तरह है, इस मर्मको समझकर ।
व्यवहार में घटा कर, जग को दिखानेवाले ॥ ८ ॥
अबला गरीब जन की, जो दुर्दशा हुई थी ।
उसको हटा घटा कर, सुख शांति लानेवाले ॥ ९ ॥
जग में असंख्य अबतक, पैगम्बरादि आये ।
उनको समान कह कर, समभाव लानेवाले ॥ १० ॥
मजहब सभी भले हैं, यदि दिल भला हमारा ।
सब धर्म प्रेममय हैं, यह गीत गानेवाले ॥ ११ ॥
समभाव फिर सिखाजा, सूरत जरा दिखाजा ।
फिर एक बार आजा, दुनिया हिलानेवाले ॥ १२ ॥

मुहम्मद

था अजब बना बाना तेरा, तलवार इधर थी, उधर दया ।
जल-लहरी की मालाएँ थीं, ज्वालाएँ थीं, था रूप नया ॥
दुर्जन-दल भञ्जक था पर तू, जगका अनुरञ्जक प्रेम-सना ।
भीतर से था सच्चा फकीर ऊपर से था पर शाह बना ॥१॥
था माल खजाना तेरा पर, कौड़ी कौड़ी का त्याग किया ।
मालिक था, गुरु था, पर तूने, सेवकता का सन्मान लिया ॥
विपदाओं के अगणित कंटक थे, तूने उनको पीस दिया ।
तू मौत हथेली पर लेकर, भूली दुनियाके लिये जिया ॥२॥
नर-रत्न मुहम्मद, सीखी थी, तूने जीनेकी अजब कला ।
तू वाइज था, पैगम्बर था, तूने दुनिया का किया भला ॥
अभिमान छुड़ाया था तूने, सबके मजहब को भला कहा ।
तू सर्वसमं-समभाव लिये, भगवान सत्य का दूत रहा ॥३॥

दिखला दे तू अपनी झाँकी, दुनिया में कुछ ईमान रहे ।
सत्प्रेम रहे मानव-मन में, भाईचारे का ध्यान रहे ॥
मजहब के झगड़े दूर हटें, मजहब में सच्ची जान रहे ।
सब प्रेम-पुजारी बनें अहिंसक, जिससे तेरी शान रहे ॥४॥

महर्षि मार्क्स

हे कार्लमार्क्स, हे युग महर्षि, हे साम्यवाद के तीर्थंकर ।
हे अर्थनीति के क्रांतिकार, हे दीनबन्धु, हे पैगम्बर ॥
केपिटल-प्रणेता, नेता तुम, मजदूरों के सच्चे वकील ।
सत्पक्ष दिखाया था तुमने सारा कुतर्क दल छील छील ॥१॥
अन्धेरों की सब पोल खोल अंधेर मिटा डाले तुमने ।
शोषण के अत्याचारों को गिन गिन मारे भाले तुमने ॥
श्रमको ही सच्चे अर्थों में भगवान बना डाला तुमने ।
मंदिर मसजिद या गिरजाघर कर दिये श्रमिकशाला तुमने ॥२
सब धर्म तीर्थ थे लाश बने दुर्गंध सिर्फ फैलाते थे ।
जीवन के रोग बढ़ाते थे जग में अंधेर मचाते थे ॥
उन लाशों का अंत्येष्टि कर्म करने को तुमने ललकारा ।
मुर्दों का वह संसार मिटा बह चली नई जीवनधारा ॥३॥
पूँजी का मर्म बताकर तुमने पूँजीवाद विरोध किया ।
जो विकृत हुई थी अर्थनीति तुमने उसका सतशोध किया ॥
उत्पादन और विभाजन का तुमने नूतन सिद्धांत दिया ।
जो अर्थनीति थी रुग्ण हुई उसके रोगों का अंत किया ॥४॥
बेकारी और गरीबी का तुमने इलाज भरपूर किया ।
जिस व्यक्तिवाद के दुष्फल ये उस व्यक्तिवाद को दूर किया ॥
था यंत्रवाद सागरमंथन थी गरलरूप यह बेकारी ।
वह गरल पिया तुमने हँसकर तुम थे युगके शिव अवतारी ॥५
यह अर्थचक्र वह कालचक्र दोनों को तुमने जोड़ दिया ।
इतिहासों का विज्ञान सिखा जग का नूतन इतिहास किया ॥

श्रमजीवी जनता के खातिर दिनरात तपस्या-लीन रहे।
नाना प्रलोभनों को जीता असहाय रहे सब दुःख सहे ॥ ६ ॥
एंगिल्स मिले बस एक बन्धु जिनने पूरा सहयोग दिया।
दो अंग बने पर एकप्राण, मन एक किया धन एक किया ॥
आदर्श बन्धुता दिखलाकर तुम दोनों लक्ष्मण राम बने।
अन्धेरों का साम्राज्य मिटाकर दोनों लोक ललाम बने ॥ ७ ॥
जीवनभर घोर तपस्या की तपके फल की पर्वाह न की।
मिट्टी में मिलकर बीज बने मिटगये मगर कुछ आह न की ॥
वह बीज आज फलफूल गया बनगया चमन है हरा भरा।
जो भूमि मरुस्थल-सी दिखती थी बनी आज उर्बरा धरा ॥८॥
उर्बरा धरा में आज तुम्हारे सिद्धान्तों की खेती है।
जो देश काल अनुकूल प्रक्रियाएँ विधि विधि की लेती है ॥
तुम क्रान्तिकार युग-परिवर्तक युग-परिवर्तन के पक्षकार।
कल्याण जगत का हो जिससे तुम सदा चाहते वह सुधार ॥९॥
एंगिल्स-बन्धु जेनी-सहचर, हे विपत्प्रलोभनजयी वीर।
हे सरस्वती के वरद पुत्र हे परम तपस्वी परम धीर ॥
जगने तब तुम्हें न पहिचाना पहिचान रहा पर जगत आज।
तुमसे प्रेरित हो हो करके बनरहा नया मानव समाज ॥१०॥

उत्तरार्ध

[कविवर वैद्य प्रकाशपुञ्ज जी सत्यालंकार की रचनाएँ]

२० — पैगाम सुनाने आया

नव-पैगम्बर पैगाम सुनाने आया, अपना अभिनव सन्देश गुजाने आया।
जितने पैगम्बर आये यहाँ जगत में, उन सबमें सत्य-समन्वय लाने आया !
अब नहीं अछूता रहे एशिया योरुप, गौतम ईसा का मेल मिलाने आया !
सब फटे हृदय हो हृदय-विहीन हुये हैं, उन हृदय-हृदय का जोड़ मिलाने आया !
हैं सम्प्रदाय सब अपना स्वार्थ पजाते, उन स्वार्थों को परमार्थ बनाने आया !
है नहीं किसी से घृणा, सभीका रहबर, यह जीवन की वह राह दिखाने आया !
जिस पथपर चल सुख शांति स्वर्ग है संभव, इस जगमें ही वैकुण्ठ रचाने आया !
आफ्रिका देश में भारत से चल करके, सम्प्रति वह अपनी गूँज मचाने आया !
वह है असीम सीमा का भेदन करते, सत्यामृत की रसधार बहाने आया !
अब एक-एक कर सारे देशों में ही, पहुँचेगा, जग में ज्योति जगाने आया।
करतलवत होंगे भुक्तिमुक्ति के साधन, जगको विमुक्त कर एक कराने आया !
जो डूबा है जग पाप-तापवारिधि में, इस डूबे जगको ही उतराने आया !
ये त्रिविध ताप हैं विविध पापके प्रतिफल, पापोंकी जड़को ही विनसाने आया !
जो रौरव-नर्क बना जग, जाने कब से ? इस भव-सागर से पार लगाने आया !
दुनिया ईश्वरवादी, पर बेहद अंधी उन अंधों का अज्ञान मिटाने आया !
जप, नाम, भक्ति प्रभुकी पूजा-अर्चा क्या ? सब धर्म कर्मका मर्म बताने आया !
डंका बजता है 'सत्यभक्त स्वामी' का, नूतन अवतार जगतमें छाने आया !
सब मसलों का हल करने को पैदा है, जग-जनता को सत्पंथ चलाने आया !
हर नीति, ज्ञान, विज्ञान मार्ग का पूरक, नेताओं तक को सत्य सुझाने आया !
यह हर मजहबवालों के लिये पहेली, बनकर निज अनुपम नाम कमाने आया !
दुनिया देखे यह कैसा नया मसीहा ? युगद्रष्टी 'नया संसार' बसाने आया !
वाणी, लेखनी, क्रिया में तद्गत होकर; मानवता का संगम लहराने आया !
गुणवैरी नोंच रहे हर डाली डाली, माली बन जीवन-बाग सजाने आया !

हो ! घोर विषमता भी जीवन-रस चूमी, यह निरतिवादका पाठ पढ़ाने आया !
जब मनुज एक तब भाषा एक न क्यों हो ? 'मानवभाषा' का लिये खजाने आया
हो रत्नराशि इसकी न कभी चिंता की, निज निधिको ही जग बीच लुटाने आया
सत्येश्वर ही निज दिव्य दूत का निधि है, लेकर के उसका चेक भुनाने आया !
वे भाग्यवान-जो दिल से इसे समझ लें, प्रभुका चाकर चाकरी बजाने आया !

२१—सत्यभक्त बन जाओ !

जीवन-दर्शन पाओ ! हे मन सत्यभक्त बन जाओ !!
खण्ड-खण्ड में बटी मनुजता। व्यापी जगमें घोर दनुजता।
अघतापों की छाई रुजता। प्रेमाकर्षण लाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ १ ॥
ईर्ष्या, द्वेष, दम्भ मद मत्सर। इनमें डूब रहे नारी-नर !
सुप्त पड़े हैं सत, शिव, सुन्दर। उनको आज जगाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ २ ॥
लख चौरासी योनि जाति है। जिसमें मानव एक जाति है।
जो प्रचलित वैषम्य-भ्रांति है। उसे शीघ्र विनसाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ३ ॥
अपने हृदयान्तर से पूछो। जीवन के संस्तर से पूछो।
आत्म-रूप ईश्वर से पूछो। मनके द्वन्द्व मिटाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ४ ॥
मानव बुद्धि-गम्य है प्राणी। सभी योनियों में लासानी।
फिर क्यों बनते हो अज्ञानी ? निज लुटिया न डुबाओ !
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ५ ॥
गधे, अश्व, रस्ते अपने हैं। गाय बैल के क्या कहने हैं ॥
सब प्रकृतिस्थ स्वभाव सने हैं। तुम पशुता न लजाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ६ ॥

मानव में जो दानव आया। उसका जल्दी करो सफाया।
निखर उठे यह कञ्चन काया। जीवन सफल बनाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ७ ॥
शोषण-दोहन-दलन न होवे। मानवता का पतन न होवे।
नर को नर से जलन न होवे। निरविवाद अपनाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ८ ॥
कोई नहीं 'पराया' जग में। सब 'अपना' ही है इस मगमें।
'संस्कृति एक' भरी रग-रग में। मानव की जय गाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ९ ॥
एक ब्रह्म रहता मन-मन में। एक रक्त बहता जन-जन में।
एक 'तत्त्वमसि' है तन-तन में। पूर्णमिदं प्रकटाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ १० ॥
जीवन में दुख-द्वन्द नहीं हो। सत, चित औ आनन्द यहीं हो।
तभी मुक्ति की बात सही हो। स्वर्ग छटा-छवि छाओ।
हे मन, सत्यभक्त बन जाओ ॥ ११ ॥

२२— लिये फिरता हूं !

मैं मनुजों में मृदु प्यार लिये फिरता हूं।
सुख, शान्ति, स्नेह का तार लिये फिरता हूं !
मैंने कब जाना अपना और पराया ?
मानवता एकाकार लिये फिरता हूं ॥१॥
मेरी काया कञ्चन पर बिकी न अब तक,
आत्माभिमान का भार लिये फिरता हूं !
शासक, भूपाल डिगायेंगे कब मुझको ?
मैं स्वरों की झनकार लिये फिरता हूं ॥२॥
इस पूंजीवादी जग को राख बनाने,
मैं ज्वालामुख अंगार लिये फिरता हूं !

कब कुरूढ़ियों के सम्मुख नत हो पाया ?
मैं मनुष्यत्व-उद्‌गार लिये फिरता हूं ॥ ३ ॥
नर-नारी मुझको रूप सृष्टि के लगते ।
इनका समान अधिकार लिये फिरता हूं !
जो पतित, पददलित, पीड़ित और प्रताड़ित ।
उनके दुख का संहार लिये फिरता हूं ॥ ४ ॥
पोचा करता मैं अपने मे अपने में ।
मैं अवतारी, अवतार लिये फिरता हूं !
नन्हा-सा जीवन नरक-समान रहे क्यों ?
स्वर्गोपम सुख-संसार लिये फिरता हूं ॥ ५ ॥
मानव होकर जग मानवता क्यों छोड़े ?
वसुधा में सुधा-सुधार लिये फिरता हूं !
मैं 'सत्यभक्त' हूं, 'भक्ति'-'सत्यमें मेरी ।
'सत्यामृत' की रसधार लिये फिरता हूं ॥६॥
'भगवती अहिंसा' 'सत्येश्वर' चक्षुद्वय ।
जिनकी पूजा का थार लिये फिरता हूं !
हूं प्रीति–कोमलांगी का परम उपासक,
मैं घृणा, द्वेष को क्षार लिये फिरता हूं ॥७॥
केवल उपास्य मेरी अन्तर्घटिका है,
उसका ही बल आधार लिये फिरता हूं !
गुरुडम, विडम्बनायें मुझको न सुहातीं,
मैं आत्मा की मनुहार लिये फिरता हूं ॥ ८ ॥
मैं नहीं किसी के आगे कर फैलाता,
ऐश्वर्यों का अम्बार लिये फिरता हूं !
प्रचलित कुबन्ध में हूं कब बंधनेवाला ?
निज प्रेमपूर्ण आचार लिये फिरता हूं ॥ ९॥
सब व्यर्थ वितण्डावादों को तज करके,
भजने को प्रकृत विचार लिये फिरता हूं !

झूठे वहमों को पीछे छोड़ चुका हूं,
अन्तर का ही इजहार लिये फिरता हूं ॥१०॥
मेरे लिखने, कहने का ढङ्ग निराला,
अपना मौलिक व्यवहार लिये फिरता हूं !
अब जीत-हार की चिन्ता मुझे नहीं है,
इन दोनों का प्रतिकार लिये फिरता हूं ॥११॥
अपनी त्रुटियों की दवा दुआ में खुद हूं,
निजमें निजका उपचार लिये फिरता हूं !
जो सत्येश्वर ने मुझ को मार्ग दिखाया,
उस सत्पथपर एतबार लिये फिरता हूं ॥१२॥
मानव की लघुता ही कब मैंने आँकी ?
मानवता का विस्तार लिये फिरता हूं !
दैहिक, दैविक, भौतिक त्रयताप मिटाने,
सत-चित-आनन्द अपार लिये फिरता हूं ॥१३॥
जो पहले पोथी, पत्र पढ़ा, सब भूला,
अब सत-साहित्यागार लिये फिरता हूँ !
जो 'सत्यभक्त-साहित्य' रश्मि फैलाते,
उन किरणोंका गुरु भार लिये फिरता हूँ ॥१४॥
कनफुकवा गुरु का कच्चा शिष्य नहीं हूं,
'सत्याश्रम' का उजियार लिये फिरता हूँ !
गुरु-मन्त्र रूप सत्येश्वर के शब्दों का
सत्, शिव, सुन्दर उपहार लिये फिरता हूं ॥१५॥

२३—मेरा भगवान

मुझको मेरा भगवान पूजने दो तुम !

(१)

मुझ-अर्जुन का भगवान-सारथी बन कर,
कर रहा नियन्त्रण मेरे जीवन-रथ का ।
मैं बढ़ा जा रहा हूँ अपने मन्जिल पर,
पर पता न रखता उसके इति का, अथ का ॥
उर अन्तर का आह्वान पूजने दो तुम !
मुझको मेरा भगवान पूजने दो तुम ॥

(२)

मन्दिर-मसजिद-गिरजा की झाँकी मुझ में ।
हैं ईसा—बुद्ध—मुहम्मद मेरे रहबर ।
अब रहा आँकना ही क्या बाकी मुझ में,
मानस में ज्योतित सत्य और शिव सुन्दर ॥
मानवता का अरमान पूजने दो तुम !
मुझको मेरा भगवान पूजने दो तुम ॥

(३)

मैं हिन्दू मुसलिम ईसाई अपने में,
मैं तीर्थंकर, मैं पैगम्बर, मैं शंकर ।
मेरे अनेक क्षण विगत हुये सपने में,
अब है मेरा मन केवल मेरे अन्दर ।
पाषाण नहीं, इन्सान पूजने दो तुम !
मुझको मेरा भगवान पूजने दो तुम ॥

२४-- सत्य का उद्घोष !

' कलियुग ' कर मलते भागा, ' सतयुग ' ने अँगड़ाई ली !
जो ' साठा ' सत्समार्जा, ' पाठा ' बन तरुणाई ली !!
हम-जैसे युवक-हृदय ने–नवयुग की अगवानी की !
मजहबी, धर्म ध्वजियों ने–पर ऐसी नादानी की ॥१॥

जब हमने बढ़ उस युग को–स्वागत करके पुचकारा !
तरकस में तीर लिये तब–धर्मान्धों ने ललकारा !!
वे प्रगति पन्थ के रोड़े, बनकर सम्मुख में आये !
मानवता को पटकनियाँ—दे नंगा नाच नचाये ॥ २ ॥

जो अभी नृत्य वे करते—मजहब के फरमूले पर ।
हैं झुला रहे प्रभु तक को, निज तिकड़म के झूले पर ।
पादरी, पुरोहित मुल्ला, जो आज तलक भरमाये ।
भ्रम का शिकार करके वे, हैं उल्लू हमें बनाये ॥३॥

फितरत का जाल बिछाकर, करके समाज को अंधा ।
स्वार्थान्धी हथकण्डों ने—कर रक्खा गोरखधन्धा ॥
अब हम सब समझ गये हैं—वह मर्म धर्म का सारा ।
अज्ञता, अन्धता से हम—करते जा रहे किनारा ॥४॥

आधुनिक-विश्व-पैगम्बर—है ' सत्यभक्त '–सा प्यारा ।
जो ' सत्यसमाज ' रचे वे–वह ' सत्यसमाज ' हमारा ॥
जो हैं विवेक के पूजक–' सत चित ' के हैं साधक जो ।
जो मानवत्व–संरक्षक—शुचिता के आराधक जो ॥५॥

मन उन्हें मानता आया—वे सभी मान्य मेरे हैं ।
हम उनके सत्य-प्रशंसक—सच्चाई के चेरे हैं ॥
वे किसी देश के भी हों—पर हैं सविशेष हमारे ।
उन सत्पुरुषों पर हमने—हैं कोटि मजहबी वारे ॥६॥

है राजनीति में भी कुछ—ऐसी ही अपनी धारा ।
अप्सरा बनी जो चलती–वह कवि को नहीं गवारा ॥

जो राष्ट्र-राष्ट्र की गुत्थी—नव-दृष्टि लिये सलझाये ।
जो नीति मानवी लेकर—यह दुनिया एक बनाये ॥७॥
उस महामहिम के चरणों–पर झुके हुये हम हरदम ।
'संसार नया' जो कर दे–हो मधुर मिलन का सगम ॥
हम उसे खोजते ही थे—वह 'सत्यभक्त' बन आया ।
दिल जैसा चाह रहा था—हमने वैसा ही पाया ॥८॥
मन की मुराद पूरी हो—वाणी का मिला सहारा ।
लेखनी धनी हो भूमी—मुक्तावलि उस पर डारा ॥
वह 'सत्यसमाज' प्रणेता–प्रिय 'सत्यभक्त' सा रहबर ।
जो अवतारों को पाले—है स्वयं शीर्ष पैगम्बर ॥९॥
वह सत्यसिन्धु अंमृत का–कन पृथ्वी पर टपका है ।
यह सुकवि तृप्त होने को–उन बूंदों पर लपका है ॥
नर जन्म-जन्म तपने पर–पाते थे जिस आसव को ।
हम सत्य-मिशन में आकर–पाये उस अमृतार्णव को ॥१०॥
इस हेतु हमारी वाणी–लेखनी उधर को चलती ।
जब अन्तर्बुद्धि हमें ले—प्रेरक बन जहां मचलती ॥
जो प्रभु उज्वलता देवे उस ईश्वर के बन्दे हम ।
अन्यथा कलुषता दे जो-उसके न पड़े फन्दे हम ॥११
मेरा ईश्वर मेरे घट—भीतर बोला करता है ।
वह विष न घोलनेवाला—अंमृत घोला करता है ॥
वह रहा 'मार्क्स' के अन्दर, वह रहा 'मसी' के अंदर ।
वह रहा 'बुद्ध' के अंदर, था 'महावीर के अंदर' ॥१२॥
वह सुधी-संत-हजारों—अवतारों के अंदर था ।
तीर्थंकर, पैगम्बर के—वह पीरों के अन्दर था ॥
तात्विक-गुण ज्योति लिये ही सारे उत्तम नर आये ।
जिनमें थे मार्क्स अनोखे–वे नई दिशा दिखलाये ॥१३॥
फिर चतुर्दिशा मे गुंजित—उनका स्वर भरता जाता ।
वे जग से विदा हुये, पर—जग से है उनका नाता ॥

यों कहें एक शब्दों में—तो वे जग के सम्बल थे ।
श्रमिकों के, दलितों के वे, नर नारायण, दृग जल थे ॥१४॥

उनकी सराहना करना—मानों जोखिम खाना है ।
परलोक धर्म पूँजी के—ठेकों मे टकराना है ॥
इसलिये मोड़ से मुड़कर--हम आगे कदम उठाते ।
जिस ओर हमें जाना है-उस ओर कलम लेजाते ॥१५॥

सबके तत्वों को लेकर--आगे निज तत्व मिला कर ।
हैं उदित हुये धरणी पर 'श्री सत्यभक्त'-पैगम्बर ॥
जिनके पैगामों को सुन--यह दुनिया चौंक पड़ी है ।
जो जान गये उनकी तो-धमनी तक धौंक पड़ी है ॥१६॥

देखती धरा अकचक हो, इस अपने धरणीधर को ।
इस सद्गुरुमें जग देखे-सत को, शिव को, सुन्दर को ॥
जो मानव संस्कृति का है-दुनिया का एक धरोहर ।
जिसमें गुन्थित हैं सारे-मठ मसजिद वा गिरजाघर ॥१७॥

जो स्वयं बना देवालय—मन को मन्दिर करता है ।
मानव का सत्य-चिकित्सक-बन मानवत्व भरता है ॥
जो जग-जन का सेवक है-साथी है, सखा, सुहृद है ।
जो सच्चा सुत वसुधा का-सेवी है, विभव-कुमुद है ॥१८॥

जो सब धर्मों का पूरक—नय-नीति-रीति का ज्ञाता ।
जो राजनीति शोधन कर—द्वन्द्वों का मूल मिटाता ॥
सत्ता की छीनाझपटी—का देख नग्न-नर्तन जो ।
उस पर प्रहार करता ही-रहता है बन पाहन जो ॥१९॥

भ्रामक-इतिहास-पुराणों—का व्यूह तोड़ता है जो ।
उलझी गुत्थी सुलझाकर—सत्प्रेम जोड़ता है जो ॥
जो पुराकाल से अब तक—की ग्रन्थि खोलनेवाला ।
निष्पक्ष सत्य पर आधृत-है ठीक बोलनेवाला ॥ २० ॥

आख्यानों का मन्थन कर—पन्थों का परिशीलन कर !
अभिनव सुलेच, सद्ग्रन्थों—को है दे रहा निरन्तर ॥

वह विप्रवाद ? जो छुआछूत, परलोकवाद पर चलता है—
जो बना अनैतिक, पर धार्मिकता के बाने में पलता है।
हिन्दू-समाज की रीति-नीतियों का वह ही सञ्चालक है,
जो है स्ववर्ग का प्रतिपालक, पर मानव-कुल का घातक है।
जो शास्त्र, पुराणों के बल पर निर्बल ही करता रहता है—
जीते मरते रोजी चलती—बस्ती उजाड़ सुख लहता है।

रामायण, गीता और महाभारत आदिक क्या बोल रहे ?
सब "विषरस भरा कनक घट जैसे" मादकता हैं घोल रहे।
उनमें है आग लगाना, फलतः मारू बाजा बजवाना,
जो शान्त, उन्हें करके अशान्त रण-सज्जा से ही सजवाना।
उस सड़ी पुरानी धार्मिकता से अब तो बदबू आती है
उस अध्यात्मिकता की सड़ंध से मानवता गन्धाती है

मुल्ला, पादरी, परोहितशाही ने मजहबें जमाई हैं—
जिनके छल आँखों में पट्टी दे करती रहीं कमाई हैं।
इन फिरकेबन्द महा शैतानों ने ऐसा ही जाल रचा—
जिस घन-चक्कर से कोई तीर्थंकर, पैगम्बर रहा बचा।
जब हिंसा का साम्राज्य बढ़ा तब करुणासिन्धु बुद्ध आये—
-थे महावीर, ईसा आये, मूसा आदिक छवि दिखलाये।
फिर सन्त और सूफी पैदा हो ख्यालात निज फैलाये,
नानक, कबीर, रैदास, शेखसादी की धुन हम सुन पाये।
दादू, पलटू, मलूक जैसों की बानी हम लख पाते हैं।
कुछ मिलता है उनसे हमको, पर पूरा नहीं अघाते हैं॥
वैष्णवता का सजार बजाते भक्तों ने दी भक्ति-सुधा
कवि सच कहता अपने दिलकी, पर नहीं किसीसे मिटी द्विधा
सब अपना ताना तान गये, मजहब पन्थाई फैल गये।
मानवता एक न बन पाई, हम सपने देखे नये-नये॥
तब मार्क्स महान उदित होकर श्रममय जीवन को किये मुदित
उनका मानव-दर्शन लख कर श्रमिक, पूँजीपति हुये चकित।

इन आदि अन्त के तह से मानों जग का छूते हुये सतह—
आये श्री स्वामी सत्यभक्त सब से परिचित हो सभी तरह।
ये, बोल दिये ऐसा धावा दुनिया के इन दल्लालों पर:
श्री इनकी स्वार्थी-रुचि दलों पर, मसलों और सवालों पर।
ये, सबका सत्य-समन्वय कर व्यवहारिक हल लेकर आये,
तीर्थंकर, पैगम्बर, अवतारों की रूहों को ले धाये॥
वे रूहें इनमें बोल रहीं, ये उन रूहों के प्रतिनिधि हैं;
इनमें सब सन्त समाये हैं, सन्तता–सिद्धता की निधि हैं॥
ये, धर्म, नीति, विज्ञान, अर्थ औ, राजनीति का व्यूह तोड़—
अध्यात्म और भौतिकता की दुर्गुणता को देते मरोड़।
ये, कथित कथा-साहित्यों का सच जानें भण्डा रहे फोड़,
जो पक्षपात युत या अनर्थकर उनको देते हैं निचोड़।
ये, लेखक, वक्ता, व्यवहारिकता के ऐसे पूरक स्वरूप—
अपनी समता ये आप बने, ये परम पुरुष के भव्य रूप॥
ये, 'सत्यभक्त' हैं–पैगम्बरों, अवतारों का ढो रहे भार,
इन पर अनेक लीडर, रिफारमर होते रहते हैं निसार।
ये, कालकूट पीकर बिखेरते हैं अपना उन्मुक्त हास,
ये, अपने ताण्डव-नर्तन में कालुष्यों का करते खग्रास।
इनने निज मोहकता, मादकता का जादू मारा मन पर—
जो शिलालेख बनता जाता–तनपर, जनपर, जग जीवनपर॥
इस विश्व लोक के दिव्य महात्मा पर कविवर यह न्योछावर;
जैसा न दिखाई पड़ा इसे खोजा-भाला अवनी, अम्बर!
युग-युग की बिगड़ी दुनिया में ये आग लगाने आये हैं,
यह सपनों का न, यथार्थ 'नया संसार' लिये छवि छाये हैं।
लेखनी सुकवि की बलि जाती इस युगालोक का गर्व लिये,
हम इसके साये में चलते हैं सकल स्वर्ग-अपवर्ग लिये।
यह इसी धरित्री पर लौकिक, नैसर्गिक स्वर्ग उतार रहा,
भगवती अहिंसा, सत्येश्वर के मन्दिर को शृङ्गार रहा।

जो भाया हम उस पर भले जा रहे हैं।
उसी मार्ग पर हम चले जा रहे हैं ॥२॥

हैं जितने महात्मा, हमें गर्व उनपर। लिये हमने उनसे अमृत-बूँद भर-भर।
कि जिनसे दिमाग और दिल है मुअत्तर। हमारे लिये वे सभी हैं सिकन्दर॥
इसी से उन्हीं में पले जा रहे हैं।
उसी मार्ग पर हम चले जा रहे हैं ॥३॥

सभी का है जल्वा हमारे दिलों में। न भूलेंगे उनको किन्हीं महफिलों में।
न हम उन पढ़ों में, न उन जाहिलों में। बने भक्त जो, किन्तु हैं काहिलोंमें॥
अकर्मण्यता को दले जा रहे हैं।
उसी मार्ग पर हम चले जा रहे हैं ॥४॥

इधर सामने एक मूरत बसी है। हमारी नजर उसमें जाकर फंसी है।
नहीं उर्वशी मेनका, वह ऋषी है। कि सत-ज्ञान ही उस ऋषीकी कृषी है॥
वह छलिया बना, हम छले जा रहे हैं।
उसी मार्ग पर हम चलें जा रहे हैं ॥५॥

वह है सत्य का सिर्फ पैगाम देता। न बदले में पाई-टका भेंट लेता॥
हृदय-गंग का वह भगीरथ प्रणेता। विभा दीप्तिका है प्रखर विश्व-नेता॥
हृदय-स्वामि जो पग हले जा रहे हैं।
उसी मार्ग पर हम चले जा रहे हैं ॥६॥

२७-तुम !

तुम युग की धारा मोड़ चलो, बाधाओं के सिर तोड़ चलो।
जग के मग जीवन जोड़ चलो, तुम पापोंके घट फोड़ चलो॥
तुम से कविवर की आश यही ॥ १ ॥

तुम छुआछूत का भूत भगा, दो सब में प्रेम पवित्र जगा,
यह जग जो जाता रहा ठगा, तुम दो इसको कर्त्तव्य लगा,
कहता अन्तर का श्वास यही ॥ २ ॥

यह है असार संसार नहीं, प्रत्युत ससार-संसार यही।
है कर्म-क्षेत्र आगार यही, सब जानें इसको सही-सही ॥
यह सत्य बताने तुम आये ॥ ३ ॥

नारी का नर द्वारा मर्दन, बल से निबलों का उत्पीड़न ।
मानव का मानव से शोषण, हो नहीं स्वत्व का अवरोहण ॥
सब कलुष मिटाने तुम आये ॥ ४ ॥

जग को जितना तुम जान सके, कोई उस तह तक जा न सके ।
इसलिये तत्त्व यह पा न सके, तुम-सा स्पन्दन उपजा न सके ॥
सत्येश्वर के संवाहक तुम ॥ ५ ॥

तेरी जग से पहिचान घनी, पर दुनिया है अनजान बनी ।
समझेगी एक दिवस अवनी, तुम हो मनुजत्व–पिता जननी ॥
जग-जीवन के अभिभावक तुम ॥ ६ ॥

तुम में वर-बुद्ध विराग भरा, शुचि-महावीर अनुराग भरा ।
हजरत ईसा का त्याग भरा, ऋषिवर्य मार्क्स का आग भरा ॥
साधुता, मनुजता के उद्गम ॥ ७ ॥

तुम रुचिर 'नया संसार' लिये आये हो मधुमय प्यार लिये ।
जीवन का नव-उपहार लिये, दृगजल का पारावार लिये ॥
तुम महा-मिलन के हो सङ्गम ॥ ८ ॥

२८ सत्यभक्तावतार

जग के असत्यमें हो सत्य का प्रकाशपुञ्ज, सत्येश्वर द्वारा सत्यदूत वह आया है ।
माता अहिंसाने नग्न हिंसाको मिटाने हेतु, गदाधारिणी हो निजचरको पठाया है ।
राजनैतिकोंकी धार्मिकोंकी तार्किकोंकी रूहें, तथा अवतारोंकी वो आत्मशक्ति पाया है ।
म्रियमाण जो जहान प्राण भरनेके लिये, सत्यने ही सत्यभक्तरूप दिखलाया है ।

२९ सत्यावतरण !

"वैदिक हिंसा हिंसा न भवति"–का नाद सुनाई देता था,
नर-मेध और गोमेध आदि का दृश्य दिखाई देता था ।
दानवता का था नग्न-नृत्य, मानवता की क्या बात भला ?
ऋषि-मुनियों तक के कृत्यों में थी प्रवञ्चना की पूर्ण कला !
था विप्रवाद का जोर, जो रहा कुरूढ़ियों का उन्मादक—
सामन्तों, साम्राज्यों का पोषक, नृशंसता का उद्दालक ॥

जो "सत्याश्रम"-'वर्धा से—आ-जग की सुधि लेता है।
मन, वचन, कर्मसे, तन से–व्यवहारिक हल देता है ॥२१॥

उसने मेरा दिल खींचा- -मैंने उसका दिल खींचा!
जिससे झुक सत्य-मिशन पर–उसको करता हूं सींचा ॥
बस, यहीं हमारा-उसका—चल रहा दिव्य-नाता है।
वह मेरा पूज्य सखा है, भ्राता है, सच्चा है।२२॥

जग-जन हितार्थ वह सब के–ही लिये मशाल बना है।
भू की काया पलटाने—को वह भू-चाल बना है॥
है नमन हमारा उसको –जो नव-युग का स्रष्टा है।
मानस का अतुलित निधि है–जो सत्य-तथ्य द्रष्टा है ॥२३॥

उद्धारक बन जननी का—जो आगे बढता जाता।
वह 'सत्य-दूत', सत्येश्वर—का भेजा हुआ, दिखाता ॥
'सत्येश्वर' का 'सन्देशा– ले-सत्यलोक से आता।
नव-विश्वालोक-प्रवर्तक वह 'सत्यभक्त' कहलाता ॥२४॥

जो मर्म्म-बीज-उद्दालक—- उद्धार-मार्ग-सर्वेक्षक।
जो बुरी नीति-व्यवहारों–का है फणि-मणिधर तक्षक ॥
कवि के इन छन्द निबन्धों—में वह फुंकार रहा है।
डंके की इन चोटों पर–युगसत्य पुकार रहा है ॥ २५ ॥

२५—'सत्य' के 'भक्त' के 'भक्त'!

भले टूट जायें, मुड़ेंगे नहीं हम। चले लक्ष्य पर हैं, रुकेंगे नहीं हम।
'मिशन' 'सत्य' का ही है प्यारा हमारा। हृदयज्ञान ही है सहारा हमारा ॥
लुभानेसे क्या हम, कभी लोभ सकते? न मनको गिरानेका ला क्षोभ सकते।
डरानेसे भी क्या कभी डर मरेंगे? न कीटाणु-नर हमको सर सकेंगे ॥ १॥
जो हैं हम, न उससे कोई कम करेगा। प्रगति को भला कौन कब नम करेगा।
यहीं है नो गरमी, जो सरदी हजम कर। पचाने का माद्दा है रखनी भयंकर ॥
कि ज्वालामुखी रात-दिन जल रही है। नमी औ, तरी हाथ खुद मल रही है।
श्री स्वामी-सा रहबर मिला अंशुमाली। हैं हम भी उसी सूर्य की एक लाली ॥

जो छेड़ेगा हमको स्वयं जायगा जल। गलाने जो आयेगा खुद जायगा गल।
जहालत का परदा जो है फाड़ दूंगा। बुराई फना हो वह चिग्घाड़ दूंगा॥
हृदय-सत्य-मन्दिर हमारा बना है। न इसमें कोई भी कलुष-वासना है।
मनुजता की ही मूर्त्तियाँ-इस जगह हैं। हर एक खूबियाँ सबकी अपनी तरह हैं॥
मगर सत्य का भक्त-स्वामी निराला। पिला जो रहा है मधुर प्रेम-प्याला।
मिठास इसकी इतनी हमें लग रही है। हृदय की दबी भावना जग रही है॥
हुआ मेल इससे, न ऐसा किसीसे! हुये 'सत्य' के 'भक्त' के भक्त इससे।
निगाहें हमारी उसी पर लगी हैं। ये आँखें उसी युग-यती पर ठगी हैं॥
जिये वह हो जब तक समुन्दरमें पानी। जिये जब तलक गङ्गमें हो रवानी।
जिये जब तलक नील की नील-धारा। जिये जब तलक वोल्गा का किनारा॥
जिये आल्प्स जबतक जमीं पर अड़ा हो। जिये जब तलक सरगमाथा खड़ा हो।
जिये सूर्य औ चन्द्र जबतक चमकते। जिये जब तलक-सब न उसको समझते॥
अगर यह असम्भव हो, सम्भव यही हो? कि जबतक नहीं चिर नई यह मही हो।
तभी तक जिये विश्व का नव-प्रवर्तक। न इससे बड़ी कामना और हर्षक॥
यहीं भावना भरते-भरते चिरन्तन। करेंगे नवल विश्व का सब सुदर्शन।
जगत के लिये धन्य वह काल होगा। गलेमें सु-स्वामी के जयमाल होगा॥
वह जयमाल पहने जगत में हटेगा। तो आलम मुसल्लम यहीं स्वर रटेगा।
वह स्वामी, जगत जौहरी, वह कहां है? कहेगी धरा वह वहाँ है, वहाँ है॥
जहाँ तक कोई मर्त्य पहुँचा नहीं था। गया इस तरह कोई ऊँचा नहीं था।
उसी उच्चता पर वह बैठा है जाकर। यों मानेगा जग उसको हियमें बिठा कर॥

२६—चले जा रहे हैं!

चले जिस दिशा राम औ श्याम प्यारे। चले जिस दिशा बुद्ध ईसा हमारे।
हां, कन्फ्यूशियस' और 'जरथुस्त' न्यारे। सदुद्देश्यको निज लगाये किनारे॥
स्वपरिचित दिशा उस ढल जारहे हैं।
उसी मार्ग पर हम चले जा रहे हैं॥१॥
अमर मार्क्स हाँ हाँ चले जिस डगरमे। जिन्दगी वह क्यों इस सुकविकी नजरमें
वह सीधे ही खींचेगी अपने असरमे। न ओझल रहेगी किसी भी बशर मे॥

था बना मोक्ष अब तक अदृश्य, वह दृश्य रूप दिखलाता है,
यह 'क्या संसार दुःखमय है ?'– इसपर वह चोट लगाता है ।
इसकी भृकुटी पर नाच रहे मतवाद सभी थर थर कम्पित
सत्कवि क्या वर्णन करे ? स्वयं, कविता देवी ही हैं स्मम्मित ।।

३० विश्व-झण्डा-गान !

ज्योतित सूर्य चन्द्र उजियारा, हरता है जग का अँधियारा ।
जो है मनुज मात्र का प्यारा, है प्रकाश पथ का आधारा ।।
'सत्यामृत' यह बरसाता है, नस-नस में रस झर लें ।
इस ध्वज को पाथेय बना—भव-सागर पार उतर लें ।।
सब के हित है सूरज-चन्दा, ज्योति-दान उनका है धन्दा ।
वे न किसी को करते गन्दा; मान रहा हर प्रभु का बन्दा ।।
इसीलिये सब का यह झण्डा—इसमे भ्रम-तम हर लें ।
जो कुछ द्विधा दुरभि हो दिल में—उसके पंख कतरलें ।।
है सारा जग एक इकाई, सभी परस्पर भाई-भाई ।
फिर क्यों दुर्मति यह दुचिताई, दुनिया को है नरक बनाई ?
इस झण्डे का तत्त्व ग्रहण कर—वह उन्मुक्त डगर लें ।
भुक्ति-मुक्ति इस जीवन में ही—अपना रूप निखर लें ।।
यह झण्डा है देश-देश का, द्वीप-द्वीप का उपनिवेश का ।
नाशक रुज-अज्ञान-क्लेश का, कलियुग में सतयुग प्रवेश का ।।
विश्व-गगन में इसे उड़ाने—का मन्सूबा भर लें ।
भूतल में ही स्वर्ग मात कर—दिव्य अमरता वर लें ।।
सागर-सागर में लहराये, पर्वत पर्वत यह फहराये ।
जगमग कर जग एक बनाये, ऋद्धि-सिद्धि पग-पग में छाये ।।
सत्यभक्ति से 'सत्यसमाज'—ध्वजा का वन्दन कर लें ।
प्रेम-भाव से नर नारी, इसका अभिनन्दन कर लें ।।

३१– स्वामी सत्यभक्त !

विश्व-व्यवहारिक विचारक यार स्वामी सत्यभक्त ।
कथन-सा करते सदा व्यवहार स्वामी सत्यभक्त ॥१॥

इस तरह का उच्च मानव भूमि पर आया न था ।
मानवी गुण के प्रबल आगार स्वामी सत्यभक्त ॥२॥

लोक से हटकर कभी बन पायगा परलोक क्या ?
अतः लोकोद्धार की गुञ्जार स्वामी सत्यभक्त ॥३॥

विगत श्रद्धा रूढ़ियों के नाम पर जो है पतन ।
इस पतन से मुक्ति के उपचार स्वामी सत्यभक्त ॥४॥

धर्म ईश्वर के तले जो चल रहीं शैतानियाँ ।
इन सभी शैतानियों पर मार स्वामी सत्यभक्त ॥५॥

पल रहीं परलोक के परदे में जो बदमाशियाँ ।
बदमाशियों के दलनको हथियार स्वामी सत्यभक्त ॥६॥

शादियों के नाम पर बरबादियाँ जो हो रहीं ।
काटने को फन्द वह औजार स्वामी सत्यभक्त ॥७॥

वर्ण नाना जातियों के भेद सारे दूरकर ।
कर रहे मनुजत्व-एकाकार स्वामी सत्यभक्त ॥ ८ ॥

पुरुष-नारी भेद का वैषम्य जो है चल रहा ।
खोलते उस ग्रन्थि का ही द्वार स्वामी सत्यभक्त ॥ ९ ॥

राजनीतिक पार्टियाँ जो कर रही दल्लालियाँ ।
कर समन्वय चाहते उद्धार स्वामी सत्यभक्त ॥ १० ॥

जो मनुजता घोर आवृत है दनुजता से हुई ।
काटते वह बन्ध कारागार स्वामी सत्यभक्त ॥ ११ ॥

स्वर्ग का साधन सँजोये नरक दुनिया होगई ।
कर रहे अक्षत 'नया संसार' स्वामी सत्यभक्त ॥१२॥

नित्य की सारी समस्यायें सभी सुलझा रहे ।
सत्पना के सरलतम अवतार स्वामी सत्यभक्त ॥१३॥

३२- वह संसार

नहीं सुहाता है युग कवि को सपनों का संसार ।
केवल चाहरहा है मानस अपनों का संसार ॥ १ ॥
वह संसार कि जिसमें भूखा-प्यासा नहीं दिखाये ।
वह संसार कि फुटपाथों पर रात नहीं कटजाये ॥ २ ॥
वह संसार कि धर्म लड़ाने के ही रहें न साधन ।
वह संसार कि स्वार्थों हित होवें न ईश्वराराधन ॥ ३ ॥
वह संसार कि मठ, मसजिद, गिरजों का मिटे अँधेरा ।
वह संसार कि तम विदारते आये नया सवेरा ॥ ४ ॥
वह संसार कि धार्मिक बन कर हो न धर्मका शोषण ।
वह संसार कि मुफ्तखोरका होवे कहीं न पोषण ॥ ५ ॥
वह संसार कि 'धर्म' नामसे हो न 'अधर्म' निरन्तर ।
वह संसार कि हो न तिरस्कृत सत्य और शिवसुन्दर ॥ ६
वह संसार कि मानवता का होवे कहीं न मर्दन ।
वह संसार न जिसमें दीखे आँसू, पीड़ा, क्रन्दन ॥ ७ ॥
वह संसार कि मानव से मानव न घृणा दिखलाये ।
वह संसार कि वर्ण-भेद के मनुज न धक्के खाये ॥ ८ ॥
वह संसार कि द्वेष, दम्भ, हिंसा का रहे न नर्तन ।
वह संसार कि अत्याचारों के रहजायँ नहीं फन ॥ ९ ॥
वह संसार कि सदाचार की हो न कहीं बटमारी ।
वह संसार कि लड़ने की न रहे धार्मिक-बीमारी ॥ १० ॥
वह संसार कि 'कृष्ण' 'मुहम्मद' से न कहीं लड़ पायें ।
वह संसार कि 'मार्क्स' और 'ईसा' न कहीं टकरायें ॥
वह संसार कि नहीं 'कैपिटल' 'गीता' करें लड़ाई ।
वह संसार कि 'वेद' 'बाइबिल' में न रहे दुचिताई ॥
वह संसार कि साम्प्रदायिकता की हो नहीं निशानी ।
वह संसार कि पूँजिवादिताकी हो विगत कहानी ॥ १३

वह संसार कि 'शोषक'–'शोषित' शब्द नहीं लख पायें।
वह संसार कि सामन्ती अवशेष न सम्मुख आयें ॥१४॥
वह संसार कि न्याय न ठुकराये अन्यायों द्वारा।
वह संसार कि बहे जगतमें 'सत्यामृत' की धारा १५
वह संसार की टुकड़ों को मानव न फिरे बेचारा।
वह संसार कि मानवको हो मानवत्व ही प्यारा ॥१६॥
वह संसार कि सारे जग-जन एक नस्ल कहलायें।
मनु या आदम की सन्तानें मानव-गोत्र बतायें ॥१७॥
वह संसार कि एक सभी की होवे 'मानव भाषा'।
वह संसार कि जिससे पूरित हो सबकी अभिलाषा ॥१८
वह संसार कि बने 'सत्य मन्दिर' हृद्धाम हमारा।
वह संसार कि आत्म-निरीक्षण ही हो जिसका गारा ॥१९
वह संसार कि निखिल मनुजताका 'सङ्गम' लहराये।
वह संसार कि 'सूर्य-चन्द्र' बन मानव-ध्वज फहराये ॥
वह संसार कि हो विवेक ही उर-अन्तर-उद्बोधक।
वह संसार कि हों सब ही निज कृत्योंके परिशोधक ॥२१
वह संसार कि जहाँ 'सत्य' हो देव, 'अहिंसा' देवी।
वह संसार कि बनें सभी 'सत्साहित्यों' के सेवी ॥२२
वह संसार कि स्वर्ग, मोक्ष सब यहीं विराजे सारा।
वह संसार कि सौख्य, शान्ति हो जिसका कूल किनारा॥
वह संसार कि 'सत्यभक्त' ही दीखे हर नर-नारी।
वह संसार कि सभी समझ लें अपनेको अवतारी ॥२४
वह संसार कि जीवन से जीवन मिलकर सम-रस हो।
वह संसार कि मानव केवल मानवताके वश हो ॥२५॥
वह संसार कि हो जिसमें बस 'सत्यसमाज' झलकता।
वह संसार कि घर-घर 'सत्याश्रम' हो दिव्य दमकता ॥
वह संसार कि ऋद्धि-सिद्धियाँ जहां बनी हों चेरी।
धर्म और विज्ञान मिले हों, फिर उसमें क्या देरी ॥२७
वह सम्मुख केवल्य 'नया संसार' दीखता हमको।
वह तूफान बना आता फाड़ता गहन-घन-तम को ॥२८॥

३३- यह शायर

बढ़े हैं जो चरण आगे, न हट सकते हटाने से।
हिमालय डिग चले पर यह, न डिग सकते डिगानेसे ॥१॥
जो युग का शीर्ष पैगम्बर नया पैगाम देता है।
सुनेंगे कान ये मेरे, न फिर सकते फिराने से ॥ २ ॥
हृदय फौलाद का गोला, इसे तुम क्या झुकाओगे।
भले विस्फोट हो उससे, न झुक सकता झुकानेसे ॥३॥
अगर विस्फोट होगा तो-भड़क उठेंगी ज्वालायें।
न रुक सकतीं बिना स्वार्थान्धता को वे जलाने से ॥४॥
परम मम धाम सत्याश्रम, युगात्मा सत्य स्वामी जी।
न रोकेगी कोई ताक़त उन्हें ऊँचा उठाने से ॥ ५ ॥
न गाँधीवाद सर्वोदय न तकली और चरखे से।
प्रभावित हो सकेंगे हम किसी के बरगलाने से ॥ ६ ॥
बने जो साधु सरकारी, न उनका कुछ भरोसा है।
रहेंगे हम अलग ही दान के चक्कर में आने से ॥ ७ ॥
हमें है बस भरोसा एक अपने सत्य-बल का ही।
हम बाज आये ठगीसे इस, औ इसके गीत गानेसे ॥८॥
हमें खुद समझने या बूझने की अक्ल अपने में।
तो यह शायर फँसेगा कब खुदाके भी फँसाने से ॥९॥

३४—दिव्ययति

उस दिव्य यती का, कर्मव्रतीका स्वागत बारम्बार यहाँ।
प्राणों का प्राण जगत-जनतापर उसका ऋण हरबार यहाँ ॥
जो सत्यभक्त है उसके सम्मुख मस्तक नत हरदम मेरा।
उसके सिद्धान्तोंपर चलना होवे जीवनका क्रम मेरा ॥२॥
जो अपनी सकल क्रियाओं से नूतन संसार लिये बैठा।
हो स्वर्ग या कि अपवर्ग, सभी करतलगत किये हिये बैठा ॥

जो मन्त्र सभी को देता है अपने को मुक्त बनाने का ।
यह काम रहा हम सब लोगोंका उसपर कदम बढ़ानेका ॥४
फिर कोई ऐसा विघ्न नहीं, जो प्रगति-पन्थ को रोक सके ।
दुर्दैव शान्त होजायेगा, फिर कौन हमें जो टोक सके ॥५॥
उस मंजिल पर बढ़ते ही जाना जीवन सफल बनाना है ।
हर भाई भाई को दुनियामें आकर कुछ कर जाना है ॥६॥
हम सब का करते जाना ही संसार नया कर छोड़ेगा ।
उसको दोजख ही वहाँ-यहाँ जो इससे मुखको मोड़ेगा ॥७
दुनिया के कामों को करते दुनिया को जन्नत करना है ।
जो कुरूढ़ियाँ व्याधियाँ बनीं उनको जल्दी से हरना है ॥८
इस जग-जीवन का पाप ताप-हर सत्यभक्त-सन्देश यही ।
देता है काल पुरुष मानव मण्डलको नित निर्देश यही ॥९॥
जो ज्योतिर्मय बन अखिल सृष्टिको करता व्यापक दृष्टि-प्रदान ।
वह लोक तमारि-प्रकाशपुञ्ज-शुचि-सत्य-दूत अवधूत महान ॥

३५—अभिनव शिविर

यह विश्व एक, ये मनुज एक मनु की सन्तान कहाया है ।
या आदम की औलाद आदमी ऐसा भी सुन पाया है ॥
कुछ भी हो, इस विवाद से मैंने निज को दूर हटाया है ।
पर इतना निश्चित मातृप्रकृतिने मनुज जाति उपजाया है ॥
इस मनुज-योनि मे सर्वश्रेष्ठ जो हटे कलुष जो छाया है !
सत्येश्वर का निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है ॥ १ ॥
चाहे सन्तति यह मनुकी हो, आदमकी हो, पर भेद नहीं ।
यह तय है जब सब एक नस्ल—तब होसकता है खेद नहीं ॥
पर लड़ते मजहब-धर्म परस्पर होता उरमें छेद नहीं ।
लो खून,—कुरान न कहता है, कहता है ऐसा वेद नहीं ॥
फिर क्यों यह खूँरेजी, किस भ्रममें मानव-मन बौराया है !
सत्येश्वर का निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है ॥ २ ॥

'यह बड़े भाग मानुष तन पावा' इसपर ध्यान धरें कुछ तो।
शुचि सुरदुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा' का अभिमान करें कुछ तो॥
हम बनें योनियों में विराट—ऐसा विज्ञान भरें कुछ तो।
नादानी खुलकर खेल रही—अपना अज्ञान हरें कुछ तो॥
मानव हो दानव बने हुए क्यों?—करना उसे सफाया है!
सत्येश्वर का निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है॥ ३॥
क्राइस्ट, कृष्ण को, ईसाको, हम अभी लड़ाते जाते हैं।
क्यों मन्दिर, मसजिद, गिरजा आपसमें टकराते जाते हैं?
लड़ते हैं राम-रहीम मुल्क में शीश कटाते जाते हैं।
लड़ रहे जहां गीता-कुरान सद्धर्म लजाते जाते हैं॥
सब करें समन्वय निज रूपों का मूल तत्व दिखलाया है।
सत्येश्वर का निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है॥ ४॥
पशु तक नेचरपर चलते हैं हो दनुज मनुज बदनाम हुआ।
यह कृष्ण हुआ न करीम हुआ, न रहीम हुआ नहि राम हुआ॥
धर्मों की चिल्लाहट जबान पर किन्तु नरकका काम हुआ।
मानों मनुष्य तन पाना हाय! हराम हुआ, निष्काम हुआ॥
सब हों मनुष्य विज्ञान ज्ञानका खाका खिंचा खिंचाया है।
सत्येश्वर का निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है॥ ५॥
यह शिक्षण-शिविर विराट विश्व का ज्ञान-यज्ञ होने जाता।
सच जानें वह साधुता, मनुजता का सुबीज बोने जाता॥
जो लगी हुई अज्ञता, अन्धता उसको वह खोने जाता।
जो जन-जीवन में सनी कलुषता, कलुष सभी धोने जाता॥
हों साधु सुधी, नेतृत्व करें वे जगका, दिन नियराया है।
सत्येश्वर का निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है॥ ६॥
अब जग-मानवता एक बने—मानव की भाषा एक बने।
कर्तव्यों के उन्नयन हेतु सबकी अभिलाषा एक बने॥
हो रंग-ढंग में बाह्यान्तर—पर अन्तश्वासा एक बने।
हो चूर्ण दुराशा नष्ट भ्रम, सम्पूर्ण शुभाशा एक बने॥

यह जीवन-जगत-स्वर्गमय हो—स्वामीजी ने बतलाया है।
सत्येश्वर का निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है ॥ ७ ॥
स्वामीजी के इस शिक्षण में वह विद्या हम सब पायेंगे।
बहु विधि बहुज्ञता होवेगी, ज्ञानी बन लाभ उठायेंगे ॥
जो युनिवर्सिटियों औ कालेजों में भी नहीं जचायेंगे।
वे अनायास ही इसमें आकर परम तृप्त हो जायेंगे ॥
इस हेतु दिव्य साकेत क्षेत्रमें अभिनव शिविर चलाया है।
सत्येश्वरका निरपेक्ष दूत सन्देश सुनाने आया है ॥ ८ ॥

३६ निशाना बना !

किया जिन्दगी में विविध पाठ—पूजा, न पाया किसी से कहीं तत्व दूजा।
जो करते ही आये नमाज और रोजा, उन्होंने भी क्या दूसरा तत्व खोजा !
मनुजता का अब आशियाना बना मैं ! तुम्हारी नजरका निशाना बना मैं !!
है रघुवीर यदुवीर से भी मुहब्बत, तथागत—महावीर से भी मुहब्बत !
मुहम्मद की तासीर से भी मुहब्बत, औ ईसा की तदबीरसे भी मुहब्बत !
हूं गुणग्राहिता का खजाना बना मैं ! तुम्हारी नजर का निशाना बना मैं !!
मैं करता मुहब्बत हूं कन्फ्यूसियसका, मैं करता मुहब्बत हूं कार्ल मारकसका
नहीं मैं मजहबी तअस्सुब के बस का, हूं अपने तजर्बे का अपने कशिसका !
समन्वय का ताना औ बाना बना मैं ! तुम्हारी नजरका निशाना बना मैं !!
सभी धर्म की जो सचाई है मेरी, है जो धार्मिकों की बुराई न मेरी !
समन्वय की खूबी सफाई है मेरी, जो निरपेक्ष सबकी भलाई वो मेरी !
विमल प्रेम का ही तराना बना मैं ! तुम्हारी नजरका निशाना बना मैं !!
न मन्दिरमें मसजिदमें गिरजामें अन्तर, न जेरूशलम—काबा—काशीमें अन्तर
नहीं कृष्ण—ईसा—मुहम्मदमें अन्तर, अगर है तो वह बाह्य—रूपोंमें अन्तर।
हूं पैगामे-हकका फिसाना बना मैं ! तुम्हारी नजर का निशाना बना मैं !!
मनों के ही अन्दर से अन्तर दिखाता, मजहबी-तअस्सुब ही भ्रमभेद लाता !
न निष्पक्षता से हृदय सोच पाता, जो गहरा हिये का उसे भी गंवाता।
नहीं धर्म की ओट पाकर मना मैं ! तुम्हारी नजर का निशाना बना मैं !!

मेरे दिल में वेदो कुराँ की है इज्जत, पिटक बाइबिलकी है वैसी ही इज्जत !
हर एक धर्म औ धर्म ग्रन्थों की इज्जत, है हर मुल्कके सत्य-पंथोंकी इज्जत !
हूं धर्मों का सब आबोदाना बना मैं ! तुम्हारी नजरका निशाना बना मैं !!
बसा मेरे दिल में सुस्वामी हमारा, है मनमें सुवर सत्यमन्दिर हमारा !
जँचा मेरी पत्नी को भी पथ हमारा, है पुत्री ने वैकुण्ठ में जा प्रचारा !
यहाँ से वहां तक सुगति पै ठना मैं ! तुम्हारी नजर का निशाना बना मैं !!
विजय ने न सूरत भुलाई तुम्हारी, वहां ऐसी मूरत बनाई तुम्हारी !
कि जिसमें कला सारी अद्भुत तुम्हारी, किये स्वर्गमें भी है शुहरत तुम्हारी !
न जानो कोई कर रहा कल्पना मैं ! तुम्हारी नजर का निशाना बना मैं !!
बिना देखे तुम पै जो था ख्याल अटका, जो देखा अवधमें रहा ही न खटका
पिताजीसे पाता रहा ज्ञान टटका, मिले तुम तो सद्गुरु मिला दिव्य घटका !
हो तुम कल्पतरु, एक उसका तना मैं ! तुम्हारी नजरका निशाना बना मैं !!
असह ठोकरें खा सयाना हूं अब तो, तुम्हार मिशनका दिवाना हूं अब तो !
सकल धर्म अपना ही जाना हूं अब तो, सही स्वर्ग-पथका ठिकाना हू अब तो !
मनुष्यत्व के बूँद से ही जना मैं ! तुम्हारी नजर का निशाना बना मैं !!
समुन्दर की लहरोंको तुम चीर जाओ, सुदूर आफ्रिकामें नया स्वर गुंजाओ !
अगम स्वर्गको ऋषि ! सुगम तुम बनाओ, किया जो न कोई उसे कर दिखाओ
सफल योगका स्वामी, तव आशना मैं ! तुम्हारी नजरका निशाना बना मैं !!

३७ बलिहार हुआ

युग-पुरुष ! एक करदे जग जन-गण मन तुझ पर बलिहार हुआ ।
तू कर्म-प्रणेता, धर्म-निकेता मर्म-विजेता नेता है !
भगवती-अहिंसा के बलपर तू जगकी नैया खेता है !!
सत्येश्वर की झांकी दिखला तू मानवका श्रृङ्गार हुआ ।
युग पुरुष ! एक करदे जग-जन-गण मन तुझ पर बलिहार हुआ !! २ !!
उन्नत-उदात्त हिम-शैल-शिखर-सा अन्तस्तल तेरा सुन्दर !
जिससे निःसृत होरहे निरन्तर सत्य और शिवके निर्झर !!
मानवता बोल रही तुझमें मानव तुझमें साकार हुआ !
युग-पुरुष ! एक कर दे जग-जन-गण मन तुझ पर बलिहार हुआ !! ३ !!

'संगम' पैगम्बर विशेषांक जो निकला नया निराला है !
उनके आदर्श-विमर्श देख मन मधुप हुआ मतवाला है !
तू पथ-निर्देशक, पथिक मनुज हम 'तू-मैं'—एकाकार हुआ !
युगपुरुष ! एक करके जग-जन गण मन तुझ पर बलिहार हुआ !! ४ !!

३८—वरदान बने

सर्वोच्च, विशिष्ट, ममत्ववादका 'वर्धा' शुभ संस्थान बने,
शुचि 'सत्याश्रम' ही विश्व-केन्द्र बन केन्द्रीभूत निशान बने।
प्रिय 'सत्यभक्त-साहित्य' सलोना पढ़ जन-मन सज्ञान बने,
वह मानव का अभिमान बने मानवता का सामान बने।
फिर प्रगति-पंथ-सोपान बने जाग्रतका विशद वितान बने,
ऋषिराज ! आपका 'सत्यसमाज' नये युगका वरदान बने ॥ १॥

मृदु राम कृष्ण के जीवन का जग मंगलमय परिधान बने,
श्री महावीर, गौतम, ईसा का लोक चिरन्तन ध्यान बने।
बलराम, लक्ष्मण, भीष्म, द्रोण, अर्जुनका शर-संधान बने,
चाणिक्य अशोक कणाद कपिलका नीतिनिपुण विज्ञान बने।
गोरख, कबीर, चैतन्यदेव का मीरा का कलगान बने,
ऋषिराज ! आपका 'सत्यसमाज' नये युग का वरदान बने ॥ २॥

प्रतिभा प्रगल्भ श्री कार्लमार्क्स, लेनिनका मूल निदान बने,
स्तालिन, ट्राटस्की, गोर्की की, नेता सुभाषकी आन बने।
चितरंजन, तिलक लाजपतगुत, गांधी, रवीन्द्रका प्राण बने,
श्री दयानन्द, सुखदेव, राजगुरु, बिस्मिलका बलिदान बने।
श्री भगतसिंह अशफाकुल्ला, आजाद, खुदी, की शान बने,
ऋषिराज ! आपका 'सत्यसमाज' नये युगका वरदान बने ॥ ३॥

फैलाने के हित साम्य-तत्व यह शंकर का विष-पान बने,
नर में नारी, नारी में नर लाने का अनुसंधान बने।
अज्ञान, अन्धता हननहेतु यह सूर्य, चन्द्र द्युतिमान बने,
वैषम्य, दैन्य के दलन हेतु यह चक्र, त्रिशूल समान बने।

भगवान 'सत्य,' भगवती 'अहिंसा' की पूजाका त्राण बने,
ऋषिराज! आपका 'सत्यसमाज' नये युगका वरदान बने ॥४॥

आधुनिक मानवकी धर्मशास्त्र 'सत्यामृत' ग्रन्थ महान बने,
ईसाई, हिन्दू मुसलिमकी यह बाइबिल, वेद कुरान बने।
उस पार्थरूप भव भ्रम निवारने को गीता-आख्यान बने,
कालुष्य-कालिया-नाग नाथने कृष्णायुध गतिमान बने।
सुकरात, अरस्तू, टाल्सटाय, मंसूर अनल हक-तान बने,
ऋषिराज! आपका 'सत्यसमाज' नये युगका वरदान बने ॥५॥

यह नरक कूप-जग स्वर्ग रूप हो ऋद्धि-सिद्धि की खान बने,
नव-निधियाँ नर्तन करें यहाँ हर जनपद ललित लतान बने।
'शोषक,' 'शोषित'-संज्ञा न रहे जग निरतिवाद-उद्यान बने,
दीनता, मलिनता, निष्क्रियता, रुजताका कब्रिस्तान बने।
हो समन्वयात्मक धर्म एक 'नर की नरता ही' जान बने,
ऋषिराज! आपका 'सत्यसमाज' नये युगका वरदान बने ॥६॥

इस जीर्ण जगत के ध्वंस हेतु सीतापति-तीर-कमान बने,
ये रूढ़ि, वर्ग, साम्राज्यवाद-इनके हित एटम-बाण बने ॥
ये वर्ण-भेद, ये सम्प्रदाय, सामन्ती, पूँजी म्लान बने,
वैषम्य, असाम्य मिटाने को यह साम्यवाद-तूफान बने।
नव-विश्व हेतु यह उपादान हो और आप भगवान बने,
ऋषिराज! आपका 'सत्यसमाज' नये युगका वरदान बने ॥७॥

३९—किरणें

'वर्धा के' सत्याश्रम से जो ज्वलित होरही ज्योति प्रखर।
उसमें प्रतिबिम्बित हो उठते 'सत्य' और शिव सुन्दर स्वर ॥
'सत्यसमाज' उसी से उद्भासित हो नवप्रकाश लाया।
'सत्यसमाजी' बन्धु हो रहे आलोकित, तम विनसाया ॥
तृप्त विवेकी जन होते, भ्रम भाग रहे जो थे मन में।
'स्वामी सत्यभक्त' की किरणें फूट रहीं जीवन-घन में ॥१॥

४०—जय होवे !

जगती का यह करुण रुदन, यह अतुलित हाहाकार मिटे;
साम्राज्यी सामन्त-नीति का लगा हुआ दरबार मिटे ॥
शोषण, दोहन, उत्पीड़न का सारा बण्टाधार मिटे,
यह अन्धा, गोरखधन्धावाला बिगड़ा संसार मिटे ॥
कुप्रवृत्तियों, कुरूढ़ियों, कुविचारों का अब क्षय होवे !
सत्यभक्त की, सत्याश्रम की, सत्य मिशन की जय होवे ॥१॥

जग के पोंगापन्थों के थोथों का हो अवसान निकट;
धार्मिक, नैतिक, सामाजिक ढोंगोंका हो प्रस्थान निकट ॥
धर्म नाम पर जो अधर्म, उनका हो महाप्रयाण निकट,
दुर्जनता बर्बरता के मिटने का हो सामान निकट ॥
इस निदान में बुद्धिवादियों को न क्वचित् संशय होवे !
सत्यभक्त की, सत्याश्रम की, सत्य मिशन की जय होवे ॥२॥

अन्ध ज्ञान शैतान बना कर जग का नाश किये जाते ।
'युग-स्वामी' गिन-गिन उन पापों का उपहास किये जाते ॥
व्यवहारिक लेखों, ग्रन्थों से सत्य-प्रकाश किये जाते ।
निज आचार, विचारों से मानवी-विकाश किये जाते ॥
समाधान पा रहीं समस्याएँ, जनता मुदमय होवे ।
सत्यभक्त की, सत्याश्रम की, सत्य मिशन की जय होवे ॥३॥

सभी विकृतियाँ नष्ट-भ्रष्ट हों, संस्कृति एक महान बने ।
उगे 'नया संसार' अनोखा, एक तमाम जहान बने ॥
जीवन में न अभाव कहीं हो, सुखी शान्त इन्सान बने ।
नरक बना जग स्वर्गोपम हो, जग-हित सभी समान बने ॥
स्वार्थ, दम्भ, छल द्वेष जला कर सब सबसे निर्भय होवे ।
सत्यभक्त की, सत्याश्रम की, सत्य मिशन की जय होवे ॥४॥

हो निष्पक्ष बुद्धि गुणग्राही न्यायपूर्ण व्यवहार लखे ।
सद्विवेक से च्युत होकर कटुता न कहीं तकरार लखे ॥

बीते युग की बात बने ये, नवजीवन साकार लखे।
मानव मन के सौख्य सदन में केवल प्रांज्वल प्यार लखे॥
रोग, शोक, भव-भ्रान्ति भगे, नर ज्ञानी मृत्युञ्जय होवे।
सत्यभक्त की, सत्याश्रम की, सत्य मिशन की जय होवे॥५॥
जग को मिथ्या कहने का मिथ्यावादी विश्वास हटे।
मुख्य कर्म से हट निष्क्रिय बनने का विफल प्रयास हटे॥
जीवन के मग से भग चरने खाने का आयास हटे।
बने 'चार मों ग्रास'-मुफ्तखोरी का यह अभ्यास हटे॥
जग-कर्तव्य-सुपालन कर जीवन में स्वर्गोदय होवे।
सत्यभक्त की, सत्याश्रम की, सत्य मिशन की जय होवे॥६॥

४१- पचतत्वों द्वारा अभिनन्दन

कहा वायु ने—"प्रगतिवाद का ऐसा झंझावात—
देखा जीवन में न कभी मैं ऐसा मर-निष्णात!"
मुक्त गगन ने कहा- खुला इस तरह जीवनादर्श—
निज साये में कहीं न पाया यह सार्वुत्व-विमर्श!
कहा अग्नि ने- इस प्रकार तत्वों का स्वयं प्रकाश—
कोई अब तक दे न सका, जो करे अन्धता-नाश!
जल ने कहा—यथार्थ ज्ञान का, झरता सुखद फुहार—
बनकर ऐसा सन्त न आया लिये 'नया संसार'!
पृथ्वी माता आगे बढ़कर बोली अन्तिम बैन—
सत्यभक्त, दोनों गोलार्द्धों-के हैं सुन्दर नैन!

४२- स्वामीजी की जयन्ती

(सत्यसप्तर्मा) समारोह के उपलक्ष्य में

मानव-संस्कृति एक, न खंडित होने पाये-
मानवता न कहीं भूलुंठित होने पाये।
इसीलिये ही 'सत्यसमाज' यहां पर आया.
सत्येश्वर ने 'सत्यभक्त' को यहां पठाया!

अन्तर का सत्यादेश हो, सत्यभक्त-सन्देश है !
पैगम्बर उनको मानता, जो जानता विशेष है ॥ १ ॥

शरच्चन्द्र बनकर वह चमकी सत्य पताका—
सत्यभक्त-सा ज्योतिर्मय आया वसुधा का !
शुक्लसहर्मा कार्तिक को वह सूर्यचन्द्र नव--
तम हरने, ज्योतित करने, रस भरनेको भव—

है आया विभुका दूत बन जनके बन्धन जोड़ता—
जो उसे तोड़ते आरहे, उनके भ्रम-घट फोड़ता ॥ २ ॥

उसकी ही यह दिव्य जयन्ती मना रहे हम,
जगके ही अनुकूल स्वर्ग को बना रहे हम !
है पचपनवीं आज जयन्ती हर्ष हमें है—
किन्तु मास, दिन गिनने का न विमर्ष हमें है !

चौपन वर्षोंकी साधना, बनी हमारा साध्य है !
उसपर ही अपना ध्यान है, एक वही आराध्य है ॥३॥

वर्ष, महीने, दिन गिनने में स्वाद नहीं है,
जीवन को जाने बिन कुछ आह्लाद नहीं है !
महापुरुष को समय न परिसीमित कर सकता,
नहीं सरोवर में सागर का जल भर सकता !

हरदम घेरों को तोड़कर, बढ़ता पुरुष प्रचण्ड है !
उसके सिद्धांत विशाल हैं, जीवन अगम अखंड है ॥४॥

'सत्यभक्तजी' स्वयं उदाहरण-स्वरूप हैं,
उनके कार्य कलाप उन्हीं के तदनुरूप हैं !
यद्यपि दुनिया उन्हें न अब तक जान सकी है—
पर उनकी आत्मा दुनिया पहचान सकी है !

ऐसी पहचान न आज तक, किसी युगात्माकी हुई ।
जैसीकि अखंडानन्द इस नव्य महात्माकी हुई ॥ ५ ॥

कितनों ने जगको, असारतम ही दिखलाया,
कितनों ने इसको माया का फाँस बनाया !

कितनों ने इससे भगना ही अच्छा समझा,
उसको ही कैवल्य प्राप्ति का लच्छा समझा।
इस जग को दुखमय मानकर, कितने कहें कि है नरक,
उन होनेवालों में हुये एक यही ही आज तक ॥ ६ ॥

जिसने धरती नरक दुःखमय, कभी न मानी,
जिसने पृथ्वी-माता की गरिमा पहिचानी!
जिसने कहा कि—क्या परलोक, न लोक बना जब,
जिसने बतलाया जीने औ मरने का ढब!
जिसने कि खोलकर रखदिया जीवनका सब शास्त्र है।
मृत्युञ्जय बनने के लिये जिनका मन्त्र महास्त्र है ॥ ७ ॥

सत्य-मिशन यह सत्यसमाज उसी का फल है—
स्वामी सत्यभक्त की यह संस्था अविचल है।
मनुष्यत्व का यह समतल कर रहा धरातल,
है असत्य के धसके जाते पाँव तलातल!
यह सत्यसमाज महानतम, उदयाचलका पंथ है!
इसका दर्शन सबके लिये, सुविचारित सद्ग्रंथ है ॥ ८ ॥

सत्यसमाज—मनुष्यमात्र का श्रेष्ठ मिशन है—
जन्म और यौवन, जीवन का आकर्षण है!
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका ममत्व है,
लोक-कार्य संचालन में न कहीं घृणत्व है!
फिर इनमें कौन निकृष्ट है, किसका न्यून महत्व है!
सबका समत्व अधिकार है, बन्धु बन्धु सम सत्त्व है ॥ ९ ॥

दुनिया के हर देश विश्व के प्रान्त प्रान्त हैं,
विश्व मनुजता बिना सभी व्याकुल, अशान्त हैं!
क्यों न मनुजता एक बने, भाषा न एक हो!
क्यों न सभी में उदित एकता का विवेक हो!
मानवताकी बोली बने—एक, प्रकृति का मर्म यह।
हम सभी एक परिवार बन पावें प्राकृत धर्म यह ॥ १० ॥

भिन्न मजहबों के रहते भी शास्त्र एक हो,
पूजा, प्रेयर हो नमाज, आवाज एक हो !
वेद कुरान, पुरान और इंजील सभी हों—
पर ये लड़ने के अब साधन नहीं कभी हों !
मंदिर मसजिद हों सभी, गिरजोंकी हो प्रार्थना !
किंतु परस्पर ये बने, सबकी पूरक साधना ॥ ११ ॥

स्वामीजी इनको पूरा करने को आये,
जग के रग रग को जगमग करने को आये !
सत्यभक्त जो नाम, सत्य के अग्रदूत हैं !
किसी देश के ही न, विश्व के वह सपूत हैं,
जर्जरित-जगतको भस्मकर, नवल-धवल जगका उदय-
करना ही इनका लक्ष्य है, ये हैं सत्य स्वरूपमय ॥ १२ ॥

पैगम्बर श्री सत्यभक्त ने साधा इसको,
व्यवहारिक सुस्तर पर है आराधा इसको !
इनका सत्यसमाज इसी का ही साधन है
जिसमें मानव का व्यवहारिक आराधन है !
जो इसी लोक को स्वर्ग में, परिणत करने जारहा.
वह मिशन विश्वका सांस्कृतिक, सत्यसमाज कहा रहा १३

सत्याश्रम है नींव, सत्यमदिर कंगूरा—
सत्साहित्यों से जिसका प्राङ्गण है पूरा ।
सत्यामृत की धार जहां से पूर्ण प्रवाहित—
होकर करती मानवता संगम को विस्तृत !
जिसमें मानव सुस्नान कर, जीवनको करते सफल !
हर विषयोंका मधु पानकर बौद्धिकता पाते प्रबल ॥ १४ ॥

विविध विषय के ग्रन्थ उदित हो मुदित कर रहे,
स्वामीजी के व्यवहारिक-हल प्राण भर रहे !
धर्म, समाज, विवेक, विचार, सुवैज्ञानिकता,—
मानव-दर्शन की उनकी निष्पक्ष-प्रवणता !

जान डाल देते अहा उनके अनुसंधान हैं !
जो लिखते-कहते सभी बन जाते सोपान हैं ॥१५॥

राजनीतियाँ चुटकी पर नाचा करती हैं,
सत्यसमाज प्रवर्त्तक को बाँचा करती हैं !
जन-जन की आकुलता उन्हें न सोने देती,
मन-मन की पीड़ा निश्चिन्त न होने देती !
इसमें ही सत्य-सुधांशु की, किरणें वे फैला रहे !
भारत से सागर पार तक, सबमें तत्व मिला रहे ॥१६॥

पक्षपात को छोड़ इन्हें जो भी पहिचाने—
क्या मजाल जो इन्हें न अपना ही वह माने !
है जगमात्र-कुटुम्ब और ये सबके अपने,
सत्य सिद्ध होंगे अवश्य इनके सब सपने !
यह 'सत्यसमाज'–'सुमानवों' का ही दूजा नाम है !
यह लोक बने मानुष्यमय, यह ही इसका काम है ॥१७॥

इसी 'सत्य' की 'भक्ति' लिये ये 'सत्यभक्त' हैं,
इसी शक्ति को लेकर ये विश्वानुरक्त हैं !
यह संसार–'असार', 'नरक' की–'पदवी' छोड़े,
रहें न इसमें भागनेवाले लोग भगोड़े !
'प्रभुमय सब देखहिं जगत'–होवेगा चरितार्थ तब,
सत्य, तथ्य की ओर हो–समझेंगे कि, यथार्थ जब ॥१८॥

इसी हेतु हैं स्वामी जी, उनका समाज भी–
वरना हटने को हम सब तैयार आज भी !
पर जब तक न समाज इस तरह का बनजाता--
मानवता मंडित न विश्व जब सम्मुख आता !
तब तक सत्यसमाज की नींव न खुद सकती कहीं !
वह तो नव-निर्माण पर, खुद जायेगी आप ही ॥१९॥

आज जयंती पर यह प्रण लेकर जाना है—
हम मनुष्य हैं–मनुष्यता हित मर जाना है !

'पचपन वर्षों के स्वामी-की' यही समीक्षा,
यह ही उनका रूप, इन्हीं में सभी परीक्षा !
उस सद्विवेक के सामने, सत्कवि-हृदय निसार है !
शुचि सन्मुख के जग-रत्न पर, बार-बार बलिहार है ॥२०॥
उनका जीवन पन्नों पर क्या गिने गिनायें,
अब हृत्पट पर अंकित कर ही कुछ कर जायें !
यही जयन्ती है उनकी, वह चाह रहे हैं—
मानव तत्वों को प्रति-पल अवगाह रहे हैं !
हम उनके अभिनव रूप पर, नित-नव-वंदन धारते !
उनकी अनुपम गुणराशि पर, श्रद्धाभक्ति उचारते ॥२१॥
अजरामर वे बनें जगत नूतन करने को,
देते रहें सुधा-रस मङ्गल-घट भरने को !
उनका जीवन इस जगतीतल का जीवन है,
उसपर अर्पित तन का, मन का श्रद्धा कण है !
लेखनी अमर बलि जारही—लिखकर यह गाथा अमर !
यह काव्य निछावर हो रहा—न्योछावर हो रहे स्वर ॥२२॥

४३– शुभ जन्म-दिवस

आज देश के 'मध्यप्रदेशान्तर्गत' हुआ उजाला,
आज जिला 'सागर' ने अपना अद्भुत तेज सँभाला।
आज 'शाहपुर' कसबे ने उपजाया 'पुरुष निराला'
आज 'हिन्द' ने प्रकटाया नर 'सूर्य-चन्द्र' गुणवाला।
आज धरा ने 'पुत्रवती' हो पाया निज 'सर्वस' है,
आज विश्व के नव-पैगम्बर का शुभ जन्म-दिवस है ॥१॥
नभ का मुंह काला करनेको अमा निशा भेदन कर—
'मां' की कोख जुड़ाता निकला 'सत्य और शिव सुन्दर',
शान्त होगये 'पिता' और 'माता' के आकुल अन्तर,
'सन्तति' के स्वरूप में उनने जन्माया 'तीर्थंकर'!

स्वयं प्रकृति खिलखिला उठी, उमगा जीवनका रस है,
आज विश्व के नव-पैगम्बरका शुभ जन्म दिवस है ॥२॥

'नन्हूलाल' गरीब पिता ने विश्व-विभव-सुत पाया,
बालक का घर का सुनाम 'दरबारी लाल' धराया !
पर यह शिशु था 'सत्यदूत,' जो 'सत्यभक्त' कहलाया,
'सत्येश्वर' ने निज 'दरबारी' जग के हेतु पठाया !
चतुर्दिशा में व्याप रहा जिसका सर्वत्र सुयश है,
आज विश्वके नव-पैगम्बरका शुभ जन्म-दिवस है ॥३॥

'स्वामी सत्यभक्त' के ढिग वे सब नक्षत्र उदित हैं—
सारे अवतारों के रस छन करके एकत्रित हैं !
राम श्याम गौतम ईसा औ महावीर चित्रित हैं;
कन्फ्यूसियस मार्क्स मक्का के आप्त सभी अंकित हैं !
बना 'सत्यमन्दिर' धर्मालय समन्वयी तरकस है;
आज विश्व के नव-पैगम्बरका शुभ जन्म-दिवस है ॥४॥

सब धर्मों का ध्येय-मर्म्म सद्धर्म बताने वाला—
सब कर्मों का ज्येय मर्म्म सत्कर्म दिखाने वाला—
सत्याश्रम वर्धा का सबमें सुख उपजाने वाला,
बना हुआ है विश्व-बीच भव शान्ति दिलाने वाला।
'सत्यभक्त साहित्य' कर रहा सबको अपने बस है,
आज विश्वके नव-पैगम्बर का शुभजन्म-दिवस है ॥५॥

जहाँ मनुजता एक हो रही, एक मानवी भाषा—
जन-मन का हरती विभेद, सार्थक मानव-परिभाषा—
जहां क्रिया से व्यक्त हो रही, अन्तर हृदय-पिपासा—
पूरी होती है मनचाही मनुजोचित अभिलाषा !
'सत्यामृत' 'संगम' की धारासे स्पन्दित नस-नस है,
आज विश्व के नव पैगम्बरका शुभ जन्म-दिवस है ॥६॥

जिसने दुर्लभ भुक्ति-मुक्ति को सुलभ सुगम्य बनाया,
जिसने उलझे कर्मकाण्डमय जीवन को सुलझाया !

जिसके व्यवहारिक दर्शन में स्वर्ग उतर कर आया—
करतलगत हो गया मोक्ष, देवों ने जय-जय गाया !
उसकी दिव्य-जयन्ती से नीरस भी हुआ सरस है,
आज विश्व के नव-पैगम्बरका शुभ जन्म-दिवस है ॥७॥

जब तक सामञ्जस्यपूर्ण मानव न एक बन जाये—
जब तक 'मानवभाषा' एक न हो पहिचान कराये—
जब तक शुद्ध बुद्ध 'नूतन संसार' न सम्मुख आये—
तब तक 'सद्गुरु सत्यभक्त' को सत्येश्वर न बुलाये !
यही प्रकृति-मातासे कविका चाह रहा मानस है,
आज विश्वके नव-पैगम्बरका शुभ जन्म-दिवस है ॥८॥

४४–अन्तर अभिलाषा !

कई बावन बरस तक तव जयन्ती जग मनाये यति ।
नया संसार तब सम्मुख धरापर खिलखिलाये यति ॥१॥
ये त्रेपन वर्ष का प्रारम्भ सागर की लहर में है ।
चरण एड् अफ्रिका में सत्य का संदेश छाये यति ॥२॥
तथा सन्देश वह क्षिति छोर तक छाता चला जाये ।
सकल ब्रह्मांडमें नवज्योति अद्भुत छवि दिखाये यति ॥३॥
न है इस लोक की चिन्ता-सभी परलोक की हौंकें ।
विमल नव चेतना जीवन, जगत अभिनव बनाये यति ॥४॥
तुम्हारे आगमन से मेदिनीका भाग्य नूतन हो ।
बनी जो नर्क, स्वर्गोदय चतुर्दिक जगमगाये यति ॥५॥
अवधकी यह तुम्हारी शाख रक्षा चाहती जड़ की ।
रहे जड़ सर्वदा रक्षित, अमरता लहलहाये यति ॥६॥

४५- सर्वात्मा स्वामी

पर्वों में, संगम में डुबकी लेने से सभी कृतार्थ हुये,
दुनिया में आने का फल पाने में यति! आप समर्थ हुये।
यों आये भूमि अनेक रिफार्मर पर ऐसा रहबर न मिला,
अद्भुत, अनुपम, उद्धार कार्यमें विश्व-विभूति यथार्थ हुये ॥१॥

चल पड़े आफ्रिका चरण चिरन्तन पृथ्वी को पलटाने को,
दुनिया तम में खोई-सोई, दे उसे प्रकाश जगाने को।
जग में बुराइयाँ जो चलतीं, उनका भेदन कर जाने को—
तुम पैगम्बर बन कर आये हो दुनिया नई बनाने को ॥२॥

है विश्व एक परिवार तुम्हारा, है संसार तुम्हारा घर;
हैं पुत्र और पुत्री समान, हैं मित्र कुटुम्बी नारी-नर।
व्रज रूपी विश्व बचाने को तुम बने जगत के गिरिवरधर,
जग-कल्मष-कालकूट पीने को हो सशक्त गौरी शंकर ॥३॥

तुम भोग-योग के भूषण हो, अनुराग त्याग सब से न्यारा:
बहतीं तुममें गंगा, वोल्गा, औ टेम्स, नील-सरिता धारा;
एशियन, आफ्रिकन, युरोपियन संस्कृतियाँ तुममें लहरातीं,
सब सत्यसमाज-सिन्धुमें मिलकर मानव-संस्कृति बनजातीं॥४॥

तुम आर्य अनार्य भेद का छेदन कर युग के भगवान बने,
तुम एक साथ ही बुद्ध और क्राइस्ट, मार्क्स मतिमान बने।
मानवता-रूपी-सीता के हित मानव-राम प्रधान बने,
हो कनफ्यूसियस, मुहम्मद या, क्या हो जरथुस्त महान बने?

तात्विक जाने तुम सब ही हो—सब के आचरण भरे तुम में,
व्यापक मनुष्यता के सारे व्यवहार-रूप निखरे तुम में।
मानो तुम सत्य लिये पैदा हो, सत्यस्वरूप ढरे तुममें।
जग-मानव-धर्म लिये आये तुम, अघ अनुताप तरे तुममें ॥६॥

मन्दिर, मसजिद, गिरजा आदिक कर रहे एक आचारों से,
काशी मक्का, औ जेरुसलम हो रहे एक जयकारों से।

जगदीश्वर, अल्ला, गाड यहां वन्दित समान सत्कारों से.
मानवादर्श दिखलाते तुम निज शुद्ध-बुद्ध-व्यवहारों मे ॥ ७ ॥
तुम जो लिखते-कहतेकरते वह शास्त्र शस्त्र बन जाना है.
तव कथनी, करनी और लेखनी में सादृश्य दिखाता है।
सत्कवि यह भक्त प्रकाशपुञ्ज लिख लिखकर भी न अघाता है
युगदेव ! आपकी मूझों पर जग का दिमाग चकराता है ॥८॥
सत्याश्रम-वर्धा, भारत मे सन्देश सुनाने दुनिया में—
तुम निकल पड़े पार्षदों-सहित, शुभ ध्यान दिलाने दुनियामें।
निद्रा तन्द्रा में पड़े जनों को चले जगाने दुनिया में,
आये मानव को मानवता का पाठ पढ़ाने दुनिया मे ॥ ९ ॥
उसका ही फल है आज आफ्रिका तुमपर हृदय उछाल रहा,
तव अन्तस्तल का सत्य आज बन सबके लिये मशाल रहा।
केवल है शस्त्र अहिंसा का बस वही तुम्हारा ढाल रहा
तव हाथोंमें कब पिस्टल. वा तलवार रहा, करवाल रहा। १०॥
तुम सबको अपना मान रहे—जगको अपना घर जाना है
सबके प्रेमिल मनपर ही तुमको अपनी कुटी बनाना है !
इस जगका कोना कोना ही यतिवर ! तव ठौर-ठिकाना है ॥११
यह रौरव-नरक' हटाना है, वह 'गौरव-स्वर्ग' बुलाना है।
जिन कार्य-कारणों से जग दुखमय' उनको दूर भगाना है,
'सुखमय जीवन' क्यों हुआ नहीं ? इसका निदान बतलाना है।
बतलाना ही क्या ? स्वयं कार्य करके 'जग सुख' सरसाना है,
इस ही निमित्त हर देश-देशमें भी यह जाना आना है ॥१२॥
तव 'सत्यसमाज' मिशन सर्वोत्तम जग में सुख लायेगा ही,
जो स्वर्ग गगन ऊपर, भू पर वह स्वयं उतर आयेगा ही !
यह लोक अगर जो बन जावे, भय नरक न रहजायेगा ही
इस पर ही सब बनना निर्भर, अन्यथा न बन पायेगा ही ॥१३
आकबत के लिये जो कुछ करते महज महजबी स्वांग लिये,
इसमे कब तर सकते भाई ? बिन त्याग और अनुराग लिये।

ये पूजा और पुजापे तो हैं परम्परा का भाग लिये,
शुचि सद्विवेक, सत्कर्मोंसे तुम बढ़ो सुकृतिकी आग लिये ॥१४
केवल सुकर्म रूपी पावक को फैलाने की देरी है,
उस अग्नि कुण्ड में मन की, तन की, जले पाप की ढेरी है।
फिर लोक स्वर्ग, परलोक स्वर्ग, सम्पूर्ण सिद्धियाँ चेरी है,
स्वामीजी विश्व विजनमें आकर लगा रहे यह फेरी है ॥१५॥
लाखों वर्षों की बिगड़ी दुनिया को यदि नूतन बनना है—
तो इस पैगम्बर की अमोघ शिक्षाओं पर ही चलना है।
खुलजायँ सत्यमन्दिर दिशि दिशि उसमें असत्य को हनना है,
सद्गुरु स्वामी को देख, लेख से नरक दैत्यको दलना है ॥१६

४६– जागरण मन्त्र

हे पूर्व आफ्रिका जागो तुम, कर्तव्यों में अनुरागो तुम।
आलस्य, भीरुता त्यागो तुम, जग कर्मक्षेत्र मत भागो तुम ॥
आता युगधर्मी तुम्हारे घर, जो सत्य और शिव है सुन्दर।
उसकी वाणी लेखनी अमर, है युग का अनुपम पैगम्बर ॥१॥
जग के सब मानव एक बनें, यों बुरे न रह कर नेक बनें।
मानवता के अभिषेक बने, शुचि ज्ञान गहें सविवेक बनें ॥
मानवधर्मी हो जायँ लोग, हिल मिल कर साधें प्रेम योग।
छूटे मानस के द्वन्द रोग, सब भोगें प्राकृत-स्वर्ग भोग ॥२॥
हो यन्त्र मनुजता के साधन, विज्ञान बने पथ का वाहन।
होवे तत्वों का आलिंगन, दुखमय से हो सुखमय जीवन ॥
कर दें बुराइयों का मर्दन, ये रहें न नरक-सरीखे मन।
गुण लेनेको ही लगे लगन, चित शुद्ध बुद्ध हो प्रीति मगन ॥३॥
युग की धारा को मोड़ चलें, दुर्भावों का सिर तोड़ चलें।
इस कीर्ति जगतमें छोड़ चलें, स्वामीजी का पग जोड़ चलें ॥
नव दुनिया नई बनानी है, कल्पित यह नहीं कहानी है।
सब बातें कर दिखलानी हैं, संस्कृतियाँ एक बनानी हैं ॥४॥

जग की अभिलाषा एक बने, अन्तर की श्वासा एक बने ।
आह्निक परिभाषा एक बने, मानव की भाषा एक बने ॥
स्वामी ने राह दिखाई वह, सब को ही सीख सिखाई वह ।
अन्तर की ध्वनि पहुँचाई वह, जीवनकी ज्योति जगाई वह ॥५॥

जिससे युग सत्य गहेगा ही, जो होगा तथ्य चहेगा ही ।
नकली में नहीं रहेगा ही, असली का सौख्य लहेगा ही ॥
स्वामीजी का अवतार नया, कर छोड़ेगा संसार नया ।
हो जीवन का भिनसार नया, देवेगा स्वर्ग उतार नया ॥६॥

स्वामीजी धर्मो के मोती चुन चुनते और चुगाते हैं ।
विज्ञान-शोध मे नीर-क्षीर, विलगा कर तत्व दिखाते हैं ॥
हैं वीतराग गुण-गण निधान, ये प्रीति नीति भण्डारी हैं ।
ये परमहंस या पुरुष पुरातन, या नवीन अवतारी हैं ॥ ७ ॥

चाहे जो भी कह लें, कहना सब कुछ इनमें सार्थक होता ।
जो लिखते या जो बतलाते, वह चित-शोधक बोधक होता ॥
साधुता, मनुजता, धार्मिकता, वैज्ञानिकता के प्रतिनिधि हैं ।
है विश्व अभी इनसे अजान पर विश्वोत्तम अनुपम निधि हैं ॥८॥

ले सत्य अहिंसा का बाना, कितने ही आये और गये ।
सबकी ही यहां प्रशंसा है, पर स्वामी के आदर्श नये ॥
दुनिया दुखकी है—कहे सभी, स्वामीजी सुख की जना रहे ।
हैं स्वर्ग और अपवर्ग यहीं, वैकुण्ठ इसी को बना रहे ॥ ९ ॥

जागरण-मन्त्र इनके नूतन, बन सत्य पुरातन बोल रहा ।
वसुधा से द्विधा मिटाने को, है सुधा चिरन्तन घोल रहा ॥
जब बीज-मन्त्र जग सुन पायगा, तब नवीन हो जायेगा ।
ये आधि व्याधियाँ दूर भगेंगी, सब कल्मष खो जायेगा ॥१०॥

जब धरती नई दिखाई देगी, होगा यह आकाश नया ।
होवेगा भव्य विकास नया, औ, होगा नव्य प्रकाश नया ॥
जब जीवन नरक स्वर्ग मरनेपर, यह विचार छूट जायेगा ।
दुख सुखका सत्य समन्वय होकर, सुखमें दुख बट जायेगा ॥११॥

फिर इसी लोक में स्वर्ग बनेगा, मुक्ति यहीं आजायेगी।
शुचि मानव भाषा एक बनेगी, संस्कृति एक बनायेगी॥
यह जीवन जीवन बन जायेगा नहीं मरण की होगी भीति।
होवेगा उर-उल्लास नया अभिलाष नया औ, अभिनव प्रीति॥१२

यह जानेगा संसार तभी, अवतार नया यह कैसा है।
देखा था नहीं जगत जैसा, यह अद्भुत अनुपम ऐसा है॥
तब, देव दनुज सब चौंक पड़ेंगे मनुज मनुजता पायेंगे।
सब विश्व गगनमें मानवताकी ही जय-ध्वजा उड़ायेंगे॥१३॥

तब स्वामी जी के ये उदात्त सिद्धांत परम-पद पायेंगे।
युग नायक-विश्व विधायक कह, सब सत्यभक्त गुण गायेंगे॥
सागर की लहरें पहुँचायेंगी, सत्यभक्त-सन्देश-अमर।
ऊपर का स्वर्ग उतर आयेगा, हो साकार धरातल पर॥१४॥

फिर नया जमाना हो जायेगा जड़ता रोती भागेगी।
जब नव-जागृति की ज्योति लिये, सारी वसुन्धरा जागेगी॥
तब सृष्टि खिलाखिला जायेगी, इस सत्य-मिशन अविनाशी को।
प्राणों का अर्घ्य चढ़ायेगी इस जग तारक संन्यासीको॥१५॥

४७- आफ्रिका-यात्रा की विदाई

युग-पैगम्बर की सेवा में सुखदाई,
जा रहे आफ्रिका भक्त लालजी भाई।
यह सत्यसमाज-अगो या भेंट चढ़ाता,
इस यात्रा का साफल्य सदैव मनाता॥१॥

ऋषि सत्यभक्त जो सत्य-दूत हैं निश्छल,
उनकी सुभक्ति में लगे हृदयतल अविचल।
मुम्बासा बन्दरगाह धन्य हो जाये,
युगत्राता, युगत्रात्री पर बलि बलि जाये॥२॥

प्रिय प्रान्त युगा डा आदि खड़े स्वागत को,
हैं देश देश के लोग खड़े स्वागत को।
यों पूर्व आफ्रिका में वह है तैयारी,
हैं मचल रहे दर्शन को सब नर-नारी ॥३॥

स्वागत करने की होड़ लगी जन जन में,
बस गये युगात्मा स्वामी जी मन-मन में।
आफ्रिका निवासी और प्रवासी जन से,
अनुरोध यहां हम करते निज बन्धुन से ॥४॥

यह युग दम्पति जब अभिनव मन्त्र सुनायें—
सुनकर न सिर्फ सब मन्त्र-मुग्ध हो जायें।
प्रत्युत समन्वयी तान श्रवण कर जागें,
संसार नया करने में मन अनुरागें ॥ ५ ॥

हो मनुज एक संस्कृति भी एक बनायें,
हो परमाराध्य विवेक, उसी को ध्यायें।
पा विश्वसंत को मन का मैल मिटायें,
सत्यामृत की धारा जग बीच बहायें ॥६॥

हो मानवभाषा एक व्याप्त भू-तल में,
वैषम्य-विषाक्त प्रदोष मिटें पल-पल में।
सब हिल-मिल दिल में एकरूपता लायें,
हो सामञ्जस्य—अभिन्न हृदय सरसायें ॥७॥

इस देश—भेद से भेद न आने देवें,
जग-कौटुम्बिक बनकर भवसागर खेवें।
फिर स्वर्ग-मोक्ष सब खेलेंगे घर-घर में,
वे कब तक लटके रह सकते अम्बर में ॥८॥

इसलिये सत्य का दूत आफ्रिका जाता,
सुन लें नव-पैगम्बर पैगाम सुनाता।
यह पाहन से भी कड़ा, कुसुम से कोमल,
हरने जाता कालुष्य भरा मन का मल ॥९॥

इसकी ध्वनि गूंज उठे युग की धरती में,
सत्याहिंसियों के सुमन खिलें परती में।
कोई न किया वह करे महामानव यह,
पलटे अफ्रीका और एशिया दुर्वह ॥ १० ॥

पलटे समग्र दुनिया की काया दुःसह,
यह रहे जगत में अमित अमरता को गह।
पृथ्वी का अमर सुपुत्र, हृदय का स्वामी,
करदे मानव मण्डल को निज अनुगामी ॥ ११ ॥

गुरु 'सत्यभक्त' से सत्य-भक्ति लेवे जग,
इस तरह धरा का दिव्यानन हो जगमग।
जो नरक बना—मन में कैवल्य विराजे,
सत्येश्वर की ही प्रभा विभामय छाजे ॥ १२ ॥

हो मनुष्यता देवी दिशि दिशि की प्रहरी,
है जगा रहा युगयती नींद से गहरी।
जाने कबसे सोया है विश्व हमारा,
परलोक स्वर्ग-भाग्यों का लिये सहारा ॥ १३ ॥

यह लोक स्वर्ग हो, तभी स्वर्ग वह सच्चा,
अन्यथा शेखचिल्ली का ही वह बच्चा।
कल्पना स्वर्ग की हो यथार्थ में परिणित,
इस हेतु हुये हैं युग स्वामी उद्यत चित ॥ १४ ॥

इसभाँति भाग्य भी जग सकता जगने से,
कलिकाल भगेगा कर्मों में लगने से।
यह करने को ही जगमें आप पधारे,
नर नारायण के रूप मनुज तन धारे ॥ १५ ॥

आपका मिशन जग-तारण कर छोड़ेगा,
सब आधि-व्याधियाँ वारण कर छोड़ेगा।
होगा संसार नया-यह ध्रुव निश्चित है,
वैसा युगर्षि का सारा कृत्य उदित है ॥ १६ ॥

प्रिय सत्यसमाज अवध का सद्गद् होकर
लाल जी भाई को भेंट रहा है सत्वर।
होवे अभियान सफल जग तम हरने में,
फिर इधर लगे हम रहें कार्य करने में ॥ १७ ॥
हैं एक ओर हम देते प्रेम विदाई,
दूसरी ओर लें खुलकर हृदय-बधाई।
इतना कह कर, फिर-फिर कर रहे विदा हैं,
इस युग पथ पर बलिजाते, स्वयं फिदा हैं ॥१८॥

४८– आफ्रिका में स्वामीजी

'आफ्रिका देश' की डगर डगर, तुम घूम रहे हो नगर-नगर।
जीवन की उठती लोल लहर, छू लेते हो झट अन्तरतर।
युग पैगम्बर ! तव श्वास श्वास में, 'सत्य और शिव है सुन्दर' ॥१॥
व्यापक मानवता का हामी, तुम सा पाया न सत्यकामी।
तुम चल पड़ते जिस मग स्वामी, मानव बनते पग-अनुगामी।
पर, दानव के सर को मानों छू जाता है कोई विषधर ॥२॥
तुम सचमुच ही पैगम्बर हो, हो बुद्ध, मसी, तीर्थंकर हो।
तुम रवि, शशि, दिव्य कलाधर हो, तुम कालकूट प्रलयंकर हो।
हो योग-भोग में गिरिवरधर, हो गरल—सुधा में श्री शंकर ॥३॥
तुम जिधर चलो जग चल देगा, मानव दानव को दल देगा।
यह मिशन तुम्हारा बल देगा, जग में आने का फल देगा।
यह हर मसलों के हल करने का, देगा व्यवहारिक सुस्तर ॥४॥
आफ्रिका भूमि की बूझ नई, पितु 'सत्यभक्त' की सूझ नई।
माना 'वीणा' की कूज नई, जल, थल, अम्बर में गूँज गई ॥
'नीग्रो', 'आफ्रीकन', और 'इंडियन', सबमें वाणी हुई अमर ॥५॥
हे, अमृत पुरुष ! तव अमृत बोल, पद वैभव में जिनका न मोल।
सुनते हैं सारे आँख खोल, दे रहे आप वह अमिय घोल।
सब छक-छक पीते 'सत्यामृत' मानव जीवन—रस का 'मिक्श्चर' ॥६॥

होरहा युगोदय देर नहीं, ये रह सकते अन्धेर नहीं ।
युग बदल न दे, वह टेर नहीं, क्यों कहते हुआ सबेर नहीं ॥
है विश्वमञ्च पर प्रकट हुआ, शुचि सत्यसमाज, निकर दिनकर ॥७॥

यह विश्व एक हो जायेगा, 'मानव भाषा' अपनायेगा ।
संस्कृति को एक बनायेगा, दुचिताई, द्रोह दुरायेगा ।
'धर्मालय' की नींवें पड़तीं, 'सत्याश्रम के आदर्शों पर ॥८॥

यह मिशन फैलता जाता है, जो 'सत्यसमाज' कहाता है ।
नव सत्यालोक दिखाता है, जग 'सत्यभक्त' गुण गाता है ॥
कलियुग कर मलते भाग चला, आई 'सतयुग' की नई लहर ॥९॥

मानवता अब उमगेगी ही, पोषण की वृत्ति गहेगी ही ।
शोषण की भित्ति ढहेगी ही, दूषणता नहीं रहेगी ही ।
आ रहा 'नया संसार' सामने, जागृत जिसकी ज्योति प्रखर ॥१०॥

दुनियावालों को बढ़ना है, उस मंजिल पर ही चढ़ना है ।
जीवन के पन्ने पढ़ना है, इस विद्यालय से कढ़ना है ॥
'स्वामी' के 'सत्साहित्य' और 'संगम' से झरते हैं निर्झर ॥११॥

इन झरनों में सुस्नान करें, निज मन को सब अम्लान करें ॥
रोगों का आत्म-निदान करें, जग क्लेशों का अवसान करें ।
यह 'दुखमय' विश्व बने 'सुखमय' हो स्वर्गोपम, नाचें किन्नर ॥१२॥

अन्तिम जिज्ञासा एक यही, है हृदय-पिपासा एक यही ।
अन्तर-अभिलाषा एक यही, सत्कवि की आशा एक यही ॥
'आफ्रिका'-धरासे सत्य—पताका उड़े दिशाञ्चलके ऊपर ॥१३॥

४९ — पदार्पण

सागर की लहरों पर जाकर—सागर की लहरों पर आया,
भारत से आफ्रिका देश तक निज अभिनव सन्देश गुँजाया ॥
आफ्रीकन, इंडियन, एशियन, युरोपियन तक ने सुन पाया ।
सुनने वाले सुने यथोचित; जो न सुने सौभाग्य गँवाया ॥ १ ॥

इस प्रकार वह 'सत्येश्वर का 'सत्य-दूत' धरनी को मथकर—
अमल-कमल-सा खिल कर आया उदधि-उतुंग उर्मिके रथपर ॥
जो पी सकें सुलभ 'सत्यामृत'--उन्हें लगाता आया पथपर।
व्यवहारों की छाप छोड़ आया जीवनके इति पर, अथपर ॥ २ ॥
स्वर्ग लोक से प्रभु का चाकर आया भू-तल को सुलझाने,
भ्रष्ट जगत को स्पष्ट रूप दे—इसे यथार्थ, यथेष्ट बनाने।
जरा-धरा को नव्य दृष्टि दे, सानुकूल सत्पथ पर लाने—
लिया जन्म वह मुक्त महामानव जन जन को मुक्त कराने ॥ ३ ॥
नये विश्व की एक 'इकाई' बने 'द्वैत' का निष्कासन हो,
मानव में 'अद्वैत' विराजे मानवनामय अन्तर्मन हो ॥
इसीलिये यह है जग-यात्रा, शंका या न कहीं उलझन हो।
भाषा एक एक संस्कृति हो, सत्यमन्दिरों का स्थापन हो ॥ ४ ॥
सत्य मिशन का उद्यापन कर योगी लौटा सत्याश्रम में।
जहां-जहां डग पड़ते उसके ज्योति जलाते चलते नम में।
निज सत्यों-तथ्यों से उसने आग लगादी एटम बम में।
देश-देश की शान्ति समाी व्रत उसके जीवन क्रम उद्यममें ॥ ५ ॥
उसका सत्यसमाज दिशाञ्चल में, मन प्राणों के उद्गम में।
कुतुबनुमा बन कर आया है दुनिया वालों के दिग्भ्रम में ॥
नवजीवन-रस ढाल रहा है विकृत जगत के अन्तर तम में।
उसके मर्म्म हो रहे निःसृत हम में, तुममें, सबमें सम में ॥ ६ ॥
दुनिया के दुख दर्दों का दिलगीर बना युग का संन्यासी।
बनता जाता देश-देश के जन मन का अन्तःपुर-वासी ॥
आफ्रीका में भी बीजारोपण कर सत्यभक्त गुण राशी—
यहां-वहां कर दिया भूमि को जेरुसलम औ मक्का काशी ॥ ७ ॥
उस आदर्श-रूप के जीवन को निज मन-मन्दिर में धारें।
'सद्गुरु स्वामी सत्यभक्त के गुण-गण की आरती उतारें ॥
वह अनुपम पैगम्बर, उसके पैगामों की प्रबल पुकारें—
नरक बनाने वाले जग-जीवन को बार-बार धिक्कारें ॥ ८ ॥

उन तात्विक धिक्कारों में सात्विक मनुहारों को सुन पायें—
जो धर्ता हो ऋद्धि-सिद्धि की, मनुद्धियाँ सारी छा जायें ॥
बने सत्यमन्दिर-मानव-उर, सत्य-ब्रह्म उसमें बिठलायें ।
सत्येश्वर की झांकी में ही दैनिक कार्य-कलाप चलायें ॥ ९ ॥
इस प्रकार वह 'सत्यभक्त' जो डूबे जग को तार रहा है—
युग के उस चूड़ान्त सन्त पर कवि कविता निज वार रहा है !
औ कृतज्ञता के धागे में श्रद्धा-सुमन सँवार रहा है ।
पुण्य पदांपण पर लिख प्रेषित कर अपना उद्गार रहा है ॥ १० ॥

५० - साधु समाज चले

युगवर्ता ? आपके सत्पथ पर यह जगका मानव आज चले ।
यह चले विरक्त महामण्डल यह सारा साधुसमाज चले ॥ १ ॥
सर्वा 'सीता' का जन्म सदन शुचि सीतामढ़ी कृतार्थ हुआ ।
है हे यतीन्द्र तव आगम से यह जनक क्षेत्र चरितार्थ हुआ ॥
वे थे विदेह-तुम भी विदेह—सोने में आज सुगन्ध मिला ।
जानकीपुरी में आना यह मणि-कांचन योग यथार्थ हुआ ॥
आने की आवश्यकता थी, ऋषिराज पधारे अहा भले ।
पथ चले विरक्त महामण्डल यह सारा साधु समाज चले ॥ २ ॥
यह मिथिलादेश पुकार रहा ऋषि 'सत्यभक्त' का स्वागत है ।
युग-पैगम्बर के चरणों में हृदयानुरक्त का स्वागत है ॥
केवल बिहार ही क्या ? समग्र भारत से यह गुञ्जार उठी ।
स्वामी के दर्शन पर गृहस्थ औ हर विरक्त का स्वागत है ॥
कृतयुग से सतयुग ला दो तुम—यह कलियुग भागे हाथ मले ।
पथ चले विरक्त महामण्डल यह सारा साधु समाज चले ॥ ३ ॥
नव सत्याश्रम की शाखायें खुल जायँ साधुओं के द्वारा ।
सब सत्यसमाजी बनें साधु औ बहे साधुता की धारा ॥
यह सर्वसाधु सम्मेलन स्थापित होकर वसुधा को तारे ।
अब जग के भार न रहें साधु हों अलंकार-जग हों प्यारे ॥

युग संत शिरोमणि ! तव प्रकाश से कोई कहीं नहीं विचले।
पथ चले विरक्त महामण्डल यह सारा साधु समाज चले ॥ ४ ॥
हे, हे, समाज के सत्य-साधुओ ! सच तुम युग पलटा दोगे।
जब स्वामीजी को आगे कर अपना कालुष्य हटा दोगे॥
पा सत्यसिन्धु नेता महान–अब आगे बढ़ने की ठानो।
कोई न मिटा सकता जब तुम वसुधा से द्विधा मिटा दोगे॥
जग का सर्वोच्च सन्त पाकर, जग पड़ो कि रजनी अभी ढले।
पथ चले विरक्त महामण्डल यह सारा साधुसमाज चले ॥ ५ ॥

५१—अयोध्या में स्वामीजी

आये एक-एक-से सुसाधु इस भूतल में;
ऐसे नहीं आये, जैसे आये स्वामी सत्यभक्त।
सम्प्रदाय, राष्ट्रवादिता में सब पड़े रहे;
विश्वमुक्ति मार्ग तो दिखाये स्वामी सत्यभक्त॥
प्यारी मिथिला है धन्य, धन्य साधुवर्ग हुआ;
साधुता के लोचन लुभाये स्वामी सत्यभक्त।
सारे ही गृहस्थ भी समझते रहस्य यह;
युग के हृदय में समाये स्वामी सत्यभक्त ॥ १ ॥
सीता के सदन से श्रीराम के भवन आये;
दर्श दिखलाये, हर्ष लाये स्वामी सत्यभक्त।
सुख उपजाये, सारे दुख बिनसाये, अहा !
सुन्दर स्व-पथ बतलाये स्वामी सत्यभक्त॥
अभिनव साधुता, अभिन्नता मनुष्यता की;
नित्य नव्य वाणी बरसाये स्वामी सत्यभक्त।
सत्यसमाजी हैं राम-धाम के निहाल हुये;
विश्व सन्त-रूपमें सुहाये स्वामी सत्यभक्त ॥ २॥
सत्योपासक मुदित हैं, हर्षित सत्यसमाज;
मानवता गद्गद हुई, धन्य लेखनी आज ॥ ३ ॥

५२—युगचरण

पूज्य गुरुदेव स्वामी सत्यभक्त जी जब पहिली बार अयोध्या पहुंचे और मेरे घरमें तख्त पर विराजमान हुए तब सभी सत्यसमाजियों के आनन्द का पार न रहा। अयोध्या सत्यसमाज के प्राण कविवर वैद्य प्रकाशपुञ्ज जी तो पूज्य गुरुदेव के चरण दबाने लगे। पूज्य गुरुदेवने कहा- यह क्या करते हैं ? मेरे पैर थके हुए नहीं हैं। उसपर वैद्यजी ने जो उद्गार निकाले उन्हीं का विस्तार यह कविता है—

—लालजी

नव साहित्यों को ही लखकर था अपना रूप निखार चुका।
जब प्रथम "सत्य-सन्देश" पढ़ा था—तबसे तुम्हें निहार चुका॥
थे पूज्य पिता भी मेरे ऐसे—जिनसे ज्ञान सँवार चुका।
निज पितृदेव की गोद बैठकर ही अज्ञान विसार चुका॥
पर युग-तारक को खोज रहा था, मिले आप उजियाले हैं।
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले ? युग पलटानेवाले हैं॥१॥

जब तक थे पिता निहाल रहा—बेहाल हुआ तो आप मिले,
इस प्रभा राशि को हृदयंगम कर मेरे जीवन पुष्प खिले।
ले पिता सीख जो चित्रित होता था वह चित्रण ही निकले,
मैं बार-बार बलि जाता हूं, युगदेव ! आपके चरण तले।
हूं बाइस्कोप देखता, या—दिखते अन्तर के छाले हैं ?
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले ? युग पलटानेवाले हैं॥२॥

थे पिता आदि-गुरु जन्मानेवाले, जन्मा, सविकास किया,
वे थे प्रकाशके श्रोत स्वयं, सन्तानों को सुप्रकाश दिया।
मैं और विरागी और तीसरे भाईका विश्वास लिया,
पा जीवनमृत्यु महान पिता ने तोड़ी अपनी श्वास-क्रिया।
वे मर्म्म-बीज बो गये—प्राण ये तुम पर चलनेवाले हैं !
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले ? युग पलटानेवाले हैं॥३।

जग के जिस गुरु को ढूंढ़ रहा था आँखें तुमपर जा अटकीं,
मानव-दर्शन की सारी चीजें देते तुम टटकी टटकी।
तुम सर्व नीति का ज्ञान दे रहे, बातें कहीं नहीं खटकी,
संगम की धारा में शोधन कर देती हैं मानस तट की।
दर्शन से मनकी भूख मिटी, तन को विस्मृतिमें डाले हैं!
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले? युग पलटानेवाले हैं ॥४॥
मैं कब से जान रहा था तुमको निज को भरता जाता था,
अज्ञात रूप से अपने घट को पूरा करता जाता था।
तुमको अपने में ही निहार निज तम को हरता जाता था
दूरी को तय करके जीवन के घाट उतरता जाता था।
बिन जाने भी लिक्खा कितना, जब प्रकट हुये मतवाले हैं!
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले? युग पलटानेवाले हैं ॥५॥
उन्नत ललाट साकेत धाम में देखा तो सब भूल गया,
तुम सूर्य सरीखे दिखे मुझे, मैं सूर्यमुखी सा फूल गया।
तब सम्मुख में मैं फुनगी हूं तुम में मेरा जड़-मूल गया
बिन साधन तुमको साध्य रूप लख दृग-झूला में झूल गया।
तप करते में ही दिव्य-दर्श पा दिल के मिटे कसाले हैं!
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले? युग पलटानेवाले हैं ॥६॥
कब तप पूरा होता तुम आते, इसका कुछ न ठिकाना था,
पर सुधि करते तुम प्रकटोगे यह भक्त-हृदय ने जाना था।
है वही बात प्रत्यक्ष हुई, तब सुधा-माधुरी पाना था,
साक्षात रूप का दर्शन दे भक्तों की प्यास मिटाना था।
हो गये धन्य हम सब, न अन्य से ऐसे मिले मसाले हैं!
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले? युग पलटानेवाले हैं ॥७॥
अक्रोध, इन्द्रजित रूप तुम्हारा जन मन रंजन हो भाया,
धाता ने तुम्हें सँवारा है, पाई मणिमय-कंचन-काया।
सारी मानव-निधियाँ एकत्रित हर लेतीं तम की माया
युग-मन्त्र-शिरोमणि तुमने युगके त्राता का गौरव पाया।

आनेवाले युगके जग जन तुममें ही ढलनेवाले हैं !
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले ? युग पलटानेवाले हैं ॥८॥
इन चरणों में है आग भरा, इन चरणों में अनुराग भरा,
इन चरणों में है त्याग भरा, इन चरणोंमें मृदु राग भरा ।
इन चरणों में कितनी माँओं बहिनोंका अचल सुहाग भरा,
इन चरणों में अनगिनत नरों का—नारायण का भाग भरा ।
इन चरणों पर गर्वित हो हमने पिये प्रेम के प्याले हैं !
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले ? युग पलटानेवाले हैं ॥९॥
है क्रान्ति, शान्ति इन चरणोंमें भवभ्रान्ति भगानेकी क्षमता,
इस पापपूर्ण धर्मान्ध जगत में ज्योति जगाने की क्षमता ।
जप-तप में भरकर कर्मयोग कर्तव्य दिखाने की क्षमता,
'जग मिथ्या' का मिथ्यात्व मिटा जग-स्वर्ग बनानेकी क्षमता ।
पग-पग यह विश्व प्रयाग बने, मक्का हो—यह व्रत पाले हैं !
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले ? युग पलटानेवाले हैं ॥१०॥
गर्वाले पद्पद्मों को सहला कर निज को सम्भाला मैं,
प्रिय-पूज्य-चरण-रजको मस्तक ले अपना व्रत प्रतिपाला मैं ।
नव आनन-कनकासव को पी बन गया पूर्ण मतवाला मैं,
'यह क्या करते, मैं थका नहीं' बोले तुम वाणी टाला मैं ।
बोला मैं--क्यों न अवज्ञा हो—ये हाथ न टलनेवाले हैं !
ये, चरण अथक कब थकनेवाले ? युगपलटानेवाले हैं ॥११॥
मैं भी न मानता थके विभो ? पर मुझे अतुल आनन्द मिला,
मेरे मानस-रूपी मधुकर को अमल-कमल-मकरन्द मिला ।
चरणद्वय के अभिवन्दन में मुझको वह ब्रह्मानन्द मिला,
जिसकी उपमा है कहीं नहीं मिल गया सूर्य औ चन्द मिला ।
हृदयानुरक्ति का भाव न स्वामिन् !--हमसे छिनने वाले हैं !
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले ? युगपलटानेवाले हैं ॥१२॥
होकर के आत्म-विभोर आपके चरणों को सहलाया था,
उसमें न रूढ़ि का पालन था—हृद्भाव उमड़कर आया था ।

नेत्रों में आनन्दातिरेक से प्रेम-अश्रु भर आया था।
फिर साथ हमारा देनेको नभने सुखाश्रु बरसाया था।
ये श्रमिक कृषक अमृत ढाले, स्वार्थी निज विषसे काले हैं!
ये, चरण अथक, कब थकनेवाले? युगपलटानेवाले हैं ॥१३॥

५३- अयोध्या से बिदाई

जैसे हम सब को सनाथ किये आके नाथ;
होवें न अनाथ कभी ध्यान रखियेगा हाँ।
भक्त लालजी ने भगवान को खिलाये बेर;
हम विदुरों का फिर शाक चखियेगा हाँ॥
वीतराग आप मानवत्व के प्रचार हेतु;
खोल के शिविर इस ओर नकियेगा हाँ।
फटे हुये हृदय, मनुष्यता से छूटे हैं जो;
बखिया उधेड़ उन्हें आप सखियेगा हाँ ॥ १ ॥
जग की कुरूढ़ता हो, जन की विमूढ़ता हो;
ऋषिराज को निहार सारे पाप धो गये।
ज्ञान जो यथार्थ मिला, हो गये कृतार्थ हम;
अवधपुरी में देव सत्य-बीज बो गये॥
पाके हम पाये निधि, हुये तुष्ट सर्व विधि;
जा रहे तो लग रहा आया हम खो गये।
विदा के समय कुछ कहा नहीं जाता विभो;
आप हैं हमारे, हम आपके ही हो गये ॥ २ ॥
अन्तिम विनती है यही, सुनें हृदय-अधिराज;
सारी वसुधामें भरें, मानवता-सुख-साज ॥ ३ ॥
युग के सर्जन आप हैं, रोगी पड़ा समाज;
तारें इस साकेत से, जग-जनताको आज ॥४॥

५४—बिदाई

सत्येश्वर के नव्य दूत हे ! कहो कहां तुम जाते ?
आये तो आना समझे जाना हम समझ न पाते !
बैठाये तुम हृदयासन पर ऐसा ही दिखलाते,
सहृदयशील मानव तुम पर श्रद्धा के अर्घ्य चढ़ाते ॥१॥

एक महीने तक विवेक दे, सब कुछ ही दे डाले;
अन्तर्द्वन्द्व भीतरी व्रण थे उनको आप निकाले।
भटक रहे सारे जग-जन गुरुवेषी जग के पाले,
वे जो सभी आपको पालें रहे न द्विविधा वाले ॥२॥

अवधपुरी पुलकावलि होकर करती आज बिदाई,
जनता अन्तर नेत्राञ्जलि मे देती तुम्हें बधाई।
हे युगनेत्र नेत्र तुम खोले मिटी सकल दुखिताई,
युग मानवता युक्त साधुता सत्यभक्त बन आई ॥३॥

सत्यभक्त हो नाम कामसे, भक्त सत्य के निश्छल,
तुम दृढ़ताके हो प्रतीक विन्ध्याचल आल्प्स हिमाचल।
नव मस्तिष्क श्रोतसे बहता ज्ञानगङ्ग जल कुलकुल,
सुधा-जन्य कैवल्य रूप तुम ! धोते पापोंके मल ॥४॥

राम भूमि में भी कल्मष लख तुम्हें हुई हैरानी,
इसीलिये आने कुछ कर जाने की तुमने ठानी।
जिनका है षड्यंत्र अस्त्र, जो बनते धर्म निशानी,
उनने निकदम भिड़ाभिड़ा तुमको करने बेपानी ॥५॥

लुके छिपे वह बात न छोड़ी जिसमें भरी न गाली,
पर गाली भी रही तुम्हारे लिये फूल की डाली।
जिनने बात तुम्हारी मानी, जिनने एक न मानी,
दोनों से निर्वैर रूप तुम प्रीति-मूर्ति लासानी ॥६॥

बनकर आये हो जगती को बिलकुल नया बनाने,
सब मनुष्य परिवार सरीखे कौटुम्बिकता लाने।

एक सबों की है काया संस्कृति के चिन्ह पुराने,
एक मानवों की भाषा हो बिन जाने पहिचाने ॥७॥
इसी हेतु तुम 'मानवभाषा' लिखकर मर्म बताये,
जैसा कोई लिख न सका था जगके सम्मुख लाये।
भौतिकत्व अध्यात्मतत्व के झगड़े सभी हटाये,
अपना और पराया शब्दोंके सब द्वन्द्व मिटाये ॥८॥
एक नया संसार बसाने प्रकटे तुम भूतल में,
छाप लगाते जाते हो निज सबके अन्तस्तल में।
तब अद्भुत प्रतिभासे प्रतिभासित हम हो पलपलमें,
तुम्हें हृदय से जाने दे सकते कब किस अञ्चल में ॥९॥
ब्रह्मचारि श्री वासुदेवजी कब तुमको छोड़ेंगे,
स्वामीजी, वेदान्तीजी ही मुख कैसे मोड़ेंगे?
साधु महन्त सचाई जिनमें वे नाता जोड़ेंगे,
जो वास्तवमें पण्डित हैं तब सतको कब तोड़ेंगे ॥१०॥
इसप्रकार अप्रेम दिखाने की क्या बात रहेगी,
कब तक जनता सामाजिक सारे व्याघात सहेगी?
सत्यसमाज सत्यका शोधक है यह वाक्य कहेगी,
अन्धकूप में पड़े पड़े वह सूर्योन्मुख न बहेगी ॥ ११ ॥
सत्यसमाजी बन्धु जनों की होवे प्रकृति सहाई,
मानव सन्तानों के हित में इनने दृष्टि उठाई।
सेवामें अनमोल 'लालजी दम्पति' हो सुखदाई,
इस जीवनको बनारहे, युगदेव कृपा है पाई ॥१२॥
'रामकिशोर' कुरूढ़ि दलन में भाव विभोर दिखाते,
'संगम" में सुस्नान कराते, सत्साहित्य पढ़ाते।
'बद्रि' 'राम अवतार' स्वयं लाउडस्पीकर बन जाते,
'लक्ष्मणदास' 'रामधन' 'यदुनन्दन' धुन के मदमाते ॥१३॥
और अनेकों युवक, प्रौढ़ हैं साधु, गृहस्थ शुभाशी,
सत्यसमाज हेतु जो कसे जाते हैं विश्वासी।

हो सत्प्रेम लिये सबका यह सत्य मिशन अविनाशी,
नरक मिटाता चले हृदय का होवे स्वर्ग-प्रवासी ॥१४॥

रहे सत्यमन्दिर, सत्याश्रम यहां अचल बन कर के,
रहें सभी हम श्रेय-धर्म से हेय कर्म हन करके।
करें दनुजता का मनुजता से मर्दन तन कर के,
दानव दिखे नहीं कोई मानव कुल में जनकरके ॥१५॥

विमल साधुता, मानवता यतिवर का करती वन्दन,
मानस की सुशीलता-शीतलता मलयागिरि चन्दन
उसको चर्चित कर हृत्तल से करते हम अभिनन्दन,
रहे विभो सुधि लेते, दर्शन देते, यही निवेदन ॥१६॥

जितना लिये आपसे उसका ऋण किस भांति भरेंगे
गौरव लेने को कैसे हम रौरव सिन्धु तरेंगे ?
पर यह आश कि उपदेशों पर चलकर ही उबरेंगे,
स्व-पर हितार्थ कार्य करनेसे हम किञ्चित न डरेंगे ॥१७॥

वैसा करके ही हम सब कुछ आगे बढ़ सकते हैं,
चढ़ते-चढ़ते उन्नति की चोटीपर चढ़ सकते हैं,
तभी सभी; हम मानवता की मंजिल कढ़ सकते हैं,
दुनिया नई, समाज नया यह फतवा पढ़ सकते ॥१८॥

इस साकेत धाममें युगके परम पुरुष का आना,
घोषित करता-इस थल से था नव-सन्देश सुनाना।
वह सन्देश दिये प्रभु पूरा गूंजा यहीं तराना,
'अब यह जग होगया पुराना, दुनिया नई बनाना'॥१९॥

यहीं विभाकर और सुधाकर किरण जाल फैलाते,
जिनसे सभी मनुष्य जगत के हैं सम लाभ उठाते।
वायु और जल एक सरीखा सबको सुख पहुँचाते,
हों हम सभी धर्मसमभावी ऐसा मंत्र सिखाते ॥२०

जग हो स्वर्ग मुक्ति मनमें हो, सन्मुख मोक्ष उदित हो;
स्वामी के इस विदाके समय हृद मुकुलित पुलकित हो।

बिदा दे रहे आज सबों के दोनों नयन चकित हो
दर्शन देते रहें यतीश्वर करुणासे विगलित हो ॥ २१ ॥

परब्रह्म से भीख यही तव सीख सदा हम मानें,
यतिवर रहें कहीं लेकिन हम निज हृदयों में जानें।
प्रेम दृष्टि की क्षमता पा तव दिव्य-दृष्टि पहिचाने,
फिर तो भगवन आयेंगे ही हमको सदा उठाने ॥२२॥

अपने युगनायक से भी हम यही चाहते भिक्षा,
तृप्त करेंगे सदा पिपासा औ अज्ञेय तितिक्षा ।
जिससे हम उत्तीर्ण करें मानव की विश्व परीक्षा,
जाते जाते देते जायें उसी कोर्स की शिक्षा ॥ २३ ॥

५५- काव्योपहार

जिस दिन सत्य समाज, नील लहरों को करके पार,
देश देश तय करते पहुँचा, पूर्व-आफ्रिका-द्वार ।

समझ लिया मैं तभी कि है यह इसका विश्व-प्रवेश !
नहीं बचेगा इससे कोई भी भू-प्रान्तर देश ॥ १ ॥

आज हिन्द का बक्ष-कक्ष सुस्थल औरंगाबाद,
लहक उठा है, चहक उठा है, पा जीवन का स्वाद ।

महक उठी है कला अजन्ता की ले सौरभ--भार,
लिये तथागत को गोदी में करती विपुल दुलार ॥२॥

येलोरा, दौलताबाद के झंकृत हों इतिहास,
सत्य समाज महासम्मेलन पर करके निज आस ।

अन्तश्चक्षु खोल कर देते हैं सब आशीर्वाद,
हो गर्वित, हो रहा सौरभित क्षेत्र हैदराबाद ॥ ३ ॥

पुरातत्व की संस्कृतियों से आती मृदु झंकार,
युग-पैगम्बर—सत्यभक्त पर हुई प्रकृति बलिहार ।

महाधिवेशन से गुंजित हो सारा जग, सब देश,
निश्चय है सब मिटा सकेंगे अपना अपना क्लेश ॥४॥

आज नया इन्सान चाहता नवयुग का निर्माण,
सत्यसमाज उन्हीं सामानों को कर रहा प्रदान ।
ऊपर में जो स्वर्ग विराजा, उसे धरापर मोड़,
ऋषिवर-सत्यभक्त जन-जनमें उसको रहे निचोड़ ॥५॥

जो न अभी तक किया किसीने करने वह शुभ काज,
स्वामी जी प्रकटे धरती पर भरने सुख के साज ।
क्या है धर्म ? समझनेमें यह, हो किंचित न विकल्प.
क्या समाज, क्या राजनीतिका करते कायाकल्प ॥६॥

धर्म और विज्ञान न लड़ने के साधन रह जायँ,
मानव मानव को सम समझें समधर्मी दिखलायँ ।
नर-नारी समभावी हों, हो मानव-संस्कृति एक,
मानव-भाषा बने जगत की घट घट रहे विवेक ॥७॥

विश्वकुटुम्बी हो जग सारा बने विश्व-सरकार,
बने समन्वय के संतुल पर यह स्वर्गिक संसार ।
उस गन्तव्य मार्ग पर बढ़ते जाते हैं साकार,
सत्यभक्त में पाया जग ने दिव्य नया अवतार ॥८॥

ऐसे महाभाग हम सब के हों इनका गुण धार—
व्यवहारिक हल इनसे लेकर पूजें इन्हें अपार ।
जीवन में इनको पहिचानें, तभी ठीक पहिचान.
मरने पर क्या फूल चढ़ाया ? अरे, मूर्ख नादान ॥९॥

वह सब ही हो रहे सत्य-सम्मेलन के शुभ काम,
जिन्हें देखकर देव चाहते होंगे भूपर धाम ।
वही धाम अब इस भू-पर होने जा रहा यथार्थ,
अब न मोक्षके नाम बिकेगा पैसोंमें परमार्थ ॥१०॥

सत्य तथ्य को सार्थक करने जन्मा 'सत्यसमाज',
उसके सम्मेलन पर है सारी वसुधा का ताज ।
स्वामी सत्यभक्त के मग में पग देता भूलोक—
अधिकाधिक पाता ही जाता है युगका आलोक ॥११

भारत माता ही न, विश्व-माता लेकर वरमाल—
सत्यभक्त के मृदुल गले में स्वयं रही है डाल।
सम्मेलन की प्रखर रश्मियाँ छा लेवें ब्रह्माण्ड,
सत्याश्रमसे ज्योतित हो-हो उदय विवेक अखंड ॥१२
इन्हीं शुभाशाओं अभिलाषाओं से कर सत्कार,
निज हार्दिक कविताञ्जलि द्वारा भेजरहा उपहार ॥१३॥

५६ — बधाई

हे जनहित की लहरों पर उठनेवाले तूफ़ान,
हे सत्याश्रम के उदयाचल के उद्भासित भान।
राष्ट्र और अन्तराष्ट्रों का लेकर नवल विधान—
उतर पड़े हो तम भूतल को करने को द्युतिमान !
जीवन-जाग्रति के प्रतीक तुम हो पृथ्वी-दरम्यान।
जग तुमसे अनजान, किन्तु जगमे तव प्रिय पहिचान ॥१॥
कारण यही, बनाये जाते तुम उसके अध्यक्ष—
जिस समाज को तुम्हें समझने का साहस प्रत्यक्ष।
इससे ही साहित्य या कि हो शान्ति न्याय का पक्ष—
शुचि अध्यक्ष वरण कर तुझको पाते ज्ञान समक्ष !
इसी बिना पर तुम से लाभ उठानेवाले कक्ष—
तुमको अध्यक्षित करके स्पन्दित करते निज वक्ष ॥ २ ॥
तभी जयन्ती हो, होवे साहित्य सभा निर्णीत—
चाहे शान्ति सभा हो, होवे युद्ध-विरोधी-नीत—
उन संस्थाओं और सभाओं का लग्न लक्ष्य पुनीत--
उन्हें स्फुरण देने को टाल न पाते सम्भव-प्रीत—
सत्य-समन्वय पर आधारित सत्यसमाज-स्वर्गीत—
लिये वहाँ पर जा विराजते बन जनजीवन-मीत ॥ ३ ॥
हे युगदेव, प्रगतिगामी गुरु ! दिशा-निदर्शक माप -
नव प्रतिभा क्षण-क्षण विकासिनी हो उन्मुक्त अमाप—

सत्य-सहारा बन जाती जनहित-कृत्यों को भाँप—
रूढ़िग्रस्त, शोषक न समझते तव चरणों की चाप—
उनके पाप उन्हें डसने लगते हैं, बन कर साँप—
धरती उनकी पैर खिसकती लगती अपने आप ॥ ४ ॥

तुम युग में हो, युग तुम में हो करता है आवर्तन—
इसका उन्हें न ज्ञान, न शाश्वत शुद्ध सनातन ही मन !
यही हाल है सामाजिक वे राजनीति-विद्वज्जन—
जिनने नीड़ पकड़ रक्खा है बांध लिया उससे तन !
वे न घोसलों से हटते जो बँधे स्वार्थ के बन्धन—
क्या समझेंगे तुम्हें, देव ! वे जकड़े जिनके कण-कण ॥ ५ ॥

उन अवसरवादी, स्वार्थी वर्गों की दुलिया तंग—
हो जाती है देख तुम्हारा सत्य, तथ्य का रंग !
इसीलिये ये नास्तिक, आस्तिक का लेकर बदरंग—
कीचड़ सदा उलीचा करते शान्ति छोड़ हुरदंग !
सौख्य शान्ति के लिये फड़कता उधर तुम्हारा अंग—
बदमिजाज उसको क्या जाने लिपटे उन्हें भुजंग ॥ ६ ॥

ये समाज के कालनेमि करते समाज का क्षार—
धर्म, समाज, राजनीतिकता सब का बंटाढार—
करते रहते हैं ये दुर्मुख बन करके खूँख्वार—
इन्हें ठिकाने लाने आये धर तुम 'नव अवतार' !
तत्त्व यही, वे सभी सभायें करतीं तव मनुहार—
जो कि तुमारे 'सत्य-मिशन का ही पुरजा औजार ॥ ७ ॥

आखिर 'निरतिवाद' ही तो है चला कि जिस पर चीन—
'निरतिवाद के ही पथ पर 'माओत्सतुंग' आसीन।
चाहे वे तुम को न देखते, पर होता तसकीन—
राह तुम्हारी ही ली उनने, किया स्वदेश नवीन।
यह सद्भावों का मिश्रण है सत्यसमाज प्रवीण—
इसमें सद्गुण ही खपते हैं, दुर्गुण होते क्षीण ॥ ८ ॥

जिन मूसाइटियों में कुछ भी सत्यसमाजी घोल–
उनका सात्विक घोल तुम्हारा ही है तात्विक बोल—
जिनने रंचमात्र समझा तव सिद्धान्तों का गोल–
वे बैठायेंगे ही तुम को सभा-सु यक्ष-खटोल–
सभी सुविज्ञों, गतिशीलों हित सब व्यक्तित्व अमोल–
है वरदान-स्वरूप दिया प्रकृती ने अंचल खोल ॥ ९ ॥
उक्त सभी कृत्यों की लम्व कवि देता तुम्हें बधाई,
युग वंशीवट के प्यारे तुम 'सत्याश्रमी-कन्हाई' !
या 'ईसा' का त्याग लिये करते हो राहनुमाई—
'महावीर' या 'बुद्ध' 'मार्क्स' की तुझ में प्रभा समाई ?
सौ बातों की एक बात, तुमने वह मति-गति पाई–
'सामंजस्य' समन्वय की बनती है जहां इकाई ॥ १० ॥

५७– निर्माण कर रहे

धर्मों के दलालों ने ले मृत्यु स्वर्ग का ठेका;
जग मानव को डाल दिया है इसमें, भ्रममें तममें ।
अन्तर के शाश्वत प्रकाश को अन्धकार ने छेंका;
जीवन-जगत स्वर्गमय हो ध्वनि उठती सत्याश्रममें ॥ १
वह ध्वनि गूंज रही अम्बर में धूम धूम श्रीमुख से,
सत्यसमाज सत्य-सन्देशों को भर देगा थल में ।
भाग्य-भरोसे मानव सन्तति नहीं कराहे दुख से,
उस युगका निर्माण कररहे यतिवर प्रति पलपलमें ॥ २

५८– बम्बई में स्वामी सत्यभक्त

बम्बईमें फैली बात कृष्णादेवीजीके यहां, जटजूट कण्ठीमालाहीन साधु आया है
जो न शैवशाक्त वैष्णवादिसाही दीखपड़े या न जो त्रिपुण्डभस्म गेरुआ रमाया है
देखनेमें किसी सम्प्रदायका दिखाता नहीं बंधनोंसे मुक्त वह डोलतीसी काया है ।
हिंदू है न मुस्लिम ईसाई है न पारसी ही जैन है न बौद्ध सत्यभक्त पद पाया है ॥

सत्य ही है ईश्वर जिसे वो सत्येश्वर कहे उसी सत्येश्वरका वो दूत कहलाता है।
निकलपड़ा है सारे विश्वको बनाने एक ग्राह्य धर्मकर्मका ही मर्म बतलाता है॥
किन्तु किन्हीं तत्वोंमे अनैक्य उसका है नहीं करके मतैक्य भिन्नताको बिलगाता है।
दानवी दुरात्मबीच मानवी एकात्म लिये सत्यकी मशाल वह चलता जलाता है॥
आस्तिकोंको नास्तिक औ नास्तिकोंको आस्तिकसा—
लगता है जिस रूपमें जो उसे देखता।
किन्तु वो न आस्तिक या नास्तिकके द्वंद्वमें है सक्रिय मनुजता है मनमें बिखेरता॥
निरापोथी थोथीबातें भ्रांतियाँ बढ़ातीं आतीं सत्यामृत धारसे है भ्रांतियोंको ठेलता
निश्चय क्या है विश्वके उद्धारका सुमार्ग लिये निज राजमार्गपै वो सबको कुलेलता
मानवोंकी भाषा एक तत्व एक ज्ञान एक आना एक जाना एक फिर भरमाना क्यों
खुदा एक वेद एक सारी ही बाशिंदे एक धर्मोंका है ध्येय एक फिर ये भुलाना क्यों?
जब है उद्देश एक स्वर्ग अपवर्ग एक, फिर ये वितंडवाद द्रोह उपजाना क्यों?
अगर असार है संसार तो ससार क्या है? दृश्य है अदृश्य जो तो शून्यमें ठगाना क्यों
इन सबका ही सत्य रूपसे निदान कर सत्यका समाज खड़ाकर वह डोलता।
स्वर्गकेन्द्र जैसे गगनमें सत्यकाही सर्जन वो सत्यकी घूंटी पिलाते सत्यसुधा घोलता
परम आनन्द गृहगृहिणी हैं कृष्णादेवी जहां लोकद्रष्टा सत्यभक्त हैं कल्लोलता।
ऐसी कृष्णा धन्य धन्य मेहरागृह व धन्य सत्यऋषि बम्बईमें सद्ग्रंथि खोलता॥
सुरभारती श्री सत्यज्ञानयज्ञपै कृपाकी वारि ढारती हैं कृष्णादेवीके सुभक्ति ध्यानपै
छत्रछाया करती है सत्यका स्वरूप देख स्वामीसत्यभक्तजीके सत्यके वितानपै।
गिरिसे गुरुत्वपूर्ण शुनको ले कन्धोंपर सत्यभक्त सोहन है कृष्णा-मीरा ज्ञानपै।
चरणोंमें लालजीकी सेवा धन्य होरही है उज्वलित प्रकाशपुञ्ज दिव्य कवितानपै

५९— जन्मभूमि यात्रा

गांव तुलसिया—शाहर तुलसीदास! इस कटूक्ति में सबका था विश्वास।
पर स्वामीजी जब पहुँचे निज क्षेत्र! भर आये पुरवासी जनके नेत्र॥ १॥
नर-नारी सब विधि होगये निहाल! मानों ब्रज ने पाया ब्रजका लाल।
अथवा वनसे लौटे ललित ललाम! विबुध अवध ने पाया हो श्रीराम॥२॥
कपिलवस्तु में या लौटे सिद्धार्थ! यहां सफल वे भाव हुये चरितार्थ।
था सुमनन्दित पुलकित जन्म-स्थान! घर-आंगन में आये हों भगवान॥३॥

'घरको जोगी जोगना, आनगांव को सिद्ध'।
बात यह चली आरही, जो है लोक-प्रसिद्ध ॥
जो है लोक-प्रसिद्ध नहीं इसमें संशय है।
उसे तोड़ पाई स्वामी ने आत्म-विजय है ॥
ग्राम शाहपुर जहां हुआ था इनका उद्भव।
उस रज-कण ने पाया जिन गुदड़ी का वैभव ॥४॥

तुलसी वहां न जाइये, जहां जन्म का ठाम।
भाव भक्ति जाने नहीं, धरे पाछिलो नाम ॥
धरे पाछिलो नाम, यही होता आया है।
गुण से नर गुण—ग्राहकता खोता आया है ॥
धन्य शाहपुर या दमोह, सागर की बस्ती।
जिसने आगे बढ़ कर दिखलाई निज हस्ती ॥५॥

जन्म शाहपुर ने दिया, पालन किया दमोह।
खींच लिया युगसन्त का, दिव्य विकल व्यामोह ॥
दिव्य विकल व्यामोह लिये, पुरवासी दौड़े।
स्वयं शाहपुर, सागर जिला निवासी दौड़े ॥
खुद सागर दौड़ा दमोह दौड़ा ही आया।
पुरुष पुरातन, औ नवीन उनने निज पाया ॥६॥

सब रिकार्ड श्रुति-उक्ति के तोड़े तुम ऋषिराज।
दिया मूल ने फूल बन चक्र-वृद्धि का ब्याज ॥
चक्र वृद्धि का ब्याज बिना मांगे तुम पाये।
नर-नारी आबाल वृद्ध सब भांति अघाये ॥
पाये अपना रत्न, जो कि जग का है भूषण।
कितने सुखसे मिले जन्मसे अबतक के क्षण ॥७॥

हृत्कलिका वे खिलीं जो, थीं सम्पुट-सी मौन।
उसको विशद कवित्व में, कह सकता कवि कौन।
कह सकता कवि कौन ? लालसायें जो छाईं ॥
सर सरितायें अगम जलाशय अपना पाईं।

जलनिधि ने भी निज महत्त्व उनमें ही देखा ।
अपनों से मिल अपने को अपने में लेखा ॥ ८ ॥

तब अपने में भी लखा, स्वामी प्रकट विराट ।
घर-बाहर सब एक-सा, जिसके खिले कपाट ॥
जिसके खिले कपाट विश्व का खुला हुआ है ।
सब में समरस होकर के जो घुला हुआ है ॥
स्व-जनों ने भी युग-पतिवर का उसी भाव से ।
निज महान से करा स्वागत निज स्वभाव से ॥९॥

सम्मानित कर जो दिया, महाभिनन्दन पत्र ।
गृह का शिष्टाचार यह, परम विचित्र पवित्र ॥
परम विचित्र पवित्र, नया इतिहास बनाया ।
अन्तर का अन्तर्प्रकाश, सब को चमकाया ॥
गह गृह-यात्रा बिसराये, विस्मरण न होगी ।
अभिनन्दन-ध्वनि सुस्मृतिसे, अपहरण न होगी ॥१०॥

६०– माताजी की रुग्णता पर

माताजी की रुग्णता पै ध्यान सबका है गया,
सत्यसमाजीय अवसन्न हो गये हैं सब ।
इष्ट मित्र जो पवित्र दुखित सभी हो लोग —
सुन के दुखाग्नि से विपन्न हो गये हैं सब ॥
' माताजी नीरोग हों '–सबकी प्रार्थना है यही,
इसी ध्यान-धारणा-आसन्न होगये हैं सब ।
ज्यों ज्यों अब समाचार मिलते सुधार के हैं—
त्यों त्यों ही हृदय से प्रसन्न हो रहे हैं सब ॥
मातृ वीणापाणि, निज 'वीणा देवी' को बचाके–
सारे सत्य-मण्डलों के मोद मन भर दें ।
सत्याश्रम–सेविका औ स्वामिनी बनी वे रहें–
सत्येश्वर ऐसा दीर्घकाल अवसर दें ॥

माता 'वीणा देवी सत्यभक्त' कष्ट मुक्त होवें,
पूर्ण स्वस्थ होने की महान कृपा कर दे !
'पैगम्बर स्वामीजी' का भार वे बटावें सदा,
सत्य औ अहिंसा शुभ देश यहीं वरदें ॥

६१– हाथी के दांत न पाला हूँ

तुमको जो जीवन में समझे मैं पिये हुये वह प्याला हूं;
जाने पर समझूंगा तुमको–वह आसव कभी न ढाला हूं !
मैं वह साकी हूं जो मयखाने में रहता है दूर नहीं;
दिलदारी सुरा, सुरा ही दिल–मैं उसको पीनेवाला हूं !
मरने पर सिर्फ फातिहा पढ़ना या मर्सिया सुनाना ही—
मेरे जीवन का मर्म्म नहीं–खुद मधुकर हूं, मधुशाला हूं !
तुम सत्यसमाज–प्रवर्तक हो, स्वाभाविक सत्यसमाजी मैं;
जितना भी हूं व्यवहारिक हूं.– हाथी के दांत न पाला हूं !
मेरा अन्तर मनहार रहा तब रहते भव तुमको जाने–
जाने पर जान सका तो क्या ? मैं इस मत का रखवाला हूं !
जीवन ने जीवन को जीवन में पहचाना वह जीवन है—
मरने पर निन्दा देने वालों में मैं सदा निराला हूं !
प्रतिमा पर फूल चढ़ा अभिनन्दन में जो जीवन टाल रहे–
उन शिष्टों के इस चक्रव्यूह में पाता मैं अँधियाला हूं !
जीवन में जिसे उतार न पाये, पीछे अगरु सुगन्धि लिये,
आरती हेतु सब दौड़ पड़ें, जानता इसे न उजाला हूं !
कर वाहन को चन्दन-चर्चित, कर्पूर-वर्तिका दिये जला—
मन्दिर की चमक बढ़ा आये, मैं इसका नहीं मसाला हूं !
इस अन्धे जग को दृष्टि-भेंट कर इसे बहिश्त बनाने को—
आया प्रकाश का पुञ्ज लिये कर पापों का मुंह काला हूं !
'पैगम्बर-सत्यभक्त' जीवन की कला देरहे, जो जग को—
उसकी ग्राहकता लिये हुये मैं गुण ग्राहक-मतवाला हूं !
हाथी के दांत न पाला हूं ॥

सत्यप्रेमी पं० सूरजचन्द्र जी सत्यालंकार की रचनाएँ

६३— चतुर दूत

जय सत्येश्वर के अमर दूत ॥

उस परम पिता की संपत के संरक्षक संवर्धक सपूत। जय.

कृति भक्ति, ज्ञप्ति के मूल मिले। सत्यामृत-सिंचित पुष्प खिले ॥

तू मालाकार विचित्र बना, ये सुमन विविध, पर एक सूत।

जय सत्येश्वर के अग्रदूत ॥ १ ॥

सकुचित-भाव का काल बना। यह तेरा हृदय विशाल बना ॥

अपनी गरिमाका परम धनी, पर सदा अहं कृति से अछूत।

जय सत्येश्वर के शुद्ध दूत ॥ २ ॥

अब सत्यभक्त का पद पवित्र। ध्रुव धन्य बना प्रिय विश्वमित्र ॥

जब सत्य-ध्वजधर सूर्यचन्द्र, तब भागा भ्रमतम भेदभूत।

जय सत्येश्वर के चतुर दूत ॥ ३ ॥

६४— अमर आशा

तुम्हारा हृदय तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारा अहं तुम्हारा चित्त।

तुम्हारा सारा इन्द्रिय-ग्राम, तुम्हारा देह तुम्हारा वित्त ॥

तुम्हारा बहिरंतर सर्वस्व, सत्य की सेवा में संप्राप्त।

इसीसे सत्यभक्त हम तुम्हें समझते हित-उपदेष्टा आप्त ॥ १ ॥

जगत के ये सारे मतिमान, तुम्हें यदि नहीं समझते आज।

उगेगा निश्चित वह दिन दिव्य, आयगा मानवता का राज ॥

सकल राष्ट्रों में होगा व्याप्त, तुम्हारा प्यारा सत्यसमाज।

बनेगा भव्य नया संसार, रहोगे तुम सबके सिरताज ॥ २ ॥

सभी धर्मालय होंगे एक, सत्य ही होगा सबका इष्ट।

अहिंसा मां का आशीर्वाद, दूर कर देगा सभी अरिष्ट ॥

भक्ति का ध्रुव साधन स्वीकार सत्य सेवा होगा उद्दिष्ट।

नष्ट होगा अनिष्ट तमतोम, रहेगा सूर्यचन्द्र अवशिष्ट ॥ ३ ॥

६५-- सत्यभक्त से

भगवान सत्य के भक्त वीर ।

तन मनमें भर साहस प्रचण्ड, कन कनमें भर कमनीय कांति ।
चितवनमें भर सुखमय उमंग, जीवन में भर सौन्दर्य शांति ।
लवणोदधिमें भर मधुर नीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ १ ॥

भयप्रद कतिपय अंधे विचार, अरु गतानुगतिमय मूढ़ भ्रांति ।
क्षणमें समूल हो जांय क्षार, फैलाना ऐसी प्रबल क्रांति ।
पर रहना अति गम्भीर धीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ २ ॥

तुमको समझेगा राम कृष्ण ब्रह्मा शंकर धर्मावतार ।
ईसामसीह जरथोस्त बुद्ध, पैगम्बर पुरुषोत्तम उदार ।
तुमको मानेगा महावीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ ३ ॥

तुम तेजपुञ्ज तुम दिव्य ज्योति, तुम प्रिय स्वदेश के रत्न लाल ।
तुम स्वाभिमान की विमल मूर्ति, तुम विश्वप्रेमके गृह-विशाल ।
तुम कुरूढ़ियों के लिये तीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ ४ ॥

कह "लघुवय वरका है सुभाग", बच्चों पर करते अनाचार ।
हा ! बाल-वृद्ध-अनमेल ब्याह, अबलाओं पर भीषण प्रहार ।
विगलित करना वैधव्य-पीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ ५ ॥

इन पढ़े लिखोंकी सब विभूति, जल बलकरके होरही छार ।
बेकार फिरें क्या करें हाय, इनमें न कला कौशल प्रचार ।
इनको बतलाना सुतदबीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ ६ ॥

ये मुफ्तखोर अज्ञान बाल, मुनि-साधु नामधारी गँवार ।
खाते औरोंका व्यर्थ माल, लोभी लम्पट पूरे लबार ।
हटवाना इनकी बुरी भीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ ७ ॥

है घर घरमें डाकिनी फूट, "तू तू मैं मैं" हा ! लूटमार ।
आपस आपसमें भेदभाव, हा ! कैसे संकीरण विचार
विहग नवयुगकी खर समीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ ८ ॥

हैं बड़े बड़े ये धनी सेठ, जिनकी सम्पतिका नहीं पार ।
औसर, मोसर, गंगोज भोज, ही में व्यय करते हैं असार ।
क्यों हैं लकीर के ये फकीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥ ९ ॥
लो पकड़ एक कर में कृपाण, उसको करलो फिर तीक्ष्ण धार ।
फिर काट कुकर्मों का वितान, हिम्मत मत जाना वीर हार ।
है अचल धर्मकी यही सीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥१०॥
जीवन है समरस्थल महान, होकर सतर्क करना विहार ।
है विजयलाभ अतिकठिन काम, पग पग पर रहना होशियार ।
यह 'सूर्यचन्द्र' विनती अखीर, भगवान सत्यके भक्त वीर ॥११

६६- सत्यलोक का यात्री

तुम सत्यलोक जाकर आये ।
सत्येश्वर भगवती अहिंसा माँ के दर्शन पाये ॥
तुम सत्यलोक जाकर आये ॥ १ ॥
शांति कला लक्ष्मी सरस्वती हिल मिलकर रहती हैं ।
देवि दया भी प्राण-हरण तक न्याय हेतु सहती हैं ।
सद् गुण--दुर्गुण सभी खड़े सेवामें शीश झुकाये । तुम. ॥ २ ॥
भक्तिप्रेम--आदर--वत्सलता सद् विवेक के चेरे ।
वैज्ञानिक चिन्तन चलते हैं नित्य प्रेम के प्रेरे ॥
सब प्रकार के मोह धुले जब धर्म कुण्डमें न्हाये । तुम. ॥ ३ ॥
भूदेवी ने मर्मस्पर्शी अद्भुत नृत्य दिखाया ।
जिसे देख तुमने भक्तों में अपना नाम लिखाया ।
अवतारी जिन बुद्ध रसूलों का सन्देशा लाये । तुम. ॥ ४ ॥
सर्वेश्वर भगवान सत्य ने सिर पर हाथ फिराया ।
निर्भय बन प्रचलित पापों पर तुमने वज्र गिराया ।
दम्भ और पाखंड दूर कर सभी विकार हटाये । तुम. ॥ ५ ॥
संस्कारों में समतावर्धक कोमल हृदय तुम्हारा ।
किन्तु स्वार्थमय अन्धविचारों को सदैव धिक्कारा ।
सब विकार को दूर हटाकर मौलिक शास्त्र बनाये । तुम. ॥ ६ ॥

सत्याश्रम का धर्मालय हो सत्यसमाज सहारा।
धर्म जातियों के संगम का तीर्थ पवित्र हमारा।
भारतीय मध्यम प्रदेश वर्धा में केन्द्र सुहाये। तुम. ॥ ७ ॥
उठो, चलो, बढ़ते ही जाओ सत्यप्रेम फैलाओ।
अखिल विश्व को मानवता का मंगल पाठ पढ़ाओ।
सदा आत्मनिर्भर बनकर के सबको तत्व सिखाये। तुम. ॥ ८ ॥

६७ — पितृदेव

पितृदेव सत्यभक्त हैं दुनिया के सहारे।
शिव सत्य-मयी जगदंब अहिंसा के दुलारे। अवलम्ब हमारे ॥ १ ॥
पशुता हटाके जिनने सिखाया मनुष्यपन।
सब धर्म जातियों में किया शुद्ध सम्मिलन ॥
सांस्कृतिक ऐक्य से, सकल विकार सुधारे। अवलम्ब हमारे ॥ २ ॥
जो सत्य मनुज जाति के, बने धर्म पिता।
नव-संघ-स्थापना में शक्ति है अपरिमिता ॥
सब द्रोह मोह छोड़ शुद्ध तत्व विचारे। अवलम्ब हमारे ॥ ३ ॥
जो विश्व प्रेम की उदार नीति सिखाये।
व सत्यसमाजी विशाल शास्त्र बनाये ॥
सर्वत्र सदविवेक से, विरोध विसारे। अवलम्ब हमारे ॥ ४ ॥
प्रतिभा है सर्वतोमुखी, कृति घोर तपस्वी।
आदर्श हैं वक्ता सुधी, गंभीर मनस्वी ॥
सब सर्वमान्य धर्म को जीवन में उतारे। अवलम्ब हमारे ॥ ५ ॥
मानव को चढ़ा आज रंग राष्ट्र का नशा।
दानव ने कर दी विश्व की महान दुर्दशा ॥
सन्देश सुनके आज का युग दुःख निवारे। अवलम्ब हमारे ॥ ६ ॥

६८— जय जय सत्यसमाज

जय जय सत्यसमाज।
यह निर्मल कल्याण हमारा, सन्मर्यादा का रखवारा।
जन-समाज का सच्चा प्यारा, शुभ स्वतंत्रता का ध्रुव तारा।
मानवता की लाज, जय जय सत्यसमाज ॥ १ ॥
मजहबका अब मद न दिखाना भाँति-भाँतिका भेद भुलाना।
मानव मानव सब मिलजाना, विश्व प्रेम के फूल चढ़ाना।
करना स्वागत साज, जय जय सत्यसमाज ॥ २ ॥
सर्व-धर्म सम-भाव बताना, पंथ पंथ को शुद्ध बनाना।
निज विधियों का मोह मिटाना, संग संग में मिलकर गाना।
पूजा और नमाज, जय जय सत्यसमाज ॥ ३ ॥
अंधी श्रद्धा की अँधियारी, नासमझी की नींद हमारी।
अब विभावरी बीती सारी, होगी सूरज की उजियारी,
धन्य हुए हम आज, जय जय सत्यसमाज ॥ ४ ॥

६९ चेत

अब तो दिल पहचानो।
टुकड़े टुकड़े किये देश के, लड़ लड़कर दीवानो।
अब तो दिल पहचानो ॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख क्रिश्चियन जैन बौद्ध सब आओ।
सत्यभक्त चिल्लाकर कहते एक समाज बनाओ ॥
राजनीति के चक्कर में अपनी अपनी मत तानो ॥
अब तो दिल पहचानो ॥ १ ॥
पहले सत्याश्रम वर्धा की यात्रा तो कर आओ।
सत्यामृत का पान करो नव संस्कृति को अपनाओ ॥
अन्धभक्तिवश सड़े गले उन पोथों को मत छानो।
अब तो दिल पहचानो ॥ २ ॥

सत्यप्रेममय शुभ जीवन ही सदा स्वपर सुखदाई ।
राम कृष्ण जिन बुद्ध मसीहा पैगम्बर सब भाई ॥
सर्वेश्वर भगवान सत्य के पुत्र सभी को मानो ।
अब तो दिल पहचानो ॥ ३ ॥
उन दयालु वीरों ने भी तो दुष्ट-विनाश किया है ।
गुन्डे शक्तिको कभी सफलता का अवसर न दिया है ॥
साधु भाव का दंभ दिखाकर कायरता मत ठानो ।
अब तो दिल पहचानो ॥ ४ ॥
दुनियावालो मानवता का गहरा नाद गुंजाओ ।
रूढ़ि राज्य का बन्धन तज सब, एक राष्ट्र बनजाओ ॥
जाति जाति के संगम को ही जंगम तीरथ जानो ।
अब तो दिल पहचानो ॥ ५ ॥
टुकड़े टुकड़े किये देश के लड़लड़ कर दीवानो ।
अब तो दिल पहचानो ॥

७०-- सब पैगम्बरों में समभाव

ऋषि मुनि महर्षि अर्हन्त बुद्ध पैगम्बर अवतारी मसीह ।
शरणागत वत्सल विश्वबन्धु सब थे हितेच्छु सब थे निरीह ॥
सब ही कर्मठ थे अनासक्त, निष्ठा सेवा के महास्थान ।
मनवचनकर्म से शुद्ध रहे वे प्रेमी पुरुषोत्तम महान ॥ १ ॥
सच्चे त्यागी सच्चे गृहस्थ उनका स्वभाव था सत्ययोग ।
इन सबने आकर किया दूर आलस जड़ता का महारोग ॥
ये सब कहलाये धर्म वैद्य, असहाय जनों का किया त्राण ।
बन गये शांतिप्रद क्रांतिकार, हृदयों में फूंका महाप्राण ॥ २ ॥
इन सबके नाना आयुध थे अपने शुभ गौरव के निशान ।
बलिदानों के थे बहु प्रयोग सब ही समान सब ही महान ॥
जब मिली हमें समभावदृष्टि, इन सबका समझा एक ध्येय ।
पर भिन्न भिन्न कल्पानुसार सन्तों के साधन अपरिमेय ॥ ३ ॥

उनके अनुयायी कहलाकर लड़ते क्यों आपस में अजान।
हम सब धार्मिक हैं बन्धुबन्धु करलें फिर प्रेम रहस्यगान ॥
भूलें हम झूठा भेदभाव बोलें जय जय आनन्द कन्द।
फैला छलमद का अंधकार, चमके फिर से यह सूर्यचंद ॥४॥

७१–पैगम्बरों की जय

जय जय मसीह ऋषि मुनि रसूल।
सब ही सन्तों ने पाई थी उस सत्येश्वर की चरण धूल।
जय जय मसीह ऋषि मुनि रसूल ॥ घ्रु ॥
जिन बुद्ध हुए करुणावतार, पैगम्बर थे परवरदिगार।
सब को ही उस जगदम्बा के नाना रूपों का मिला प्यार॥
जो कहते इन सब को विरुद्ध, उनके विवेक में भरी भूल।
जय जय मसीह ऋषि मुनि रसूल ॥ १ ॥
है भूल यही कि न युग देखा, युग युगका भिन्न भिन्न लेखा।
इन सबके दिलका साध्य एक, पर बनी विषम साधन रेखा ॥
जीवन चरित्र तो भिन्न रहा पर एक रहा चारित्र मूल।
जय जय मसीह ऋषि मुनि रसूल ॥ २ ॥
इन सबने दंभ नहीं माना, सीधा सच्चा यह प्रण ठाना।
दुनिया का भला विचारेंगे फिर क्यों न करेंगे मनमाना ॥
बदले में भले मिलें हमको, रसभरे फूल या तीक्ष्ण शूल ॥
जय जय मसीह ऋषि मुनि रसूल ॥ ३ ॥
सब ने सज्जन का किया त्राण, पर अन्यायों पर थे कृपाण।
कल्याण बने ये हम सबके म्रियमाण विश्वमें फूँक प्राण ॥
जो इनमें रखते विषम भाव समझो उन सबकी बुद्धि स्थूल।
जय जय मसीह ऋषि मुनि रसूल ॥ ४ ॥
सबने सिखलाया साम्यभाव, सबमें था सच्चा धर्म दाव।
आनन्दपूर्ण पथ ग्रहण किया दर्शन शास्त्रों में रख दुराव ॥
सबका जीवन था सूर्यचन्द्र के सत्यप्रेम धर्मानुकूल।
जय जय मसीह ऋषि मुनि रसूल ॥ ५ ॥

७२- चिर जीवो

चिर जीवो सत्यभक्त स्वामी।
तुम कहलाओ भूमंडल में 'सज्जन राष्ट्र पिता' नामी॥
चिर जीवो सत्यभक्त स्वामी॥ १॥

सत्येश्वर-सन्देश सुनाते रहो सर्व-हित-कामी।
सत्यसमाजी बने सकल जन प्रेम-धर्म अनुगामी॥
चिर जीवो सत्यभक्त स्वामी॥ २॥

विकृति हटाते रहो, शुद्ध संस्कृति के अंतर्यामी।
मनुज जाति को नित्य बनाते रहो ऐक्य पथगामी॥
चिर जीवो सत्यभक्त स्वामी॥ ३॥

धन्य तुम्हारी सर्वतोमुखी सेवाएँ निष्कामी।
सूर्यचन्द्रमय अखिल सृष्टि को करो सत्य सुख-धामी॥
चिर जीवो सत्यभक्त स्वामी॥ ४॥

७३- सत्यसाहित्य-ज्योति

सत्य-शिव-सुन्दर-ज्योति जगी।
चिदानन्दमय, सत्साहित्य वर्तिका में सुलगी॥
सत्य-शिव सुन्दर ज्योति जगी॥ १॥

सत्य-राज्य के 'दरबारी' बन, सत्यभक्तजी आये।
मृत-मानवहित, संजीवनप्रद 'सत्यामृत' घन लाये॥
परम 'दिव्य-दर्शन' पाकर के, शांति बनी अनुरागी।
सत्य शिव सुन्दर-ज्योति जगी॥ २॥

विश्व राष्ट्र के लिये सरलतम 'मानवभाषा' आई।
सु लिपि समस्या हल करते ही सज्जनके मन भाई॥
'निरतिवाद' की पद्धति से अब होगी दूर ठगी।
सत्य शिव सुन्दर ज्योति जगी॥ ३॥

'जीवन-सूत्रों' से संगठित 'नयासंसार' बसेगा।
'क्या संसार दुःखमय है ? यह मनन विवेक करेगा॥
अग्नि-परीक्षा से वैज्ञानिक सुख की खोज लगी।
सत्य शिव सुन्दर ज्योति जगी॥ ४॥

'सत्येश्वर-गीता'-आश्रित कर्तव्य-विचार करेंगे।
'वन्दनादि' सद्बोध गीत के मन में भाव भरेंगे॥
'मुस्लिम' हिन्दु भाइयों से सरस सम्बन्ध सगी।
सत्य शिव सुन्दर-ज्योति जगी॥ ५॥

'नागयज्ञ' से रुच सांस्कृतिक सत्य सन्देश मिलेगा।
'बुद्ध-हृदय' अरु की कुरान का संगम कुञ्ज खिलेगा॥
'जैन धर्ममीमांसा' की जो आत्मकथा सगी।
सत्य-शिव सुन्दर ज्योति जगी॥ ६॥

'गागर में सागर' 'संतान समस्या' उसी सुलझेगी।
'मन्दिर के चबूतरे' पर क्या शीलवती उलझेगी॥
'मरजप्रश्न' गुत्थियाँ सुलझीं' मन की भ्रांति भगी।
सत्य-शिव-सुन्दर ज्योति जगी॥७॥

क्यों न बनेगा आज नई 'दुनिया का नया समाज'।
'राम' ईसाई धर्म कृष्ण गीता का होगा राज॥
स 'चतुर महावीर' के पथ पर दृष्टि अखंड लगी।
सत्य शिव सुन्दर ज्योति जगी॥ ८॥

'सत्याश्रम का धर्मालय' ही सबका तीर्थ स्थल है।
सत्य अहिंसा के सुपुत्र सब सन्त जनों का बल है॥
राग द्वेष भय-क्रोध लोभ से चित्त वृत्ति विलगी।
सत्य-शिव सुन्दर-ज्योति जगी॥ ९॥

जन-सेवक को छोड़ किसे 'क्यों सलाम करूँ' कहो।
सबका गौरव समझ नई दुनिया में सभी रहो॥
सूर्यचन्द्र के सत्यप्रेम में सन्मति रहे रँगी।
सत्य-शिव-सुन्दर-ज्योति जगी॥१०॥

७४-- सत्यसमाज की सीख

सत्यसमाज सिखाना हमको, आपस में मिल जाना ।
हत्तंत्री के विविध स्वरों से, मधुरी तान सुनाना ॥ १ ॥
आओ सब बिछुड़े भाई, सब एक समाज बनाओ ।
जुदे जुदे आचार रहें पर प्रेम प्रभाव बढ़ाओ ॥ २ ॥
अवतारी जिन बुद्ध मसीहा पैगम्बर सब भाई ।
सत्येश्वर हैं पिता सभी के देवि अहिंसा माई ॥ ३ ॥
उनके अनुयायी कहलाकर वृथा परस्पर लड़ते ।
दंभ और दुःस्वार्थ भाव के जो विभ्रम में पड़ते ॥ ४ ॥
विविध रहें व्यापार किन्तु सबको ही द्रव्य कमाना ।
उसी तरह नाना पंथों से परम सौख्य को पाना ॥५॥
एक भवन के विविध द्वार हैं किसी ओर से जाओ ।
एक सरोवर विविध घाट हैं, कहीं बैठकर न्हाओ ॥६॥
विविध पंथ को समझ जलाशय, जलको समझो धर्म ।
निर्मल जल सम सत्य ढूँढ लो यही धर्म का मर्म ॥७॥
सभी जलाशय में मल रहता छान छान जल पीओ ।
सभी नहीं तुम चातक पंछी जो नभजल से जीओ ॥८॥
ले देकर जैसे तैसे ही अपना काम चलाना ।
द्रोह मोह में सत्यप्रेम के सूर्यचन्द्र चमकाना ॥ ९ ॥

सत्यालंकार श्री उदयकरण जी सुमन प्रभाकर की रचनाएँ

७५— विश्व ने वरदान पाया

विश्व ने वरदान पाया ।
सुप्त मानस की नसों में, क्रांति का तूफ़ान छाया ॥ विश्व. !
हिलगये पाये धरा से, पापियों के, शोषकों के ।
हिल गये पाये धरा से, अन्ध जड़ ।। पोपकों के ॥

पापका पतझड़ हुआ, अब पुण्यरूप वसन्त आया।
विश्व ने वरदान पाया ॥ १ ॥

मिट गया दुर्भाग्य जगका, विश्वका सौभाग्य जागा।
तोड़ कारा दीनता की, मनुज का विश्वास जागा ॥
चपल चंचल उर्मियों सा, विश्व में उत्साह छाया।
विश्व ने वरदान पाया ॥ २ ॥

दिग्दिगन्तों मे उमड़ती सत्यभक्तों की पुकारें।
डगमगाकर गिर रही हैं, तिमिर की काली दिवारें ॥
सिन्धु के उस पार जाकर क्रांतिका सन्देश आया।
विश्व ने वरदान पाया ॥ ३ ॥

दे चुनौती वेदना को, नव-सुखों का स्रोत फूटा।
सहज शाश्वत साधना कर विश्व ने वरदान लूटा ॥
सत्यता-सौभाग्य-दिनकर-रश्मिकर ले मुसकराया।
विश्व ने वरदान पाया ॥ ४ ॥

तुंग हिमगिरिसा समुन्नत सिन्धुसा विस्तार जिसका।
ज्ञान संयम त्याग सेवा से भरा है प्यार जिसका ॥
नित्य नूतन रूप लेकर स्वयं योगीराज आया।
विश्व ने वरदान पाया ॥ ५ ॥

सिन्धु-सी कर गर्जना युग पार्थ-प्राणों को जगाने।
सत्य का लेकर सुदर्शन, पाप शोषण को मिटाने ॥
ताप सारे नष्ट करने, सत्य का सन्देश लाया।
विश्व ने वरदान पाया ॥ ६ ॥

७६- ले अँगडाई

जग जाग जाग ले अंगड़ाई।
है उदय हुआ सौभाग्यसूर्य जगतीपर छाई तरुणाई ॥ जग. !
सत शिव सुन्दर उगी लालिमा ? दूर भगी, घन तिमिर कालिमा।
प्राची में भर नवल उमंगें, स्वर्णिम किरणावलि छाई ॥
जग जाग जाग ले अंगड़ाई ॥ १ ॥

नव वसन्त के नवल राग सी। नवल विश्व के नवल फागसी।
सत्यभक्त के नव विचार की, बजी विश्वमें शहनाई ॥
जग जाग जाग ले अंगड़ाई ॥ २ ॥

नव आशा, नव उल्लास लिये। शुचि सुन्दर सरल सुहास लिये।
कण कणमे फूट पड़ी वाणी, यह सोई दुनिया चौंकाई ॥
जग जाग जाग ले अंगड़ाई ॥ ३ ॥

युग के भाग्य प्राण जगाने। सत्य दीपिका ज्योति जलाने।
दिव्य ज्योति ले मानवता ही, सत्यभक्त बनकर आई ॥
जग जाग जाग ले अंगड़ाई ॥ ४ ॥

७१- सत्येश्वर के दूत से

सत्येश्वर के दूत अमर हे, आज विश्व आलोकित करदो।
मानवता का बिगुल फूँककर, तुम जन जनमें जीवन भरदो ॥
आज अर्थ की सीमाओं में, मानव का विश्वास खोगया।
आह कर उठा आकुल जीवन, मानवका मृदु हास खोगया ॥
झूठी जगत की सीमाओं में, मानव की हर आश खोगई।
छिन्न विश्व की दानवता में मानवका हर सांस खोगया ॥
तुम आशा के अवलम्बन बन, मनमन में आशाएँ भरदो।
सत्येश्वर के दूत अमर हे। आज विश्व आलोकित करदो ॥
झूठा काम वासना में फँस, मानव का मन प्राण खोगया।
धन लिप्सा के मद में आकुल, मानव का अरमान सोगया ॥
चिंता ज्वाला में जल मानव, मानव से कंकाल होगया।
मानवता से हीन विश्वपर, मानव का बेहाल होगया ॥
सत्यामृत रसधार पिलाकर, तुम जीवन नव निर्मित करदो।
सत्येश्वर के दूत अमर हे, आज विश्व आलोकित करदो ॥

७८- तुम लाये हो !

तुम सत्य खोजकर लाये हो।
तुम अन्धकार के परदे से, जाज्वल्यमान बन आये हो ॥ तुम. !
तुम सागर से गम्भीर गहन, तुम वसुधा से हो सहनशील।
तुम अम्बर से हो उर उदार, तुम तूफानों से प्रगतिशील ॥
मृदु-मुसकानों की छायामें, तुम सत्य सन्देशा लाये हो।
तुम सत्य खोजकर लाये हो ॥ १ ॥

तुम मानवताके अमर भाल। जग तुमको पाकर है निहाल।
तम नाम मिटाने को आये, बन ऊषा से तुम लाल लाल ॥
तुम हो प्रकाशके सूर्य अमर सब जगह किरण फैलाये हो।
तुम सत्य खोजकर लाये हो ॥ २ ॥

तुम शेष जगतके सत्यसार। मिटता जिससे कटुमन विकार।
तुम सत्य अहिंसाके प्रतीक, तुमको सब मानव एक सार ॥
तुम सूखे जगके प्राणों में, मधुमास लुटाने आये हो।
तुम सत्य खोजकर लाये हो ॥ ३ ॥

७९— युगपति की वर्ष गांठ !

आज तुम्हारी चरण चाप सुन, सोया मानव जाग उठेगा।
आज तुम्हारी चरण चाप सुन, अत्याचारी भाग उठेगा ॥ १ ॥
युग युग के पीड़ित मानव में, मचल उठेंगी महा क्रांतियाँ।
तिमिर मिटेगा ज्योति जलेगी, जगकी होंगी दूर भ्रांतियाँ ॥
सूरज बनकर चमक उठेगा, सत्येश्वर--सन्देश तुम्हारा।
दूर गगन में चमक उठेगा, सत्यअहिंसा का ध्रुव तारा ॥
दानवता की कुटिल चिता पर, महापाप का फाग उठेगा।
आज तुम्हारी चरण-चाप सुन, सोया मानव जाग उठेगा ॥ २ ॥
सत शिव सुन्दर ज्योति जलेगी, आलोकित होगा जग सारा।
जगको धोने बह निकलेगी, 'सत्यामृत' की पावन धारा ॥

युगकी लेकर नई व्यवस्था, 'निर्विवाद' आयेगा जगमें ।
गले मिलेंगे भाई भाई, प्रेम प्रवाह भरे रग रगमें ॥
'सुमन' खिलेंगे कली हँसेगी, वैरभाव सब भाग उठेगा ।
आज तुम्हारी चरण चाप सुन सोया मानव जाग उठेगा ॥ ३ ॥

'मानव भाषा' युक्त बनेगी, 'विश्व राष्ट्र' भी बन जायेगा ।
प्रान्त-देश का भेद मनुजको, फिर न कभी भी खल पायेगा ॥
साम्यमंत्र की अरुण लालिमा, सारे जग में छा जायेगी ।
खुशियों का ले मधुर सबेरा, जगती तल में मुस्कायेगी ॥
नव जीवन वरदान लिये यह, जग का जीवन जाग उठेगा ।
आज तुम्हारा चरण चाप सुन, अत्याचारी भाग उठेगा ॥ ४ ॥

आज तुम्हारे सन्देशों से, जगको यह वरदान मिलेगा ।
जिससे स्वर्ग मिलेगा घर को, मनको भी भगवान मिलेगा ॥
जहाँ पड़ेंगे चरण तुम्हारे, बेईमानी तड़प उठेगी ।
कड़क उठेंगी कोटि बिजलियाँ, द्वेष वृत्ति सब लरज उठेगी ॥
सागर के भी मधुर स्वरों में, जय जय स्वर गुँजार उठेगा ।
आज तुम्हारी चरण चाप सुन, सोया मानव जाग उठेगा ॥ ५ ॥

तुम असीम में सीमित जगती, मिलकर सीमाहीन बनेगी ।
वैभव और गरीबी तट में, तेरी वाणी नीर बनेगी ॥
रस पूरित हो सूखी सरिता, मचल उठेगी नई जवानी ।
छिड़ जायेगी दिग् दिगन्तमें, नये विश्व की नई कहानी ॥
नया साज ले नये सुरों में, झंकृत हो नव राग उठेगा ।
आज तुम्हारी चरण चाप सुन, सोया मानव जाग उठेगा ॥ ६ ॥

आज तुम्हारी वर्षगांठ पर, उदय चला हो आशा तारा ।
दूर क्षितिज में लाली फैली, आशाहीन हुआ अंधियारा ॥
आज तुम्हारी पूजा होगी, सत्य बनेंगे स्वप्न तुम्हारे ।
विजयोल्लास मिलेगा जग को, मानव जीते दानव हारे ॥
तेरे स्वर का शंख नाद सुन, कायर दम्भी भाग उठेगा ।
आज तुम्हारी चरण चाप सुन, सोया मानव जाग उठेगा ॥ ७ ॥

उच्च हिमालय के शृंगों में, सागर के भीतर धरती पर।
दिग्दिगन्त में गहन गहन में, कुटिया में महलों के भीतर॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, सब में तू गुंजार उठेगा।
तेरी पूजा में पैगम्बर, मानव सर हर बार झुकेगा॥
तेरे दर्शन से मन मनमें, सत्येश्वर का राग उठेगा।
आज तुम्हारी चरण चाप सुन, सोया मानव जाग उठेगा॥ ~ ॥

८० - ज्वाला ?

कैसी जागी जग मे ज्वाला।
मदमस्ती में झूम झूम नर, पीता है पापों की हाला॥
कैसी जागी जगमे ज्वाला॥ १॥

सत्येश्वर का ज्ञान भुलाकर, दुष्कर्मों को है अपनाया।
झूठी छुआछूत में फँसकर, नर ने नर को है ठुकराया॥
मानवता का बुझा दीप है, दानवता से है जग काला।
कैसी जागी जगमें ज्वाला॥ २॥

आंखों के रहते सब अंधे अन्धकार है जगमें छाया।
मिटी चेतना और सभ्यता, सारा जीवन है अकुलाया॥
शेष रही है सुरा सुन्दरी साकी की मदमय मधुशाला।
कैसी जागी जगमें ज्वाला॥ ३॥

सत्शिव सुन्दर निकलगये हैं, केवल अशिव बचा है छनकर।
कदम कदम नर शोषण करता, नरक रचाता पापी बनकर॥
लोलुप बनकर खड़ा हुआ है दुष्कर्मों का लेकर प्याला।
कैसी जागी जगमें ज्वाला॥ ४॥

कर्म-धर्म सब छोड़ा नर ने, पापों का संसार बनाया।
सत्यभक्त की वाणी छोड़ी, सत्येश्वर सन्देश भुलाया॥
सत्यामृत को ठुकरा करके पीता है कटु विषका प्याला।
कैसी जागी जगमें ज्वाला॥ ५॥

८१-- रोते तारे

रोते आज गगन के तारे !

अम्बर की छाती पर रोता, चन्दा अपने पंख पसारे ।
रोते आज गगन के तारे ॥ १ ॥

युग युग की साधना सफलकर सुन्दर नीड़ बनाया ।
सह न सका झंझा का झोंका तिनकों को बिखराया ॥
टूटा नीड़ मिटी आशाएँ पंछी है मन मारे ।
रोते आज गगन के तारे ॥ २ ॥

अंतरीक्ष पर झिलमिल करता, ज्योति-पुञ्ज सा तारा ।
कर न सका दो बोल निशा से, जय से पहले हारा ॥
आज वहीं पर चमचम ढलके, आंसू पानीदार सितारे ।
रोते आज गगन के तारे ॥ ३ ॥

सागर की गोदी से उमड़ा, चारु चंद्र जल पाने ।
किन्तु मिलन से पहले आया झोंका दीप बुझाने ॥
सागर की छाती से चिपटा, अब रोता मन मारे ।
रोते आज गगन के तारे ॥ ४ ॥

जगती का तम स्वयं निगलकर आलोकित जग करता ।
पर न चैन से जलपाता वह झंझाओं से मरता ॥
आज उसीकी अमर चिता-पर सिसकें शलभ बिचारे ।
रोते आज गगन के तारे ॥ ५ ॥

सतत साधना कर मानव ने मानवता को पाया ।
पर मानव पर आज पड़ी है, दानवता की छाया ॥
मानवता का पतन देखकर रोते जन रखवारे ।
रोते आज गगन के तारे ॥ ६ ॥

बहुत दिनों से दानव ने था, मानव को अकुलाया ।
इसीलिये तो आज विश्व में, सत्यभक्त है आया ॥
फिर भी मानव समझ न पाये, पागल भूल रहे हैं सारे ।
रोते आज गगन के तारे ॥ ७ ॥

८२-- मानव गीत

हम इन्सान, हम इन्सान।
हम जीवन के गुरुत्व हैं, हम दुनिया की शान।
हम इन्सान हम इन्सान ॥ १ ॥

सत्यलोक से अमर ज्योति जो वसुधा तलपर आई।
आज वही मानवता बनकर, मानव मनमें छाई ॥
दिव्यालोक जगतपर फैला, अकुलाये हैवान।
हम इन्सान, हम इन्सान ॥ २ ॥

हम ही बुद्ध वीर पैगम्बर ईसा बनकर आये।
कभी राम औ कभी कृष्ण बन, पुरुषोत्तम कहलाये ॥
शैतानी कर कभी हमीने खो दी अपनी शान।
हम इन्सान, हम इन्सान ॥ ३ ॥

शोणित के प्यासे बन, भाई ने भाई को मारा।
भेदभाव से दुःस्वार्थों से वही खून की धारा ॥
भेदभाव को नष्ट करेगी सत्यभक्त सन्तान।
हम इन्सान, हम इन्सान ॥ ४ ॥

सत्यामृत पी करके हमने, मनका मैल मिटाया।
जीवन सूत्रोंको पढ़ हमने, जीवन सफल बनाया ॥
सत्यसमाजी हम हैं मानों, सब धर्मों की शान।
हम इन्सान, हम इन्सान ॥ ५ ॥

८३— सत्यामृत पीले !

सत्यामृत पीले और पिलादे।
आज मोक्ष का द्वार खुला है, मोक्ष-मार्ग अपनाले।
सत्यामृत पीले और पिलादे ॥ १ ॥

आज जगत में सत्य-सुरसरी, 'सत्यभक्त' हैं लाये।
पावन तीर्थ बना है 'संगम' जीवन ज्योति जगाये ॥
दुनिया में नव ज्योति जगाने अपने कदम बढ़ादे।
सत्यामृत पीले और पिलादे ॥ २ ॥

'सत्यभक्त' ने सत्य चन्द्रिका घट घट में फैलाई।
'सत्यामृत' का पान कराकर, दुनिया स्वर्ग बनाई॥
भेदभाव को आज भुलाकर, जग को एक बनादे।
सत्यामृत पीले और पिलादे॥ ३॥

मानव अहंभाव में भूला, भूलगया मानवता।
घर घर में घट घट में छाई दोजख की दानवता॥
सत्यभक्त का अनुयायी बन, मानवता फैलादे।
सत्यामृत पीले और पिलादे॥ ४॥

धर्म भुलाकर यह मतान्ध जग जगमें नरक बुलाता।
छूट गया है टूट गया है मानवता से नाता॥
समभावी साधु बने जग ऐसी लगन लगादे।
सत्यामृत पीले और पिलादे॥ ५॥

८४—'आधुनिक पैगम्बर'

तू पैगम्बर बनकर आया।
दिव्य ज्योति ले जगती तलपर, सत्प्रकाश फैलाया।
तू पैगम्बर बनकर आया॥ १॥

एक दिवस गूंजेगी जग में, तेरी गौरव गरिमा।
नभ जल थल, सब धन्य बनेंगे, गाकर तेरी महिमा॥
हम हैं कितने धन्य कि जिनने तेरा दर्शन पाया।
तू पैगम्बर बनकर आया॥ २॥

दीवाली आई तू आया, जगमें जगमग ज्योति जगी।
मिटा अवनि का अन्धकार सब, भू सारी सौहार्द पगी॥
हित अनहित की ज्ञान लब्धि से, जन-जन मन हरषाया।
तू पैगम्बर बनकर आया॥ ३॥

भ्रांतिवश हो मूक मानव, गरल पीने को चला था।
मोहने मद ने भ्रमों ने, हाय मानव को छला था॥
विकट समयमें सत्यभक्त बन, सत्यसँदेशा लाया।
तू पैगम्बर बनकर आया॥ ४॥

रक्त-पथ-पंथी जगतने, हाय ! खोदी चेतना जब।
मिट चुका आलोक सारा, छिन गया आनन्द भी तब॥
पिला दिया 'सत्यामृत' तूने मुर्दा जगत जिलाया।
तू पैगम्बर बनकर आया॥ ५॥

८५-- हमारा झंडा

झण्डा ऊंचा रहे हमारा।
इस झण्डे के नीचे बहती, सत्यामृत की पावन धारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ १॥
धर्म जाति के भेद मिटाकर। प्रेम विवेक हृदय में लाकर॥
आज करें उत्तोलन जगमें, सत्यभक्त का यह प्रण प्यारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ २॥
मुस्लिम जैन हिन्दु ईसाई। हम हैं सारे भाई भाई॥
घट घट में जयमन्त्र गुँजा दें विश्व-हितैषी अनुपम नारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ ३॥
सारे जग के सब तीर्थंकर। सारे जग के सब पैगम्बर॥
सत्य अहिंसा के भक्तों की सन्तति की आशा का तारा।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ ४॥
निरविवाद का पथ दिखलायें। मानव भाषा एक बनायें॥
दुष्कर्मों को दूर भगायें, शोणित की फिर बहे न धारा॥
झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥ ५॥

साहित्यरत्न श्री रामगोपाल जी शारद की रचनाएँ

८६- जय हो !

जिसने मानवता के हित में, जीवन ज्योति जलाई।
जिसने पैगम्बर बन जगको; सच्ची राह दिखाई॥
सर्व-धर्म समभाव परस्पर, जिसका मंत्र रहा है।
कण्टकमय सर्वथा निरंतर; जिसने मार्ग गहा है॥

जिसने निज विचार धारा से नव साहित्य सृजाया।
एक धर्म औ एक जाति का जगको पाठ पढ़ाया॥
राम कृष्ण औ बुद्ध मुहम्मद, वन्दनीय सब जिसको।
निरतिवादका मार्ग रहा, अभिनन्दनीय बस जिसको॥
जिसका शुद्ध सत्य मन्दिर समता का मंत्र बताता।
देवि अहिंसा सत्येश्वर, जिसके मुख्याधिष्ठाता॥
जिसका सत्यसमाज निरंतर करता सत्य सृजन है।
धन्य धन्य जिससे होजाता इस जगका जनजन है॥
करते अभिनन्दन हम उनका पथ अनंत सुखमय हो।
छप्पनवीं इस वर्ष ग्रन्थिपर सत्यभक्त की जय हो॥

८७- दुवाए सत्यभक्त

आज हर जर्रे मे आती है दुवाए सत्यभक्त।
पत्ते पत्ते और हर जन में समाए सत्यभक्त॥
मिटरही दुनियाँ जो है जंगो जेहद के दौर मे।
सत्य का उसके लिए पैगाम लाए सत्यभक्त॥
जब तलक होगी नहीं इन्सानियत इन्सान में।
तब तलक इन्सान क्या यह है सदाए सत्यभक्त॥
जितने मजहब हैं जहां में उनका लेलेकर निचोड़।
सत्यमन्दिर एक हैं सुन्दर बनाए सत्यभक्त॥
सत्य मन्दिर सत्य पूजा सत्य है उनका समाज।
सत्य की वंशी नई घर घर बजाए सत्यभक्त॥
वासतव अँधियाले जिनको सूझता कुछ भी न था।
ज्ञान की पुर रोशनी उनको दिखाए सत्यभक्त॥
फिरसे 'शारद' एक नई दुनियाँ बसाने के लिये।
आसमाँ से उतरकर धरती पै आए सत्यभक्त॥

८८– जय जयकार हो !

नये व्यक्ति हों और भव्य व्यवहार नया हो ।
नई भावना नये भाव व्यापार नया हो ॥
नई भूमि हो नया व्योम संस्कार नया हो ।
नव समाज के साथ सभ्य संसार नया हो ॥
नया साध्य हो साधना, नया राष्ट्र निर्माण हो ।
नये भक्त पूजा नई और नया भगवान हो ॥ १ ॥

बदले सरिता सिन्धु शैल पाहन भी बदले ।
बदले स्निग्ध समीर हव्यवाहन भी बदले ॥
बदले मानव जाति और मानवता बदले ।
बदले दानव सभी द्वन्द्व दानवता बदले ॥
बदले मर मर प्राचीनता, समता के उत्थानसे ।
जागरूक विश्वकी शक्ति हो नूतन राष्ट्र विधानसे ॥ २ ॥

ऐसा हो संसार किसी से द्वेष न होवे ।
सब पूरक हों बनें कहीं विद्वेष न होवे ॥
कटुता-मय अपवाद भरा कुछ भेष न होवे ।
दानवता का कहीं नाम भी शेष न होवे ॥
सब मिलें परस्पर प्रेमसे नया प्रेम प्रस्ताव हो ।
धार्मिक विवाद के ध्वंसपर सर्व धर्म समभाव हो ॥ ३ ॥

जनजन सब बनजायँ अहिंसा सत्य उपासी ।
मानवता के अमर उपासक औ अविनाशी
बदले धरती व्योम और बदलें सब तारे ।
बदल जाय अमिताभ निशाकर किरण पसारे ॥
विध्वंस सजग होकर सकल जीर्ण तत्व म्रियमाण हो ।
उस महा ध्वंसकी नीवपर नवता का निर्माण हो ॥ ४ ॥

इस साधन की अमर ज्योति जगमें छिटकाने ।
भूपर उतरें सत्यभक्त समता सिखलाने ॥

रच कर सत्य समाज सत्य की ज्योति जलाई।
दानवता हिलगई मृदुल मानवता आई॥
पैगम्बर के पैगाम का विश्व विदित विस्तार हो।
श्री 'सत्यभक्त' की सर्वदा जगमें जय जयकार हो॥५॥

८९– श्री सत्यभक्ताष्टकम्

सम्स्थापितो सत्यसमाज संस्था संलग्न सत्येश्वर प्रेमपुञ्जो।
सम्पूजितो बोधमयीमहिसाम् सद्धर्मवान् भावुक सत्यभक्तः॥१॥
निशाकरत्वेन निशाकरत्वं प्रभाम् संगृह्य प्रभाकराग्र।
संभावितो भाग्य सद्बलेन सद्धर्मवान् धार्मिक सत्यभक्तः॥२॥
प्रजा परित्राण कर्ता पुनिष्ठा समन्वयं धर्म विदां समाजम।
हितानुबंधो जन संकुलानाम प्रियवरो बान्धव सत्यभक्तः॥३॥
संरक्षितो येन समस्त शक्त्या संवर्धते मानवता लताया:
सम्पूजितो सत्य समाजयाच स्यात् साधुता-मूर्ति सुसत्यभक्तः॥४॥
सर्वेण धर्मेण समत्व भावं संरक्षणे तत्परमाशु नित्यं।
निर्भीक वक्ता कविरद्वितीयो स्याल्लेखको स्वामि सुसत्यभक्तः॥५॥
सम्प्रदयमानं जन भावनाया विवर्द्धमानं निज सत्य निष्ठां।
संसिद्धयमानं महतां विचारं जिर्णायमानं खलु मानवानाम॥६॥
विचार स्वातंत्र्य समुन्नतो दया सदा स्वकीयानुभवन सर्वदा।
संसेवया भावपरोपकारं नित्यं सदा संगम पत्रिकाया:॥७॥
समत्व भावेन परोपकारे सदैव सद्भावनयानयाच।
जुहोति नित्यं जन भावनानां दयालु स्वामी शुचि सत्यभक्तः॥८॥
नित्यं सत्कीर्तिमानो निज बुधि विपुलात् सज्जनानां समाजे।
सद्भावे सत्य निष्ठा नयगतिरचले, मानदो मानवानाम॥
सर्वज्ञो सर्ववेत्ता सकल गति गता, सत्यसन्देशदार्या।
स्वामी श्री सत्यभक्तः सफलनयमतः सज्जनानां समाजे॥९॥

१०-- 'सम्मेलनपर'

माननीय श्री सत्यभक्त जी! सादर जय श्रीराम।
सफल आपका सम्मेलन हो सुन्दर सुखद ललाम॥
फिर हो उज्वल राजनीतिका महा मलिन शुभ वेग।
लहे आपसे सकल विश्व मानवता का सन्देश॥
सकल धर्म समभाव परस्पर रागद्वेष हो नष्ट।
सम्मेलन के द्वारा हो यह नव्य नीति सुस्पष्ट॥
सत्य अहिंसा का हो व्यापक जन जन बीच प्रचार।
एक राष्ट्र हो, एक धर्म हो, एक नया संसार॥
हो निर्विघ्न समाप्त कार्य सब रहे न कुछ जंजाल।
सतत कामना यह करता है–दीन रामगोपाल॥

साहित्यरत्न श्री मन्नालाल जी दिवाकर की रचनाएं

११-- आये ईसा सत्यभक्त हो!

मानव-मानव में ऊँच नीच है, भेदभाव की नादानी।
क्यों? भूल चुका है विश्व आज यह घाट अनेकों का पानी॥
है एक तत्व, है एक रूप ज्यों सलिल मध्य विच्छेद नहीं।
जल, नीर, आब वाटर कहदो है किन्तु किसी में भेद नहीं॥१॥
मजहबकी मदिरा को पीकर, बना आज मानव मतवाला।
मन्दिर, मसजिद गिरजाघर हैं, शैतानों का साकी प्याला॥
क्यो? वृन्दावन उजड़ रहा है, कुञ्जगली है क्यों कुम्हलाई।
काशी, काबा, यरूशलम पर, क्यों? गमगीन घटा है छाई॥२॥
गूंजरहा है प्रश्न एक यह वसुधातल के अभ्यन्तर में।
प्रेम दया इंसाफ कहाँ? क्यों? मानवताका अभिनय जगमें॥
बिखरे दिलका आज समन्वय कहो कौन करके दिखलावे?
इन अनन्त निधियोंका फिरसे, एक हार जगको पहनावे॥३॥
सत्येश्वर का सत्यभक्त ही जगतीतल को सत्य दिखाने।
तीर्थंकर ही तीर्थ आज बन इस दुनिया को शुद्ध बनाने॥

परमेश्वर से प्रेषित होकर, पैगम्बर पैगाम सुनाने ।
आये ईसा सत्यभक्त हों दुखियों के दुख दर्द मिटाने ॥ ४ ॥

१२-- लो दूर देशमें सन्त चला ?

लो दूर देश में सन्त चला ।
जहाँ विषमता गूँज रही है मानव ने मानव नहिं जाना ।
काले गोरे ऊंच नीचका जहाँ भेद छाया है नाना ॥
पशुबल के अत्याचारों को देख जहाँ फटती है छाती ।
जहाँ श्रमिक के चीत्कारों पर गोरी सत्ता है इठलाती ॥
उस निरीह क्रन्दन की ध्वनिपर गौतम कुटिया छोड़ चला ।
लो दूर देश में सन्त चला ॥१॥

उन दीनों की मूक वेदना राष्ट्रसंघ ने भी ठुकराई ।
मानवता ने बर्बरता की फिर इक नई चुनौती पाई ॥
भारत के शासकगण ने भी जिसपर अपने मुँहकी खाई ।
अरे तपस्वी इस उलझन में कैसे तुमने राह बनाई ॥
सब शस्त्र त्याग, ले दंड पाणि, यह तीर्थंकरका तप निकला ।
लो दूर देश में सन्त चला ॥२॥

क्या कहा कि तुमने जगमें सब हैं मानव मानव एक समान ।
क्या कहा कि तुमने अब होजावें आंसू आहोंका अवसान ॥
एक तत्व ले, एक ध्येय ले, एक नया संसार बनावें ।
मानव तनमें मानव मनहो, मानवता को गले लगावें ॥
यही स्वप्न साकार बनाने नवयुग पैगम्बर निकला ।
लो दूर देश में सन्त चला ॥३॥

अफ्रीकाही नहीं किन्तु अब इस दुनिया को राह दिखाने ।
आज चले हो तुम ऋषिवर ! अब पृथ्वीपर ही स्वर्ग बसाने ॥
तो श्रद्धाञ्जलि यह भी लेलो, मूकहृदय का अभिनन्दन यह ।
संत प्रवर के चरण-कमलमें अपने जनका है वन्दन यह ॥
श्रद्धाके दो फूल चढ़ाने यह अन्तस्तल भी मचला ।
लो दूर देश में सन्त चला ॥४॥

१३- विदाई गान

ऋषिवर ! हमें भूल मत जाना ।
मन-मधुवन की प्रेमलता को नित्य आप सहलाना ।
नव करुणासे सिंचित जिसमें खिले सुमन हैं नाना ॥
ऋषिवर हमें भूल मत जाना ॥ १ ॥
क्यों अतीत पर मानस रोता, उसको धैर्य बँधाना ।
भीगीं पलकों के मोतीका मूल्य आज दे जाना ॥
ऋषिवर हमें भूल मत जाना ॥ २ ॥
विश्व विषमता दूर हटाकर मानवता है लाना ।
जहाँ कहीं जाओ सतगुरु तुम सरस सुधा बरसाना ॥
ऋषिवर हमें भूल मत जाना ॥ ३ ॥
मूक हृदय का अभिनन्दन, हे पितृदेव ! ले जाना ।
निज शिशुपर से कर सरोजकी छाया नहीं हटाना ॥
ऋषिवर हमें भूल मत जाना ॥ ४ ॥

१४- शूलों के पथपर

छिन्न विश्व की दानवता हर, दे वर मानवता अभिराम ।
जगको नव सन्देश सुनाने सत्येश्वर का दिव्य ललाम ॥
चले आज शूलों के पथ पर बनकर तुम योगी निष्काम ।
सत्यभक्त हे, पैगम्बर हे, तुमको शत-शत कोटि प्रणाम ॥

श्री एम. सरवैया मोती की रचनाएँ

१५- स्वामी सत्यभक्त जी के प्रति

नाम तव सत्यभक्त है सत्य, कांपता तुमको देख असत्य ।
समझना कठिन तुम्हें है आज, दार्शनिकता के हो तुम ताज ॥
तुम्हारा सत्यधर्म आधार । बहाता जो नित अमृत धार ।
जिसे पीकर मानव निष्प्राण, समझता है खुद को बलवान ॥

तुम्हारी मधुर धी मधुमय बात, सूर्य सा प्रकट नहीं है रात ।
तुम्हारे शब्द शब्द मोती, कि जिनमें नित्य चमक होती ॥
तुम्हारा सौम्य सुमुख निष्पाप, हृदय क्या नभोगगनमें व्याप ।
लिखा तुमने साहित्य अपार, कि जिसके शब्द शब्दमें सार ॥
तुम्हारे शब्द दिव्य गागर, कि जिसमें भरजाता सागर ।
तुम्हारे शब्दों का क्या मोल, कि वे हैं रत्न महा अनमोल ॥
अहिंसा तुममें पलती है, सत्य की ज्योती जलती है ।
गुणों के तुम अगनित भण्डार, स्नेह वीणा के बजते तार ॥
नर्मदा भूमी वर्धा के पास, बनाया तुमने सत्य-निवास ।
वहीं से आज हमारा देश, तुम्हारा सुनता है सन्देश ॥
कि जिसको सुन होता अनुराग, सभी के जग जाते हैं भाग ।
जिसे तुमने उपदेश दिया, उसी लोहे को स्वर्ण किया ॥
तुम्हारे त्रेपन वर्ष महान, पूर्ण हो रहे आज भगवान ।
नहीं कुछ भी है मेरे पास, प्रभा क्या दे सकता है दास ॥
सुदामा क्या दे सकता है, देव से ही ले सकता है ।
लिया तुमसे उपदेश महान, तुम्हीं को कैसे करदूं दान ॥
कलम कहती तुमको लेखूं अमर को सदा अमर देखूं ।
यहां कुछ फूल पत्र थे पास, ग्रहण कर लेना इन्हें सहास ॥

६— सत्यसमाज

कैसा धरम करम है ये कैसा धरम करम ।
ठंडी में ये ठंडा सा है गर्मी में है गरम ॥

मानव ने ये बनाई थी बचने धरम की ढाल ।
पर आज है इन्सानियत को फाँसने का जाल ॥
खिंचने लगी है धर्म के हाथों मनुज की खाल ।
होने लगे हैं सैकड़ों मानव यहाँ हलाल ॥
मन्दिर के रूप होगये यमदूत और काल ।
मस्जिदका मुँह भी होगया हिन्दू के खूँसे लाल ॥

गीता की आज बुझ रही सिद्धांत की मसाल ।
कुरआन की कशीश भी हुई आज खस्ताहाल ॥
जाहिर हुआ है धर्म का सब भेद और भरम ।
कैसा धरम करम है ये कैसा धरम करम ॥

सीधे तिलक का कहना है देखो है मुझमें राम ।
आड़ा तिलक ये कह रहा सीधा तिलक हराम ॥
गिर्जे में रटा जा रहा ईसा का रोज नाम ।
इस्लाम भी खुदा का सरेआम है गुलाम ॥
दुनिया में देखो जुल्म सरेआम हो रहा ।
सारा धरम के नाम पर यह काम हो रहा ॥
इन धर्मपंथियों की आज जान जल रही ।
चूले में आज गीता और कुरआन जल रही ॥
फिर भी खड़े हैं देखते दुनियाँ के बेशरम ।
कैसा धरम करम है ये कैसा धरम करम ॥

हर काम का अलग अलग हर देवता है आज ।
ईसा अलग है राम अलग और खुदा है आज ॥
हस्ती है सब की एक मगर हैं अलग-अलग ।
बस्ती है सब की एक मगर हैं अलग-अलग ॥
इनका अलहदापन हमें कच्चा चबा रहा ।
ईसा का भक्त राम के भक्तों को खा रहा ॥
भगवान का भी भक्त असुर बन गया है आज ।
अल्लाह भी शैतां की तरह तन गया है आज ॥
भूखे हैं देवता सभी और आदमी है कम ।
कैसा धरम करम है ये कैसा धरम करम ॥

इन्सानी तेग जब कि है इन्सों पे चल गई ।
समझा तभी से धर्म की मैयत् निकल गई ॥
हासिल क्या होगा कौमियतको जूझने से आज
मुर्दा धरम को फायदा क्या पूजने से आज ॥

आशा नहीं है अंधे से हर्गिज निशान की।
मुर्दे से वैद्य क्या करे उम्मीद जान की॥
प्याला मरे को आप न अमृत का दीजिये।
जो मर चुका है उसको आज दफ्न कीजिये॥
दो चार दिन से ज्यादा रहेगा नहीं ये गम।
कैसा धरम करम है ये कैसा धरम करम॥

बदलें पुराने काल को सब होके एक आज।
हम आज के लिये बनायें सत्य का समाज॥
अब ढोंगियों के धर्म को धिक्कार कीजिये।
इन्सानियत के दावे को स्वीकार कीजिये॥
हर्गिज न हम किसी का तिरस्कार करेंगे।
हम आदमी हैं आदमी को प्यार करेंगे॥
मंजिल पे हमें जाना है हम राह पे चल दें।
इन्सान वही हैं कि जो दुनियाँ को बदल दें॥
पत्थर भी अपने धर्म से होजायँगे नरम।
बदलेंगे हम वतन का पुराना धरम करम॥

१७- स्वामी सत्यभक्त जी

तुम्हें जो देखे वो भूल जाये ये भूल से भी न भूल होगी।
कली भी रौंदी तुम्हारे चरणोंको रो के छूले तो फूल होगी॥
तुम्हारे शब्दों पे सभ्यता की सुगंध आकर के झूमती है।
तुम्हारे चरणों को पंडिताई झुकाके माथे को चूमती है॥
तुम्हें डिगादे जो सत्यता से वो रूप कोई नहीं परी में।
तुम्हारे तर्कों को काट दे वो न ताब तेगे-सिकंदरी में॥
तुम अपनी सुन्दर सी लेखनी से त्रिवेणी धारा बहा रहे हो।
तुम अपने संगम से एकता की सुनहरी दुनिया बसा रहे हो॥
मनुष्यता के हो तुम पुजारी न कौमियत है तुम्हारे मन में।
सुगंधो पुष्पों के पुष्प मोहक खिला रहे तुम उजाड़ वनमें॥

ये सत्य ही है मनुष्य जग के अंधेरी राहों से जा रहे हैं।
तुम्हारे सन्देश चिराग बनकर प्रकाश उनको दिखा रहे हैं॥
मनुष्य दौड़ेंगे तीर्थ कहकर तुम्हारे चरणों की धूल पाने।
गगन से उतरेंगे चाँद सूरज तुम्हारी शुभ सप्तमी मनाने॥

९८- सत्यभक्त संकल्प

मैं इन्सां हूं हर इन्सां को इन्सानी फर्ज बताऊंगा।
जो गिरे पड़े हैं सदियों से मैं उनको आज उठाऊंगा॥
मैं अंधकार पथ में जगमग सुन्दर प्रकाश बन जाऊंगा।
मैं सत्येश्वरकी ज्योति लिये, इस जगको राह बताऊंगा ॥१॥

मैं नहीं चाहता दुनियां की कौमें आपस में फूट करें।
मैं नहीं चाहता व्यापारी मिल करके धंधा झूठ करें॥
मैं नहीं चाहता दौलत के डांकू इस जग में लूट करें।
मैं आज लुटेरों के धन में आहोंसे आग लगाऊंगा। मैं. ॥ २ ॥

मेरी इस दिल की दुनियां में मजहब का कोई काम नहीं।
इस इन्सानों की बस्ती में हिन्दू मुस्लिम का नाम नहीं॥
मस्जिद में लड़ना खुदा नहीं मन्दिर में लड़ता राम नहीं।
मैं मन्दिरमें पढ़कर नमाज मस्जिदमें शंख बजाऊंगा। मैं. ॥३॥

मेरा दिल कहता है मुझसे तू सबको एक बनायेजा।
तू इन्किलाब के गीतों को बेखौफ जहां में गायेजा॥
गैरों को अपना, अपने तू दुश्मन को दोस्त बनायेजा।
मैं सूखे खेतों के ऊपर बादल बनकर छाजाऊंगा। मैं. ॥४॥

मैं फूल समझकर सोया हूं अब तक के चुभते खारों पर।
मैंने चलना सीखा जग में खंजर की पैनी धारों पर॥
मैंने अपनी हरइक करवट बदली जलते अंगारों पर।
मैं आंधी या तूफान लिये फिर फिर दुनिया में आऊंगा॥
मैं इन्सां हूं हर इन्सां को इन्सानी फर्ज बताऊंगा ॥ ५ ॥

कवि श्री सुरेन्द्र नाथ जी शुक्ल की रचनाएँ

९९-- मंगल कामना

परमपुनीत भव्य भारती तुम्हारी नित्य,
गुरु गरिमा को सत्य मंजुला बनाती है।
अमल कमलसम वचन प्रसून बना,
सुषमा सुगंध सौम्य सरस लुटाती है॥
वाणी वरदान वृषभानु की सुतासा देके,
छोड़ अग-जग रसना में रमजाती है।
सत्य कहता हूं, आप मानें या न मानें किन्तु—
सत्यभक्त ही में सत्यभक्तता दिखाती है॥ १॥

कामना यही है सत्यभक्त, सत्यभक्त रहें,
ज्ञान-सरिता में ही निमज्जन किया करें।
एक एक मोती दें निकाल सबके समक्ष,
अमृतकलश भरें तृषित पिया करें॥
सत्य का रहस्य समझा के उनको हाँ तभी,
यों ही भटके को मार्ग बतला दिया करें।
होकर कृतज्ञ अज्ञ हम एक साथ तभी,
बोल उठें, 'सत्यभक्त, युग लों जिया करें॥ २॥

१००-- शुभ कामना

सत्येश्वर भगवान की सेवा में अनुरक्त।
युग युग तक जीवित रहो, सुनो सत्य के भक्त॥

अनाचार अत्याचारों से, जब वसुधा भर जाती है,
भक्त, साधु, मानव जन मन में, त्राहि त्राहि मच जाती है।
मानव दानवता में पलकर दानव ही बनजाता है,
गीता, वेद, पुराण कहें सुन ईश्वर तब ही आता है॥

यही काल था भारत में जब गौतमजी ने जन्म लिया,
यही काल था भारत में, जब वर्धमान ने जन्म लिया।
यही काल था येरुसलम में, जब ईसा ने जन्म लिया,
यही काल था जब अरबों में, नबी मुहम्मद जन्म लिया।

होगी अतिशयोक्ति क्या इसमें, कहा जाय यदि यह भाई,
भले भले साधू संतों में, ईश्वर की आभा आई।
इसका जो कि प्रमाण चाहते, तो हुलसी तुलसी देखो,
आओ वर्तमान में अब भी, सत्यभक्त स्वामी देखो॥

स्वामीजी ने घोर असत् में, सत का ही निर्माण किया,
स्वामीजी ने निज प्रकाश से अंधकार म्रियमाण किया।
स्वामीजी ने मानवता मे दानवता संहार किया,
स्वामीजी ने निष्प्राणों में, प्राणों का संचार किया॥

स्वामी जी ने सत्य अहिंसा को माना, दिल से माना,
स्वामी जी ने मनुज मनुज को, ऊंच-नीच नहि, सम जाना।
स्वामी जी ने भेदभाव को दूरीकृत एका माना,
स्वामी जी ने अपना यह, कर्तव्य मान, प्रण को ठाना॥

स्वामीजी ने सत्य समन्वय-मय साहित्य बनाया है,
जगका एक कुटुम्ब बनाने सत्यसमाज चलाया है।
सत्यभक्त ने सत्य सुधामय सत्याश्रम निर्माण किया,
भारत में ही नहीं, विदेशों में भी जन का त्राण किया॥

क्या गायें गौरव गाथा को, स्वामीजी की हम बोलो,
कहती कलम हमारी, सचमुच सत् कृयों में ही होलो।
हाथ बटाओ सत्य कर्म में, सत्यभक्त की जय बोलो,
सत्यभक्त चिरजीवें, सब मिल यही एक आशिश बोलो॥

१०१-- सत्यभक्त जुग जुग जियें

सत्यभक्त! युग युग जिओ। लेकर सत्यसमाज।
सत्येश्वर की कृपा से; हो बुलन्द आवाज॥

सत्य पुत्र, सत्यधाम, सत्य के महान धाम:
निपट ललाम मेरा हार्दिक प्रणाम है।
गौरवाभिराम! ज्ञान ज्योतिवान, दीप्तिमान;
नाना गुण-खान तेरा यथोचित नाम है।
सौम्य सुख शोभा धाम! वाणी के वरद राम;
संत से निकाम! आपका महान काम है।
जैन के सरोवर के पंकज से पुण्यवान;
सत्य मे विकासमान नमन नमाम है।

स्व. श्री विजयाकुमारी की रचनाएँ

१०२-- दर्शन का बड़भाग

' हे विश्व के सच्चे महात्मन् ' दर्श दे प्रमुदित किये।
हूं भक्ति से विह्वल परम मैं हो रही अपने हिये॥
बस चाहती करुणा कृपानिधि की दया कर दीजिये।
लघु बालिका हूं प्रेमपूर्ण कृतार्थ मुझको कीजिये॥
पुत्री 'प्रकाशपुञ्ज' की हूं. जानिये भगवन्।
निज चरण कमल भक्त मुझे, मानिए भगवन॥
विद्या या बुद्धि कुछ नहीं, अनुराग है मेरा।
दर्शन जो आज पागयी, बड़भाग है मेरा॥"

१०३-- स्वामी जी का अवतार!

दुनिया में छाई अँधियारी, बिगड़ रही प्रभुकी फुलवारी।
नरक बनी है पृथ्वी सारी, आये सत्यभक्त अवतारी॥
करने को जग का उद्धार। स्वामी जी का है अवतार॥ १॥
गाली भी सुन क्रोध न लाते, सबको सच्ची सीख सिखाते।
सरल मुक्तिका मार्ग बताते, इस जग में ही स्वर्ग बुलाते॥
बने जगत सुख का भंडार। स्वामीजी का है अवतार॥ २॥

ये हैं सारे जग के त्राता , सब के मित्र सभी के भ्राता ।
मेरी यही समझमें आता , ये हैं युग के भाग्य--विधाता ॥
सच्चाई से इनका प्यार । स्वामीजी का है अवतार ॥ ३ ॥
इनका धर्म कर्म गुणवाला , सत्य अहिंसा से उजियाला ।
हटा रहे सबका भ्रम-जाला , ये हैं प्रभुके दूत निराला ॥
मेरा वन्दन बारम्बार । स्वामी जी का है अवतार ॥ ४ ॥

वैद्य श्री नन्दकुमार जी की रचनाएँ

१०४- सत्यभक्त गुणखान

धन्य तुम सत्यभक्त गुणखान ।
सत्यलोक की यात्रा कर तुम दिया जगत को ज्ञान ।
धन्य तुम सत्यभक्त गुणखान ॥ १ ॥
सत्यलोक की अनुपम यात्रा तुमबिन करै न कोय ।
तुम ही सत्यसंदेशा लाये जिससे जगहित होय ॥
जगको दिया प्रसाद महान । धन्य. ॥ २ ॥
जाति जाति के धर्म धर्म के दूर किये सब क्लेश ।
शैतानी हैवानी बिनसी मानवता ही शेष ॥
इससे ही सुख होय महान । धन्य. ॥ ३ ॥
नर-नारी समभाव दिखाकर नारी क्लेश मिटाया ।
उच्च-नीच अरु शत्रु मित्र का भेद सभी समझाया ॥
जगने पाया अद्‌भुत ज्ञान । धन्य. ॥ ४ ॥
सब अतिवाद मिटाये तुमने किया समन्वय भारी ।
निरतिवाद दर्शाया जो है सब को ही सुखकारी ॥
देते निज परहित का ज्ञान । धन्य. ॥ ५ ॥
स्वर्ग नरक अपवर्ग यह हैं यहीं तुमने बतलाया ।
जो जैसा कर्तव्य करे वह वैसा ही कहलाया ॥
नहीं है दूर सभी का स्थान । धन्य. ॥ ६ ॥

जग तुमको पहिचान न पाया इससे क्लेश उठाता।
जो तुमको पहिचान चुके बस उन्हें मिली सुखसाता॥
मैं भी चाह रहा सज्ज्ञान। धन्य.॥ ७॥
मेरे में अवगुण बहुतेरे तुम हो गुण की खान।
मेरे अवगुण शीघ्र दूर हों दो ऐसा वरदान॥
जिससे हो मेरा कल्याण। धन्य.॥ ८॥

१०५-- सत्यभक्त गुणानुवाद

सत्यभक्त में गुण हैं जितने मुझसे कहे न जाते हैं।
सच्ची वीतरागता इनमें देख सकल मन भाते हैं॥ १॥
सत्य अहिंसा के स्वरूप को इनने प्रगट दिखाया है।
दुर्गुण रूपी अन्धकारमें सुगुण चन्द्र चमकाया है॥ २॥
अवगुण का है नाम न इनमें केवल गुण ही पाये हैं।
सर्वधर्म अरु सर्व जातिके गुण ही इनमें आये हैं॥ ३॥
वीतराग वाणी है इनकी रागद्वेष मिटाती है।
शत्रु मित्र अरु ऊँच नीचके मर्म सभी बतलाती है॥४॥
गुणधर जो हैं सर्व जाति के सब समान बतलाये हैं।
सत्यब्रह्म के पुत्र सभी हैं सब ही के गुण गाये हैं॥ ५॥
हिन्दू मुस्लिम जैन आदि से राग द्वेष मिटाते हैं।
सबसे हिलमिल करके रहना यह सन्देश सुनाते हैं॥ ६॥
सत्यभक्त ने सत्यब्रह्म के गुण सबको बतलाये हैं।
इससे हम सबने मिलजुलकर सत्यभक्त गुण गाये हैं॥७॥

साहित्याचार्य महन्त श्री विभाकर जी की रचनाएँ

१०६-- प्रकृति द्वारा स्वागत

शुभ स्वागत की रसभीनी हवा, सुषमा कलियों की बढ़ाने लगी।
यह शीतल मंद सुगन्ध हवा, मनमोहक भाव जगाने लगी॥
नव मोतिन की विकसी लतिका, सुख सेज सिंगार सजाने लगी।
दुलराने लगी नव स्वागत को, हँसके प्रियको भी हँसाने लगी॥१॥

कुछ मोद में आ सरिता मुदिता, नव अम्बुज कोर खिलाने लगी।
शुभ स्वागत हेतु पसारी भुजा, मृदु नालसी बाहें दिखाने लगी॥
छिति में विधि बागन में सिगरो, मृदु ओसकणों को बिछाने लगी।
लै आरति थाल सम्भाल विभाकर, सत्य की ज्योति दिखाने लगी॥२॥

१०७-- नमन

श्री सत्यभक्त दिनेस तमहर, सत्य मार्ग प्रकाशकम्।
सहज सौम्य स्वभाव निर्मल, भक्तजनमन भावकम्॥ १॥
सत्यभाव समाज कारक, नव्य मार्ग प्रचारकम्।
सत्य साधुसमाज मध्ये, क्रान्ति भाव प्रदायकम॥ २॥
लोकोपकारी कार्य कारण, नव्य ग्रन्थ सुलेखकम।
धवल कीर्ति सुचारु मूर्ति, ज्ञान सूर्य प्रकाशकम्॥ ३॥
जनक जनता आर्ति हर्ता, कार्य कर्ता अग्रगम्।
नम्र मस्तक हो विभाकर, नमत तव पदपंकजम्॥ ४॥

श्री बापूलाल जी सोनी की रचना

१०८-- दर्शन

मैंने प्रभुका दर्शन पाया।
अन्धकार में डूब रहा था उससे पार लगाया।
मैंने प्रभुका दर्शन पाया॥ १॥
जब जब मिला सत्यज्ञानामृत कार्फी मन हरषाया।
लगी लगन दर्शन की मनमें आशा ध्यान लगाया॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया॥ २॥
भाग्य उदय जब आया मेरा चरण कमल तब पाया।
फूल चढ़ाकर भक्ति भाव से सारा पाप भगाया॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया॥ ३॥
मैं मैं तू तू जपा रात दिन क्रोधमान अरु माया।
पर प्रभु चरणों के प्रताप से सारा दम्भ हटाया॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया॥ ४॥

श्री चरणों के दर्शन पाकर सत प्रकाश को पाया ।
अन्धकार को दूर हटा कर जीवन सफल बनाया ॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया ॥ ५ ॥
वर्धा नगरी आप विराजे हरते मन की माया ।
सत्यामृत बरसा बरस.कर जगको सुखी बनाया ॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया ॥ ६ ॥
सत्येश्वर के परम भक्त बन सत् सन्देश सुनाया ।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष का सच्चा मार्ग बताया ॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया ॥ ७ ॥
राजनीति जो भ्रष्ट हुई है उसका ज्ञान कराया ।
स्वार्थ वासना के पापों का पूरा मर्म बताया ॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया ॥ ८ ॥
जिनको लालच लगा राज का अंधाधुन्ध मचाया ।
उनकी इस अन्धाधुन्धा मे सब जगको चेताया ॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया ॥ ९ ॥
अब भी यह जग नरक बना है तापों से झुलसाया ।
सत्यभक्त तुम सत्येश्वर की करवादो जो छाया ॥
मैंने प्रभुका दर्शन पाया ॥ १० ॥

१०९– मेरी विनती

जय जय जय सत्येश प्रभु जयतु अहिंसा मात ।
पैगम्बर सब तीर्थंकर भजें तुम्हें दिनरात ॥ १ ॥
सत्येश्वर भगवान का है अद्भुत दरबार ।
बैठे हैं कर जोड़कर तीर्थंकर अवतार ॥ २ ॥
जग में छाया है बहुत महामोह अज्ञान ।
सत्यभक्त को भेजकर किया बड़ा अहसान ॥ ३ ॥
सत्यभक्त से गुरु मिले दिया ज्ञान उपदेश ।
जीवन नौका तरगई दिखे हमें सत्येश ॥ ४ ॥

सत्यभक्त गुरु ने कहा—'करो नया निर्माण ।
भाईचारे से रहो होगा सब कल्याण ॥ ५ ॥
'धर्म जाति के मोह का करो सभी जग त्याग ।
रूढ़िमूढ़ता छोड़ दो खुलजायेंगे भाग' ॥ ६ ॥
'मैं मैं तू तू, की नहीं रक्खो मन में टेक ।
सब के हितको देखलो रक्खो सदा विवेक ॥७॥
बदमाशी अरु छलकपट छाये जग में घोर ।
सत्यभक्त के ज्ञान से मिटा इन्हों का जोर ॥८॥
सत्यसमाजी बन्धुओ मिलकर करो विचार ।
सत्यभक्त के ज्ञान का घर घर करो प्रचार ॥९॥
सारा जग सुखमय बने रहे न जग में कष्ट ।
पूंजी अरु साम्राज्य के वाद सभी हों नष्ट ॥१०॥
सत्यभक्त के ज्ञान से निकलेगी रसधार ।
पायेगा संसार यह बैकुण्ठों का सार ॥११॥
झूठे अभिमानी बहुत करें जगत गुमराह ।
सत्यभक्त के तेज से पायेंगे वे राह ॥ १२ ॥
सत्यभक्त गुरुदेव ही करें जगत का त्राण ।
ऐसे गुरु बिन जगतका होगा नहि कल्याण ॥१३
सत्येश्वर भगवान से विनती यही निदान ।
सत्यभक्त गुरुदेव को अमर करो भगवान ॥१४॥

सु श्री. प्रतिभा प्रकाशिनी देवी की रचनाएँ

११०– अभिनन्दन वन्दन

सत्यलोक से एक महात्मा इस पृथ्वी पर आया है ;
विगत महात्माओं अवतारों का सन्देशा लाया है ।
जिन सबकी सहमतिसे ही युगका जग धर्म चलाया है ;
राष्ट्रतीर्थ वर्धा को उसने मानवतीर्थ बनाया है ।
जिसके अञ्चलमें ही उसका सत्याश्रम है दिव्य प्रखर :
'सत्यभक्त' के बाने में वह उतरा है इस भूतल पर ॥१॥

सबको किये सनाथ, कृतार्थ हुये हम बच्चे।
मिले जगत के लिये, आप युगदम्पति सच्चे॥
सत्येश्वर-भगवती अहिंसा, बने सहाई।
यही कामना करें, देवि विजया की माई॥७॥

वैद्य श्री जुगलकिशोर जी सत्यानन्द की रचनाएं

११२ — सत्यभक्त के सन्देश

सत्यभक्त सा जन कहीं, नहिं करोड़ में कोय।
अर्ब खर्ब जन होय तो मिले एक या दोय॥ १॥
सत्येश्वर के भक्त हैं सत्यभक्त है नाम।
सत्याश्रम वर्धा जहां है सत्येश्वर धाम॥ २॥
इस सत्येश्वर धाम में विश्वहितंकर देव।
सत्यभक्त युग पुरुष हैं करते जगकी सेव॥ ३॥
सत्यामृत त्रयकांड में लिखे सत्यसन्देश।
जग जनहित वर्णन किया किये समन्वय देश॥४॥
राष्ट्र समन्वय ही नहीं भाषा धर्म विवेक।
जाति-पांति कुल श्रेष्ठ का किया समन्वय एक॥५॥
परम समन्वय नीति से किया सत्य सुविचार।
मानव मानव से मिले होकर परम उदार॥६॥
मानव भाषा एक हित मानव भाषा ग्रंथ।
पुनि लिपिकी रचना करी समझायो सत्पंथ॥७॥
इस सामग्री से बने जैसा नव संसार।
वैसे नव संसार का रचा नया संसार॥८॥
सत्य ज्योति दातार तुम बसो हृदय में नित्य।
पुनि दीजे कछु भक्तिवर पाजाऊं शिवसत्य॥९॥
करूं चरण की चाकरी रहूं चरण ढिग आय।
आज्ञा दीजे शीघ्र ही और न एक उपाय॥१०॥
युग युग जीवो देव तुम सत्यभक्त गुरुदेव।
निशदिन सेवा साधना जग पावे स्वयमेव॥११॥

चरण चिन्ह जग जन चले होय जगत्कल्याण।
सतयुग आवे शीघ्र ही होय न तिलभर हाण ॥ १२ ॥
सत्यभक्त-साहित्य का घर घर होय प्रचार।
मानवता आजाय तब खुले स्वर्ग का द्वार ॥ १३ ॥
सभी देश मिल एक हों सब की भाषा एक।
मानव मानव एक हों पावें सत्य विवेक ॥ १४ ॥
सत्य विवेकी सब बनें होवे नव निर्माण।
धर्म और विज्ञान से करें स्वपर कल्याण ॥ १५ ॥
समझें सब कर्तव्य को जगहित सच्चा धर्म।
सत्यामृत में कर दिया वर्णन मानव धर्म ॥ १६ ॥
मानव देवो मानिये सत्यभक्त सन्देश।
सत्यसंघ की स्थापना करके बढ़ो हमेश ॥ १७ ॥

११३— प्रणाम

सत्यभक्तजी स्वामी, तुमको लाखों प्रणाम तुमको लाखों प्रणाम।
तुम हो इस युगके अवतारी। महिमा किमविध करूं तुम्हारी।
सत्येश्वर अवतार, तुमको लाखों प्रणाम ॥ १ ॥
सत्यामृत तुमने रच दीना। जिसमें धर्म समन्वय कीना।
सत्यदेव पैगम्बर, तुमको लाखों प्रणाम ॥ २ ॥
सब शास्त्रो का सार सुनाया। सत्यमार्ग हमको दर्शाया।
दिया सत्य-सन्देश, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ३ ॥
तुमने सत्यसमाज चलाया। सकल जगत-जनके मन भाया।
सत्याश्रम संस्थापक, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ४ ॥
मजहब जाति समन्वय कीना। नरकर्तव्य बता प्रभु दीना।
हो सद्धर्म प्रवर्तक, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ५ ॥
सत्यसदन धर्मालय प्यारा। जिसमें देव बिठाया सारा।
कीना ज्ञान प्रकाश, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ६ ॥
भाषा, राष्ट्र भेद समझाया, जग जन एक कुटुम्ब बनाया।
समदर्शी गुरुदेव, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ७ ॥

नरनारी समकक्ष बनाया ऊँच नीच का भेद मिटाया।
मानव-धर्म प्रणेता, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ८ ॥
नरकस्वर्ग भयलोभ मिटाया सत्यतत्त्व हमको समझाया।
सत्यज्योति के दाता, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ९ ॥
सत्येश्वर के आप पुजारी, मात अहिंसा के व्रतधारी।
विश्ववन्द्य गुरुदेव! तुमको लाखों प्रणाम ॥ १० ॥
दास युगल विनती स्वीकारो, सत्य किरण दे मुझको तारो।
तारण तरण जहाज, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ११ ॥

११४ — आये

आये आये, आये! सत्येश्वर के दूत जगत में सत्यभक्त आये ॥
हानि धर्मकी जब जब होवे, तब तब धर्म बचाये।
अर्जुन को यह कृष्णचन्द्रने, सत्यवचन समझाये ॥
अत्याचार अधर्म बढा जग कष्ट अनेकों छाये।
तदनुकूल ही सत्येश्वरने, सत्यभक्त प्रकटाये! आये आये आये. ॥ १ ॥
सत्यभक्तने प्रकटित होकर सत्यसमाज चलाये।
सत्याश्रम स्थापित कर स्वामी सबके कष्ट मिटाये ॥
सत्यामृत त्रयकाण्ड बनाकर, नर कर्तव्य बताये।
सत्यामृतका पान करो सब मिथ्या सब मिट जाये। आये आये आये. ॥२॥
मनुज मात्रके करने लायक, सत्य नियम समझाये।
पालन करनेवाला मानव, सत्येश्वर पा जाये ॥
सत्यमार्ग को पकड़ो सब जन, सतयुग झट आजाये।
सत्यदेव इक सत्येश्वर हैं, जिनको सब जग ध्याये। आये आये आये. ॥३॥
सत्यभक्त के सत्यज्ञान से, सब जन लाभ उठाये।
सत्येश्वर से यही विनय है, सतयुग सृष्टि रचाये ॥
सत्य धर्म के झण्डे नीचे, भाग्यवान कइ आये।
दास 'युगल' भी सत्यधर्मकी धवल ध्वजा फहराये। आये आये आये ॥४॥
सत्येश्वर के दूत जगत में सत्यभक्त आये ॥

११५– अवतारी

देखलो गीता नर-नारी, धर्महित प्रकटे अवतारी ।

अर्जुन को श्रीकृष्णने वचन कहे ततसार ।
हानि धर्मकी हो जभी, तभी होय अवतार ॥
नियम यह बतलाया भारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ १ ॥

सत्यभक्त भूलोक पर कृष्ण वचन अनुसार ।
सत्येश्वर आदेश से, लेना है अवतार ॥
बढ़ा जब अनाचार भारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ २ ॥

पाप बढ़ा भूलोक पर, करते नर उत्पात ।
मानवता मिटने लगी, जन जन के मत घात ॥
देख प्रभुने की तैयारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ ३ ॥

सत्येश्वर ने उस समय, किया एक दरबार ।
आज्ञा दी भूलोक पर, कोई लो अवतार ॥
हुवे उद्यत ये दरबारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ ४ ॥

सत्यभक्त जी हैं हुवे सत्य धर्म के काज ।
सत्याश्रम स्थापित किया, आया सत्यसमाज ॥
रचा सत्यामृत सुखकारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ ५ ॥

सत्यामृत रचकर किया, सत्य धर्म उपदेश ।
सत्येश्वर से प्राप्त कर, दिया सत्य सन्देश ॥
गारही दुनिया यह सारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ ६ ॥

सत्यामृत दे राखलो, प्राण प्राण आधार ।
हमें बचाओ पाप से, इस युग के अवतार ॥
ज्योति दे करदो उजियारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ ७ ॥

असत मूढ़ता रूढ़ियाँ, जावे तब बल काँप ।
सतयुग निर्मित कीजिये हम सब के माँ बाप ॥
आप हो देव सत्य धारी, धर्महित प्रकटे अवतारी ॥ ८ ॥

जाति धर्म अरु राष्ट्र सब, रखें प्रेम का भाव ।
सेवायें सबकी करें, हो पूरा समभाव ॥
दीजिये किरणें उपकारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ ९ ॥

गुरुवर पूरण ब्रह्मसम, पूरण दीनदयाल ।
शरणागत का तुम करो, 'विश्ववन्द्य' प्रतिपाल ॥
आपका जीवन बलिहारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ १० ॥
सत्येश्वर से प्रार्थना, करें सकल कर जोड़ ।
सत्यभक्त जी सत्यगुरु जीवो वर्ष करोड़ ॥
जगत-गुरु, जनके हितकारी, धर्महित प्रकटे अवतारी ॥ ११ ॥
स्वामी सदगुरु आपहो, तारण तरण जहाज ।
किंकर युगल किशोर 'की, शीघ्र बचाओ लाज ॥
समस्या सुलझाओ सारी, धर्म हित प्रकटे अवतारी ॥ १२ ॥

११६– सत्यभक्त अवतार

आप हो सत्यभक्त अवतार । ज्ञान दे करदो बेड़ा पार ॥
सत्यामृत रसधार बहाओ, सतयुग धर्मी सतयुग लाओ ;
सत्य ज्योति दो मानव जगको सुधरे यह संसार ॥ १ ॥
सत्येश्वर साकार दिखाओ, सखियों का दुख दूर कराओ ;
होवे विश्व सत्यमय सारा, खुले मोक्ष का द्वार ॥ २ ॥
कोई मानव बने न दानव, देवरूप हों दानव मानव ;
अखिल विश्व का एक राष्ट्र हो, सब हो एकाकार ॥ ३ ॥
मानवभाषा लिपि सुखदाई, सत्य धर्म की फिर दुहाई ।
घर घर गावें गीत सत्यके, मिलकर सब नर-नार ॥ ४ ॥
धर्म नामसे पुजे न कोई, सत्य धर्म को तजे न कोई ;
श्रम से अरु सेवा से लेकर, भरें उदर भण्डार ॥ ५ ॥
श्रमकी रोटी सब जन खावें, मुफ्तखोर जन रहन न पावें ।
करें परस्पर भला सभी जन, मिटे जगत का भार ॥ ६ ॥
जन जनके मनमें अरु तनमें, सत्योपासन सदन सदन में ।
देश देश में पूजा जाये, एक सत्य शुभकार ॥ ७ ॥
सत्य अहिंसा व्रत सब पालें, धर्म और विज्ञान सम्हालें ;
मनुज मात्र हों एक कुटुम्बी, गावें 'युगल' पुकार ॥ ८ ॥

११७- सत्यभक्ति

सत्यभक्त को आसरो, सत्यदेव को ध्यान।
सत्यामृत सूं काम है, सत्यानन्द महान ॥ १ ॥
सत्याश्रम निजधाम है, मानवहित के काज।
मानवता का रूप है, अद्भुत सत्यसमाज ॥ २ ॥
विश्व एकता के लिये, कीने अकथ उपाय।
धर्म और विज्ञान का, दीना ब्याह रचाय ॥ ३ ॥
सारा जग सुखमय बने, स्वर्ग नचे भू आय।
सतयुग आवे विश्वमें, मिथ्या सब मिटजाय ॥ ४ ॥
सतयुग निर्मिति कारणे, सत्यभक्त अवतार।
सत्येश्वर के दूत हैं, जगजन लेउ विचार ॥ ५ ॥
लाख क्रोड़ जनमें नहीं, ऐसे युग अवतार।
अरब खरब जनमें मिले, जब ढूंढो संसार ॥ ६ ॥
ऐसे गुरु को पायकर, धन धन सत्यानन्द।
सत्यधर्म बतला दिया, मिटे सकल दुखद्वन्द ॥ ७ ॥
जुग जुग जीवो देव तुम, करो विश्व कल्याण।
सतयुग लाओ शीघ्र ही, रचरच वचन प्रमाण ॥८॥
मानव मानव का करे, हित चित नित्य विचार।
बने देव मानव सभी, बने स्वर्ग संसार ॥ ९ ॥

ठाकुर श्री डूंगरसिंह जी की रचनाएँ

११८- जयन्ती अभिनन्दन

सत्यभक्त तुम सत्य हो, सत्य हेतु अवतार।
करने सत्यप्रसार जग है तव सत्य विचार ॥ १ ॥
सत्यभक्त तुम सत्य हो, सत्यमेव तव काम।
सत्यसार इस जगतमें, सत्य पूज्य तव नाम ॥ २ ॥
दारर्शनिक नेतान की देखी कृति अरु कृत्य।
सत्यभक्तसी ना जची कहना गिरि यह सत्य ॥ ३॥

सत्य नाम सत् काम भी सब ही सत्य ललाम ।
सत्यभाव अरु भावना, सत्य हि सत्य ललाम ॥४॥
सत्यभक्त तुम धन्य हो धन्य तात जय मात ।
धन्य प्रांत जन्मे जहां धन्य सुवीणा मात ॥ ५ ॥
संस्थाएँ देखीं बहुत देखे कुव्यवहार ।
चाहत हों अब शीघ्र हो सत्यसमाज प्रसार ॥ ६ ॥
—जयन्ती संयोजक श्री० बापूलाल जी को—
सत्यसमाज सुमर्म को, सत्यभक्त के ख्याल ।
समझे अरु समझा दिये, धन्य सु बापूलाल ॥७॥
इस आप की लगन से हुआ जु सत्यप्रचार ।
फूलेंगे निश्चय यहां, सत्यभक्त उद्गार ॥ ८ ॥

११९ हृदयोद्गार

नेता वक्ता साधुजन कई देखे कई बार ।
सत्यभक्त से जन नहीं करते सत्य-प्रसार ॥ १ ॥
तार्किक मार्मिक हैं बहुत, आलोचक संसार ।
सत्यभक्त-सा है कहां उनका सद् व्यवहार ॥ २ ॥
मार्गप्रदर्शक धर्म गुरु, उपदेशक बेपार ।
पर नहिं उनके कथन में, सत्यभक्तसा सार ॥ ३ ॥
आस्था सत्यसमाज है, असत्य नहिं है लेश ।
धर्मसमन्वय स्वपर हित, रंच राग नहिं द्वेष ॥४॥
ज्ञान प्रदायक वाक्य सब, शक्तिमंत उपदेश ।
अर्थसमन्वय राष्ट्रहित, उत्तम सब उद्देश ॥ ५ ॥
सत्यसमाजी सब बने, जगमें जन समुदाय ।
निश्चय भारतदेश यह, स्वतः स्वर्ग बनजाय ॥ ६ ॥
सत्यभक्त तुम सत्य हो, सत्येश्वर के दूत ।
धन्य मात अरु तात तव, जिनके आप सपूत ॥७॥
धर्म अर्थ सन्नीति सब कर्तव्यों का साज ।
सब यथेष्ट समझा दिये, सत्यभक्त महराज ॥ ८ ॥

हार्दिक है यह नियम गिरि. सत्येश्वर दरबार।
सत्यभक्त मेवाड़ में आवे बारम्बार ॥ ९ ॥
परिश्रम बापूलाल ने, सरूपसिंह सहयोग।
सत्यज्ञान का यज्ञ यह सुन्दर और सयोग ॥ १० ॥
उदय हुआ दिन आज का बड़े भाग्य तें खास।
सत्यभक्त पावन किया, नाहर गिरी निवास ॥ ११ ॥
सदुपदेश का दान कर, रखा शीशपर हाथ।
सत्यभक्त ने कर दिये, नाहरगिरी सनाथ ॥ १२ ॥

श्री गुधाटे जी की रचनाएँ

१२० स्वामी सत्यभक्त

(मराठी भाषामें)

श्रीमान् स्वामीजींना वर्षे पन्नास जाहली आजी।
सत्याचे भक्त खरे, भारतवर्षात सर्व ज्या राजी ॥
सत्यसमाज स्थापुनि धार्मिक झगड्यास जो सदा वारी।
दावी दृष्टि नवी जो कां न म्हणं त्यास थोर उपकारी ॥
धर्मस्थान उभारुनि साधी समभाव योग्य जो जगती।
जोड नसे त्या येथ, वर्णन कैसे करील कवि अमती।
अंधश्रद्धा सोडुनि, उदार व्हारे समस्त विज्ञानी।
स्वीकारुनि मानवता धन्य करा भारतास घ्या कानी ॥
व्यापक विचार करुनी, नाना ग्रन्थास करित निर्माण।
अनुसरता त्याना जे त्याना भटेल पुण्य निर्वाण ॥
आर्थिक नैतिक विषयां, घेउनि करि धीर धीर तो चर्चा।
अवलोकन करितां जी, वाटे शिव मंदिरातली अर्चा ॥
जाती पाती विसरुनि, देई संदेश ऐक्य भावाचा।
सत्य हिरा सत्याचा, चमके जगती न वर्णवे वाचा ॥
सत्यामृत ग्रन्थातें, निर्मुनि साहित्य जागरें केलें।
मानव धर्मातचें हें, मथन असे जाणती खरे चेले ॥

चौं वेदांचें सारचि, काढुनि जणु निर्मिता महाग्रन्थ ।
तर्कचि अनुसरल्या जो, नानाविध दाखवील सत्पंथ ॥
रामकथा सारातें, वाचुनि होतात जन मनीं मुग्ध ।
आदर्श उच्चतेचा, राम खरा जेवि नीरसें दुग्ध ॥
एका वेदीवरती, सत्य अहिंसा तथा महावीर ।
ईसा, कृष्ण, महात्मा गौतम जरथुस्त राम तो धीर ॥
मक्का काशीसारें, घ्या पाहुनि मूर्ति आर्य लोकांच्या ।
शिव सुन्दर सत्य असे, एके ठायीं पवित्र ता साचा ॥
य आलय सन्मंदिर, आहे छोटे तथापि बहु मोठे ।
वैशाल्य भावनेचें, ज्या नेत्री त्यां म्हणू कसे खोटे ॥
नेरा वरुषीं अवस्था, रचि ते साहित्य एवढें भारी ।
जड नसें जगतीं या हर्षित होती सविद्य नरनारी ॥
कार्यक्रम बघतांची, उर दडपतो, विषाण उद्भवते ।
पर्वं वैशिष्ट्य प्रभूचे ध्यानीं येतो मनस् पुनः रमतें ॥
प्रतिभाशाली, सुविद्वान्, महान् विचारक तथा सुधी वक्ता ।
सुकवी नाटककर्ता, मर्मज्ञ ग्रंथ लिखाण जो रचिता ॥
धर्मक्रांती करूनी, धर्मसमन्वय उदार इह लोकीं ।
स्थापुनि अविचल राहे, निर्मल बुद्धी असत्य जारोकी ॥
हे सत्यभक्त स्वामी ! जनहितकर हा असे नवादेश ।
हें जाणुनियां संगी, होईल जो ग्राम एथ सर्वेश ॥
भेटुनि कल्याणकरी, एथ नसे संशयो धरा पोटीं ।
व्यापकबुद्धी ठेवुनि घ्या हित करुनी त्यजा क्रिया खोटी ॥
अंतीं स्वामीजींतें सेवुनि मनि थांबतो नवा कवि हा ।
जनहित साधो हेची त्र्यंबक सुत पांडुरंग ठेवि स्पृहा ॥

१२१– स्वामी सत्यभक्तजी

सत्याग्रही खरा तो म्हणुनिच त्या सत्यभक्त म्हणतात ।
ज्ञानार्जनीं जयानें झिजवीला आत्मदेह साक्षात ॥ १ ॥

इस नव जगके त कणकणमें। इस युगके तू क्षणक्षणमें ॥
'जय सत्येश्वर' गूँजे नाम ॥ १ ॥
अमर सत्यका दीप जलाया। प्रेम-शांतिका अमृत पिलाया ॥
"संगम" 'सत्याश्रम" अभिराम ॥ २ ॥
"गोड यहोवा जिनवर तुझमें। रब रहीम पैगम्बर तुझमें ॥
"सबी भाषायें तेरे नाम" ॥ ३ ॥
मन्दिर मस्जिद गिरजाघर भी। काबा काशी येरुसलम भी ॥
सब दुनिया तेरा विश्राम ॥ ४ ॥
हिन्दू क्रिश्चन मुस्लिम भी तू। अंतिम भी आदिम भी तू ॥
'सत्यसमाजी सन्निष्काम" ॥ ५ ॥
राजनीति का विवाद-हर्ता। हित मय सत्य समन्वयकर्ता ॥
'निरतिवाद" तव जगहित ग्राम ॥ ६ ॥
"सत्येश्वर" हैं तेरे तात। है "भगवती अहिंसा" मात ॥
"सत्यभक्त" है, सार्थक नाम ॥ ७ ॥
बढ़ती रहे उमर हर साल, तुम हो शुभायुषी खुशहाल ॥
हो वन्दन सेल्यूट सलाम ॥ ८ ॥

श्री पार्थसारथी माहात्म्यरत्न की रचना

१२३–सत्यभक्त हों सभी

आज विश्व में नया बनाव एक चाहिये।
एक सत्य एक साम्य हो, न टेक चाहिये ॥
एक एक से मिला हुआ प्रत्येक चाहिये।
मनुष्य से मनुष्य का इरादा नेक चाहिये ॥
इस विचार बीज से, धरा का नव शृंगार हो।
सत्यभक्त हों सभी सुसत्य का प्रसार हो ॥१॥

देश देश जाति जाति धर्म धर्म लड़ रहे।
रक्त से जहाँ के रंग रूप सब बिगड़ रहे ॥
पुत्र पुत्र लड़ रहे, वतन वतन उजड़ रहे।
हिंस्र जन्तुओं से, भाई भाई पर बिगड़ रहे ॥

प्रेम साम्य-वेदना से चित्त निर्विकार हो ।
सत्यभक्त हों सभी समत्व का प्रसार हो ॥२॥

एक जग पिता के पुत्र बन्धु को न चीन्हते ।
एक जग पिता के पुत्र मुँह के कौर छीनते ॥
एक जग पिता के पुत्र नाम पर विभेद क्यों ?
एक घट-एक मुख-फिर अनेक छेद क्यों ?
इस रहस्य-शोध में सतत गहन विहार हो ।
सत्यभक्त हों सभी समत्व का प्रसार हो ॥३॥

मूढ़ता से हो रहा मनुष्य जब कि चूर चूर ।
धर्म में विज्ञान हो रहा है जब कि दूर दूर ॥
ढक रहीं इन्सानियतको जब कि हर कुरीतियाँ ।
पल रहीं हैं रक्त सभ्यता हुईं कुरीतियाँ ॥
तोड़ दे जो अन्ध-पट वह प्रबल बयार हो ।
सत्यभक्त हों सभी समत्व का प्रचार हो ॥४॥

मैं जो कहता हूं सो ठीक इसको दुनिया जानले ।
मैं जो कहता हू बुरा भला सयाना मानले ॥
इस महान रोग की दवा न कोई मिल सकी ।
चलरही जगतकी चाल ज्यों की त्यों न हिलसकी ॥
बन गये लकीर के फकीर जन, उद्धार हो ।
सत्यभक्त हों सभी समत्व का प्रचार हो ॥५॥

श्री विपिन विहारी जी की रचना

१२४— सत्यभक्तों से

विश्व-गगनमें एक बार फिर सत्य-सूर्य चमकाने को ।
रूढ़ि-राक्षसी को निज बल से नाक चने चबवाने को ॥
कार्यक्षेत्र में आत्मवीर्य से हलचल शीघ्र मचाने को ।
जन-समाजको कर्मयोगका अविरल पाठ पढ़ाने को ॥
सत्यभक्त ! जगती में आओ, विजय वधू अपनायेगी ।
नतमस्तक हो जनता तुमको अर्घ्य सदैव चढ़ायेगी ॥१॥

वैज्ञानिक-विश्लेषण द्वारा प्रकृति-तत्व समझाने को।
अन्धभक्त-हृदयोंमें सहसा धार्मिक क्रान्ति मचाने को॥
भारतीय धर्मों का मौलिक संशोधन करजाने को।
सम्प्रदाय के अविरल झण्डे दे ललकार भगाने को॥
सत्यभक्त! जगती में आओ, जनता गले लगायेगी।
सारी मातृ जाति भी तुमको स्वागत-पुष्प चढ़ायेगी।२॥
दीन-पतित-असहाय जनोंमें जीवन-ज्योति जगाने को।
सत्य-दिवाकर की किरणों से जग जीवन विकसाने को॥
सर्व-धर्म-समभाव जगाकर विश्व-धर्म उमड़ाने को।
मात अहिंसाके चरणों में अपना शीश झुकाने को॥
सत्यभक्त! जगती में आओ, विजय-ध्वजा फहरायेगी।
भू-मंडल की सब जनता मिल पदरज शीश चढ़ायेगी।३॥

श्री बालकवि जी की रचना

१२५— मानवता आयेगी

हम में मानवता आयेगी।
सत्येश्वर की दया दृष्टि से। विकसन शील समस्त सृष्टि से।
एकाकार समष्टि व्यष्टि से। दानवता जायेगी॥१॥
एक नया संसार बनेगा। श्रम पूँजी का न्याय रहेगा।
निरतिवाद से एक राष्ट्र बन। अचल शान्ति छायेगी॥२॥
रंग राष्ट्रका भेद भुलाकर। सकल विश्व को एक बनाकर।
सर्व-धर्म समभाव दिखाकर, जनता हर्षायेगी॥३॥
सत्यसमाज विशाल बनेगा। सुखद सत्य सन्देश मिलेगा।
स्वामी सत्यभक्त की जगमें, जय जय ध्वनि छायेगी॥४॥

प्रो. रतनकुमार जी एम. काम. की रचना

१२६— अर्घ्यदान

तू तेजपुञ्ज तू भासमान। है अशुचि अपावन अर्घ्यदान।

नीलाभ गगन का संवितान। है तुझमें सतत प्रभासमान।
मैं सघन तिमिर संकुल निदान। तू अतुल विपुल मैं अधम ग्लान।
तू तेजपुञ्ज तू भासमान। है अशुचि अपावन अर्घ्यदान ॥१॥

तू अमल धवल शीतल मयंक। मधुमय तेरा सुविशाल अंक।
मैं मलिन पंक पददलित रंक। तू वर्धमान, मैं हीयमान।
तू तेजपुञ्ज तू भासमान। है अशुचि अपावन अर्घ्यदान ॥२॥

तू महा महिम गौरव निधान। उत्तुंग राग उत्फुल्ल गान।
मैं अबल अकिंचन हूं अजान। कैसे हो फिर पूजा विधान।
तू तेजपुंज तू भासमान। है अशुचि अपावन अर्घ्यदान ॥३॥

तू नवल उषाका अरुण राग। अग-जग विस्तृत सुरभित पराग।
मैं अमानिशा का हूं सराग, मैं हूं जर्मान, तू आसमान।
तू तेजपुंज तू भासमान, है अशुचि अपावन अर्घ्यदान ॥४॥

श्री चुन्नीलाल जी कोटेचा की रचना

१२७— सत्यभक्त सन्देश

धर्म वही जो सब जीवों को भवसे पार लगाता हो।
कलह द्वेष मात्सर्य भाव को कोसों दूर भगाता हो॥
जो सबको स्वतंत्र होनेका सच्चा मार्ग बताता हो।
जिसका आश्रय लेकर प्राणी सुख समृद्धिको पाता हो॥

जहां वर्ण से सदाचार पर अधिक दिया जाता हो जोर।
तर जाते हों निमिष मात्रमें यमपालादिक अंजन चोर॥
जहां जातिका गर्व न होवे और न हो थोथा अभिमान।
वही धर्म है मनुज मात्र को हो जिसमें अधिकार समान॥

नर-नारी पशु पक्षीका हित जिसमें सोचा जाता हो।
दीन हीन पतितों को भी जो हर्ष सहित अपनाता हो॥
ऐसा सत्यसमाज दिव्य जिससे परिचित करदो सब संसार।
धर्म अशुद्ध नहीं होता है खुला रहे यदि सबको द्वार॥

प्रेम भाव जगमें फैलाओ और सत्य का हो व्यवहार।
दुरभिमानको त्याग, अहिंसक बनो यही जीवनका सार॥
तंगदिली को त्याग धर्म अपना फैला दो देश विदेश।
दास ध्यान देना इसपर यह सत्यभक्तका शुभ संदेश॥

श्री ललितप्रसाद जी की रचना।

१२८—स्वामीजी की प्रकृति

महाद्वेष पुंज का हटाने का सदैव स्नेह
पाप कालिमा का ज्ञान ज्योति में विलय हो।
सत्यमार्ग, सत्यभाव सत्य के प्रणेता पाय
सत्य ही समाज सत्य भाग्य का उदय हो।
मानस हिलोर में समाया हो 'निशंक' प्रेम
सत्य ही की रसना पै सत्य का विनय हो।
कातिक सुदी की सप्तमी की पुण्य वेला की
श्री सत्यभक्त की जयंती की जय हो॥

श्री सत्यनारायण जी शर्मा सा. र. की रचना

१२९—शुभ-सन्देश

तरल-तरङ्गें स्वाभिमान की, हृदयों में लहरा जायें।
मिथ्याडम्बर ढोंग कपटके, भूरि भवन भहरा जायें॥
'सत्य जातिकी विजय-केतु, वसुधा भरमें फहरा जाये।
हो भयभीत निराश शिथिल सब, शत्रुहृदय थहरा जायें॥
'सत्यसमाज' समुन्नत होवे सबके सब हों दूर कलेश।
घर-घरमें घोषित हो प्यारे, सत्यभक्तका शुभ सन्देश॥

श्री सिद्धेश्वर जी अमित की रचना

१३०—सत्यभक्त वन्दना

वन्दौं पद रज देव तुम्हारे।
अम्बर से भी अति अनन्त, तव हैं अनन्त गुण सारे।
वन्दौं पदरज देव तुम्हारे॥ १॥

हुआ अहो अवतार विश्वहित, धन्य भाग्य पर तेरा।
आलोकित होगया लोक पर, पा आलोक सबेरा ॥ २ ॥
कहाँ अहिंसा सत्य भक्तिमय, पावन चरित तुम्हारा।
कहाँ सकल अघ अवगुण पूरित जीवन मलिन तुम्हारा ॥ ३ ॥
नाथ नहीं मुझमें क्षमता है, तव पद परसन पाऊं।
इसीलिये तो देव दूर से, पदरज शीश नवाऊँ ॥ ४ ॥

श्री धर्मराज जी इंदलिया की रचना

१३१— सत्यभक्त अवतारी

आया सत्यभक्त अवतारी।
दिया सत्य का ज्ञान सभी को निर्मलतम अविकारी ॥
आया सत्यभक्त अवतारी ॥ १ ॥
छप्पन कार्तिक शुक्ल सप्तमी, दिन था शुक्र वार।
जगत सुधारन प्रकट हुआ है सत्यभक्त अवतार ॥
आया जीवन सुखकारी ॥ २ ॥
जातिपांति का प्रचंड रोधक मानवता का प्यारा।
नये जगत का प्रेरक सब धर्मों की नूतन धारा ॥
आया पूर्ण विवेकाधारी ॥ ३ ॥
दिया सत्य साहित्य जगत को नया वेद निर्माण।
सब धर्मों के सत्य अंश ले फूँके जग में प्राण ॥
सत्य संस्था स्थापनकारी ॥ ४ ॥
नये धर्म का भाषा लिपि का करता आविष्कार।
भूत भविष्य वर्त का ज्ञाता देता नया विचार ॥
आया घोर परिश्रमचारी ॥ ५ ॥
कठिन तपस्या करके निशदिन पाया पूरा ज्ञान।
सच्चा साधु बना पनपाया न्याय और ईमान ॥
ऋणी है यह दुनिया सारी ॥ ६ ॥

नया धर्म यह नई धारणा मुझे बहुत प्यारी है ।
धर्मराज यह नया शिष्य तव चरणों बलिहारी है ॥
धन्य हुआ मैं तुच्छ भेंट चरणों में स्वीकार्य ॥ ७ ॥

श्री हीरालाल जी शर्मा बालाघाट की रचना

१३२-- युगगुरु ।

युगपुरुष, तुम्हारे चरणों में है कोटी कोटि प्रणाम ।
युगपुरुष, तुम्हारे वचनों का हर हृदय करे सन्मान ॥१॥
युगपुरुष जयन्ती पर अर्पित है छोटासा आख्यान ।
युगपुरुष तुम्हारी दीर्घ आयु का मांगे हम वरदान ॥२॥
आया मंगल पर्व आज है मानवता का साज ।
सत्यभक्त जगद्रष्टा प्रगटे लाने सत्यसमाज ॥३॥
सत्यभक्त जी दीर्घ आयु हों-फैले सत्यसमाज ।
अखिल विश्व में सत्यधर्म की उड़े पताका आज ॥ ४ ॥

स्वामी कृष्णानन्द जी मोख्ता की रचना

१३३- सच्चा बशर

जमाने में हुआ करते हैं अक्सर नामवर पैदा ।
मगर मुश्किलसे होता है कोई सच्चा बशर पैदा ॥
अस्तू गोकी बड़ोंडशाओं में गिने जाते ।
जो भारत की जगह होते विदेशों में अगर पैदा ॥ १ ॥

सौ. सावित्री देवी की रचनाएँ

१३४- नैया

अब गुरु पार करो मोरी नैया । जय जय सत्य अहिंसा मैया ॥
झांझर तन है नाव पुरानी, तृष्णा रूप चलत पुरवैया ।
भवसागर में डगमग डोले, सांचे गुरु तुम मिले खिवैया ॥
एक रूप होय तीन विराजे, सत्य सुधीर सरस्वती मैया ।
सावित्री की विनय यही है, सत्यभक्त रहें अमर कन्हैया ॥

१३५- गुरुदेव शरण

गुरु बिन कौन सुने अब मेरी ।
मैं गुरुदेव शरण में तेरी ॥

प्रभु मैं जग में जब से आई, भई भूल बहुतेरी ।
भक्ति विवेक न पाया कबहू, माया जाल घनेरी ॥
जो तुम चाहो पार लगाओ, तनिक न लागे बेरी ।
सावित्री है शरण तुम्हारी, सदा रहे वह चेरी ॥
गुरु बिन कौन सुने अब मेरी ॥

श्री सौ. सीतादेवी की रचनाएँ

१३६-- गुरु स्वामी

युग युग जियो नाथ गुरु स्वामी, घट घट वासी अन्तर्यामी ॥
जगत हेतु अवतार लियो है, तुम हो युग पैगम्बर नामी ॥
जातिपांति का भूत भगाया, सत्य अहिंसा के तुम हामी ॥
सत्तावनवीं आज जयन्ती, देश विदेश सभी अनुगामी ॥
सीता प्रभुसे विनय करत है, अमर होय मेरे गुरु स्वामी ॥

आनन्दशास्त्री साहित्यरत्न न्यायसाहित्यतीर्थ

१३७- मानव-संगीत

हम मिल कर मानव बन जायें ।
सदियों से बिछुड़े दिल मिलकर दुनिया नई बनाएँ ॥
हम मिल कर मानव बन जाएँ ॥ १ ॥

बन इन्सान यहां पर हम सब इन्सानियत बढ़ाएँ ।
मजहब में भी आग लगी है उसकी आग बुझाएँ ॥
जातिवाद का द्वन्द हटा कर मानवता चमकाएँ ।
सर्व-धर्म-समभाव सीखने धर्मालय बनवाएँ ॥
हम मिल कर मानव बन जाएँ ॥ २ ॥

निर्रतिवाद से सब झगड़ों को फिर मिलकर सुलझाएँ ।
वेद कुरान पिटक सूत्रों का जग को मार्ग बताएँ ॥
सदियों से जलते हृदयों पर प्रेमामृत बरसाएँ ।
जीवन देकर इस उपवन को फिर गुलजार बनाएँ ॥
हम मिलकर मानव बन जाएँ ॥ ३ ॥
मतविभिन्नता दूर भगाएँ, प्रेमप्रदीप जलाएँ ।
बनजाएँ इन्सान यहां सब आशाएँ फल लाएँ ॥
हिन्दू-मुसलिम भेद भगाकर सच्चा धर्म निभाएँ ।
जनसेवक बन सत्यभक्त की पदरज शीस चढ़ाएँ ॥
हम मिलकर मानव बन जाएँ ॥ ४ ॥

श्री लालजी भाई की रचना

१३८- अपने महान का स्वागत

धन्य भाग्य मेरे हुये, पाया प्रभु का दर्श ।
माताजी को साथ लख, है अधिकाधिक हर्ष ॥
युगल मूर्त्ति का आगमन, है सधीर के साथ ।
शिष्टाचार सुप्यार हित, बढ़े हमारे हाथ ॥१॥
युगनायक की अर्चना, के लायक मैं हूं न ।
पर स्वागत को हूं लिये, अपना मज्जा खून ॥
हृदय स्नेहके बिन्दु से, स्वागत है ऋषिराज ।
अपने गृही समेत मैं, जो सुख पाया आज ॥२॥
उसका वर्णन हो नहीं, सकता हे युग सन्त ।
सुखका सौरभ सरलता, छाया विमल बसन्त ॥
सत्य साधुता रूप हे, मानवता के भूप ।
पायेंगे इस भूमि पर, पानी छाया धूप ॥३॥
एतदर्थ रहकर यहाँ, करें लोक का काम ।
हम सब सेवक साथ हैं, बढ़े अवधका नाम ॥
जग जाने श्री राम की, भूमि आज भी धन्य ।
जो कुछ होने जारहा, है वह यहां अनन्य ॥४॥

यज्ञ [illegible] होंगे बहुत, 'ज्ञान-यज्ञ' अनमोल ।
जो करने आये यहाँ, उसका किससे तोल ॥
आप विश्व के रत्न या, भरे आपमें रत्न ।
नहीं समझ कुछ पारहा, करके बहु विधि यत्न ॥५॥

किन्तु अचल यह धारणा, पा श्रीमुखसे ज्ञान ।
भक्त 'लालजी' नित करे, स्वपर सदा कल्याण ॥
कैसे स्वागत कर सके, अल्प बुद्धि नादान ।
मार्ग दिखाते ही चलें, हे युगके भगवान ॥६॥

श्री शान्तप्रकाश जी सत्यदास की रचना

१३९- व्याजस्तुति

ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्यके अन्धभक्त ।
प्राचीन महामानव मण्डल । उनके समान है अन्तस्तल ।
वे पैगम्बर तुम पैगम्बर । फिर भी तुम हो त्रुटियों के घर ।
इसलिये दोष कररहा व्यक्त । ओ सत्यभक्त ! भगवान. ॥ १ ॥

यद्यपि तुम हो श्री राम सरीखे पुरुषोत्तम ।
पर शूद्र तपस्वी शम्बुक वध का रहा न दम ॥
यह देख तुम्हारी कायरता, मैं बना राम का परम भक्त ।
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥ २ ॥

यद्यपि तुम हो श्री कृष्ण सरीखे योगेश्वर ।
पर खांडववन के जला सके क्या नारी नर ?
यह देख तुम्हारी निर्बलता मैं बना कृष्ण का आर्यभक्त ।
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥ ३ ॥

यद्यपि तुम हो श्री वीर सरीखे तीर्थंकर ।
पर वृथा देह दंडों का रखते मनमें डर ॥
तुम को ऐसा डरपोक समझ मैं बना वीर का धीर भक्त ।
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥ ४ ॥

यद्यपि तुम हो श्री बुद्ध सरीखे बोधवान।
पर नर नारी के भेदभाव का है न ज्ञान॥
इसलिये बना मैं बुद्ध भक्त, तुमको करता हूं परित्यक्त
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥

यद्यपि तुम हो जरथुस्त सरीखे कष्टजयी।
पर देवमूर्त्ति को बना न पाये अग्निमयी ॥
इसलिये बना जरथुस्त सन्त चरणानुरक्त
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥

यद्यपि तुम हो ईश्वर सुपुत्र ईसासमान ।
पर तुमको जादू मंत्र तंत्र का नहीं ज्ञान ॥
तुम ना हो कोरे वैज्ञानिक इससे मैं हूं ईसानुरक्त
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥

यद्यपि तुम नबी मुहम्मद से हो पैगम्बर।
पर बन न सके तुम मूर्त्ति तोड़ने में तत्पर ॥
पूजन अवलम्बन के विवेक का ले चक्कर।
सब ही धर्मस्थानों में जाते झुकझुककर ॥
यह देख तुम्हारा ढीलापन मैं बना मुहम्मद चरणासक्त
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥

यद्यपि तुममें है कार्लमार्क्स सा बुद्धिवाद।
पर मजहब ईश्वर को अफीम कहना न याद ॥
तुम पूर्व क्रान्तियों की कृतज्ञता रहे लाद।
रखते कृतज्ञ बन धर्म विनय का भी प्रमाद ॥
यह देख तुम्हारी दुर्बलता मैं बना मार्क्स वचनानुरक्त
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥

तुम सत्यभक्त हो किन्तु जगत्सेवा के गाते सदा गीत
प्रभु को फुसलाना याद नहीं श्रम में करते जीवन व्यतीत।
यह देख तुम्हारी मजदूरी मैं बना शान्त पूरा विरक्त
ओ सत्यभक्त ! भगवान सत्य के अन्धभक्त ॥ १ ॥